गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिका अप्रैल-2015

गुरुत्व ज्योतिष

हनुमान जयंति विशेष



NON PROFIT PUBLICATION

हम अब बेनामी उपयोगकर्ताओं के लिए गुरुत्व ज्योतिष ई-पत्रिका को मुफ्त डाउनलोड करने की सेवा बंद कर रहे हैं।

डाउनलोड करने के लिए

जीके प्रीमियम सदस्यता प्राप्त करें।

Get a **GK Premium Membership**

Subscribe

Subscriptions Period	Extra Bonus	GK Gift Card	Price In India (All Tax included)
Quarterly (3 Months)	+1 Month Free **Bonus**	Rs.99*	399
Half Yearly (6 Months)	+3 Month Free **Bonus**	Rs.149*	699
Yearly (12 Months)	-	Rs.199*	799
*** GK Gift Card Redeem on Our Website Only |**			

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvakaryalay.in

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष पत्रिका

अप्रैल-2015

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ORISSA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
http://gk.yolasite.com/
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,

स्वस्तिक.ऎन.जोशी

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी, स्वस्तिक आर्ट

हमारे मुख्य सहयोगी

स्वस्तिक.ऎन.जोशी (स्वस्तिक सोफ्टेक इन्डिया लि)

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

BHUBNESWAR-751018, (ORISSA) INDIA

Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

अनुक्रम

स्थायी और अन्य लेख

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

संपादकीय

आज हर व्यक्ति अपने जीवन मे सभी भौतिक सुख साधनो की प्राप्ति के लिये भौतिकता की दौड मे भागते हुए किसी न किसी समस्या से ग्रस्त है। एवं व्यक्ति उस समस्या से ग्रस्त होकर जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता है।

व्यक्ति उस समस्या से अति सरलता एवं सहजता से मुक्ति तो चाहता है पर यह सब केसे होगा? उस की उचित जानकारी के अभाव में मुक्त हो नहीं पाते। और उसे अपने जीवन में आगे गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं होता। एसे मे सभी प्रकार के दुख एवं कष्टों को दूर करने के लिये अचुक और उत्तम उपाय है हनुमान चालीसा और बजरंग बाण का पाठ...

क्योकि वर्तमान युग में श्री हनुमानजी शिवजी के एक एसे अवतार है जो अति शीघ्र प्रसन्न होते है जो अपने भक्तो के समस्त दुखो को हरने मे समर्थ है। श्री हनुमानजी का नाम स्मरण करने मात्र से ही भक्तो के सारे संकट दूर हो जाते हैं। क्योकि इनकी पूजा-अर्चना अति सरल है, इसी कारण श्री हनुमानजी जन साधारण मे अत्यंत लोकप्रिय है। इनके मंदिर देश-विदेश सवत्र स्थित हैं। अतः भक्तों को पहुंचने में अत्याधिक कठिनाई भी नहीं आती है। हनुमानजी को प्रसन्न करना अति सरल है

हनुमान चालीसा और बजरंग बाण के पाठ के माध्यम से साधारण व्यक्ति भी बिना किसी विशेष पूजा अर्चना से अपनी दैनिक दिनचर्या से थोडा सा समय निकाल ले तो उसकी समस्त परेशानी से मुक्ति मिल जाती है।

इस वर्ष 2015 में हनुमान जयंती 4 अप्रैल, शनिवार को हैं।

वैसे तो हनुमानजी की पूजा हेतु अनेको विधि-विधान प्रचलन में हैं पर यहा साधारण व्यक्ति जो संपूर्ण विधि-विधान से हनुमानजी का पूजन नहीं कर सकते वह व्यक्ति सरल विधि-विधान से कर सके इस उद्देश्य से इस अंक में हमने सरल विधि-विधान से हनुमानजी की पूजन विधि दर्शाने का प्रयास किया हैं।

धर्म शास्त्रो विधान से हनुमानजी का पूजन और साधना विभिन्न रुप से किये जा सकते हैं। हनुमानजी का एकमुखी, पंचमुखीऔर एकादश मुखीस्वरूप के साथ हनुमानजी का बाल हनुमान, भक्त हनुमान, वीर हनुमान, दास हनुमान, योगी हनुमान आदि प्रसिद्ध है। किंतु शास्त्रों में श्री हनुमान के ऐसे चमत्कारिक स्वरूप और चरित्र की भक्ति का महत्व बताया गया है,

मान्यता के अनुशार पंचमुखीहनुमान का अवतार भक्तों का कल्याण करने के लिए हुवा हैं। हनुमान के पांच मुख क्रमशः पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और ऊर्ध्व दिशा में प्रतिष्ठित हैं।

पंचमुखीहनुमानजी का अवतार मार्गशीर्ष कृष्णाष्टमी को माना जाता हैं। रुद्र के अवतार हनुमान ऊर्जा के प्रतीक माने जाते हैं। इसकी आराधना से बल, कीर्ति, आरोग्य और निर्भीकता बढती है।

रामायण के अनुसार श्री हनुमान का विराट स्वरूप पांच मुख पांच दिशाओं में हैं। हर रूप एक मुख वाला, त्रिनेत्रधारी यानि तीन आंखों और दो भुजाओं वाला है। यह पांच मुख नरसिंह, गरुड, अश्व, वानर और वराह रूप है।

हनुमान के पांच मुख क्रमश:पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और ऊर्ध्व दिशा में प्रतिष्ठित माने गएं हैं।

पंचमुख हनुमान के पूर्व की ओर का मुख वानर का हैं। जिसकी प्रभा करोडों सूर्यो के तेज समान हैं। पूर्व मुख वाले हनुमान का पूजन करने से समस्त शत्रुओं का नाश हो जाता है।

पश्चिम दिशा वाला मुख गरुड का हैं। जो भक्तिप्रद, संकट, विघ्न-बाधा निवारक माने जाते हैं। गरुड की तरह हनुमानजी भी अजर-अमर माने जाते हैं।

हनुमानजी का उत्तर की ओर मुख शूकर का है। इनकी आराधना करने से अपार धन-सम्पत्ति,ऐश्वर्य, यश, दिर्धायु प्रदान करने वाल व उत्तम स्वास्थ्य देने में समर्थ हैं। हनुमानजी का दक्षिणमुखी स्वरूप भगवान नृसिंह का है। जो भक्तों के भय, चिंता, परेशानी को दूर करता हैं।

श्री हनुमान का ऊर्ध्वमुख घोडे के समान हैं। हनुमानजी का यह स्वरुप ब्रह्मा जी की प्रार्थना पर प्रकट हुआ था। मान्यता है कि हयग्रीवदैत्य का संहार करने के लिए वे अवतरित हुए। कष्ट में पडे भक्तों को वे शरण देते हैं। ऐसे पांच मुंह वाले रुद्र कहलाने वाले हनुमान बडे कृपालु और दयालु हैं।

हनुमानजी के अनेको दिव्य चरित्र बल, बुद्धि कर्म, समर्पण, भक्ति, निष्ठा, कर्तव्य शील जैसे आदर्श गुणो से युक्त हैं। अतः श्री हनुमानजी के पूजन से व्यक्ति में भक्ति, धर्म, गुण, शुद्ध विचार, मर्यादा, बल , बुद्धि, साहस इत्यादी गुणो का भी विकास हो जाता हैं।

विद्वानो के मतानुशार हनुमानजी के प्रति द्रढ आस्था और अटूट विश्वास के साथ पूर्ण भक्ति एवं समर्पण की भावना से हनुमानजी के विभिन्न स्वरूपका अपनी आवश्यकता के अनुशार पूजन-अर्चन कर व्यक्ति अपनी समस्याओं से मुक्त होकर जीवन में सभी प्रकार के सुख प्राप्त कर सकता हैं।

मनोकामना की पूर्ति हेतु कौन सी हनुमान प्रतिमा का पूजल करना लाभप्रद रहेगा। इस जानकारी से आपको अवगत कराने का प्रयास किया जारहा हैं।

इस अंक में प्रकाशित कवच से संबंधित जानकारीयों के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना एवं उपायों के लाभ, प्रभाव इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी, गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान ज्योतिषी, गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना, उपाय के प्रभावों का वर्णन करने में भेद होने पर कामना सिद्धि हेतु कि जाने वाली वाली पूजन विधि एवं उसके प्रभावों में भिन्नता संभव हैं।

आपको एवं आपके परिवार के सभी सदस्यों को गुरुत्व कार्यालय परिवार की और से हनुमान जयंति की शुभकामनाएं ..

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो हनुमान जी की कृपा आपके परिवार पर बनी रहे। हनुमान जी से यही प्राथना हैं...

चिंतन जोशी

***** हनुमान जयंति विशेषांक से संबंधित सूचना *****

- पत्रिका में प्रकाशित हनुमान जयंति विशेषांक में देवी उपासना से संबंधित लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- हनुमान जयंति विशेषांक में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- देवी उपासना का विषय आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया हैं।
- हनुमान जयंति विशेषांक से संबंधित विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- हनुमान जयंति से संबंधित सभी जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- हनुमान जयंति विशेषांक से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- हनुमान जयंति विशेषांक से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हनुमान जयंति विशेषांक से संबंधित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले हनुमान जयंति, मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी हनुमान जयंति, मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हनुमान जयंति विशेषांक से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी देवी उपासना की जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

हनुमान चालीसा और बजरंग बाण का चमत्कार

चिंतन जोशी

आज हर व्यक्ति अपने जीवन मे सभी भौतिक सुख साधनो की प्राप्ति के लिये भौतिकता की दौड मे भागते हुए किसी न किसी समस्या से ग्रस्त है। एवं व्यक्ति उस समस्या से ग्रस्त होकर जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता है।

व्यक्ति उस समस्या से अति सरलता एवं सहजता से मुक्ति तो चाहता है पर यह सब केसे होगा? उस की उचित जानकारी के अभाव में मुक्त हो नहीं पाते। और उसे अपने जीवन में आगे गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं होता। एसे मे सभी प्रकार के दुख एवं कष्टों को दूर करने के लिये अचुक और उत्तम उपाय है हनुमान चालीसा और बजरंग बाण का पाठ...

हनुमान चालीसा और बजरंग बाण ही क्यु ?

क्योकि वर्तमान युग में श्री हनुमानजी शिवजी के एक एसे अवतार है जो अति शीघ्र प्रसन्न होते है जो अपने भक्तो के समस्त दुखो को हरने मे समर्थ है। श्री हनुमानजी का नाम स्मरण करने मात्र से ही भक्तो के सारे संकट दूर हो जाते हैं। क्योकि इनकी पूजा-अर्चना अति सरल है, इसी कारण श्री हनुमानजी जन साधारण मे अत्यंत लोकप्रिय है। इनके मंदिर देश-विदेश सवत्र स्थित हैं। अतः भक्तों को पहुंचने में अत्याधिक कठिनाई भी नहीं आती है। हनुमानजी को प्रसन्न करना अति सरल है

हनुमान चालीसा और बजरंग बाण के पाठ के माध्यम से साधारण व्यक्ति भी बिना किसी विशेष पूजा अर्चना से अपनी दैनिक दिनचर्या से थोडा सा समय निकाल ले तो उसकी समस्त परेशानी से मुक्ति मिल जाती है।

"यह नातो सुनि सुनाइ बात है ना किसी किताब मे लिखी बात है, यह स्वयं हमारा निजी एवं हमारे साथ जुडे लोगो के अनुभत है।"

उपयोगी जानकारी

हनुमान चालीसा और बजरंग बाण के नियमित पाठ से हनुमान जी की कृपा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए प्रस्तुत हैं कुछ उपयोगी जानकारी ..

- नियमित रोज सुभह स्नान आदिसे निवृत होकर स्वच्छ कपडे पहन कर ही पाठ का प्रारम्भ करे।
- नियमित पाठ में शुद्धता एवं पवित्रता अनिवार्य है।
- हनुमान चालीसा और बजरंग बाण के पाठ करते समय धूप-दीप अवश्य लगाये इस्से चमत्कारी एवं शीघ्र प्रभाव प्राप्त होता है।
- दीप संभव न होतो केवल ३ अगरबत्ती जलाकर ही पाठ करे।
- कुछ विद्वानो के मत से बिना धूप से हनुमान चालीसा और बजरंग बाण के पाठ प्रभाव हिन होता है।
- यदि संभव हो तो प्रसाद केवल शुद्ध घी का चढाए अन्य था न चढाए
- जहा तक संभव हो हनुमान जी का सिर्फ़ चित्र (फोटो) रखे।
- यदि घर मे अलग से पूजा घर की व्यवस्था हो तो वास्तुशास्त्र के हिसाब से मूर्ति रखना शुभ होगा। नही तो हनुमान जी का सिर्फ़ चित्र (फोटो) रखे।
- यदि मूर्ति हो तो ज्यद बडी न हो एवं मिट्टी कि बनी नही रखे।
- मूर्ति रखना चाहे तो बेहतर है सिर्फ़ किसी धातु या पत्थर की बनी मूर्ति रखे।

सरल विधि-विधान से हनुमानजी की पूजा

✍ चिंतन जोशी

इस कलयुग में सर्वाधिक देवता के रुप में श्री रामभक्त हनुमानजी की ही पूजा की जाती हैं क्योंकि हनुमानजी को कलयुग का जीवंत अर्थात साक्षात देवता माना गया हैं। धर्म शास्त्रों के अनुसार हनुमानजी का जन्म चैत्र मास की पूर्णिमा के दिन हुआ था। इस लिये प्रतिवर्ष चैत्र मास की पूर्णिमा का पर्व हनुमान जयंती के रूप में मनाया जाता है। **वर्ष 2015 में हनुमान जयंती 4 अप्रैल, शनिवार को हैं।**

वैसे तो हनुमानजी की पूजा हेतु अनेको विधि-विधान प्रचलन में हैं पर यहा साधारण व्यक्ति जो संपूर्ण विधि-विधान से हनुमानजी का पूजन नहीं कर सकते वह व्यक्ति यदि इस विधि-विधान से पूजन करे तो उन्हें भी पूर्ण फल प्राप्त हो सकता हैं।

श्रीहनुमान पूजन विधि

हनुमानजी का पूजन करते समय सबसे पहले ऊन के आसन पर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठ जाएं। हनुमानजी की छोटी प्रतिमा अथवा चित्र स्थापित करें।

इसके पश्चात हाथ में अक्षत (अर्थात बिना टूटे चावल) एवं फूल लेकर इस मंत्र से हनुमानजी का

ध्यान:

अतुलितबलधामम् हेमशैलाभदेहम्
दनुजवनकृशानुम् ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानम् वानराणामधीशम्
रघुपतिप्रियभक्तम् वातजातम् नमामि॥

ॐ हनुमते नम: ध्यानार्थे पुष्पाणि सर्मपयामि॥

इसके पश्चयात चावल और फूल हनुमानजी को अर्पित कर दें।

आवाह्न:

हाथ में फूल लेकर इस मंत्र का उच्चारण करते हुए श्री हनुमानजी का आवाह्न करें।

उद्यत्कोट्यर्कसंकाशम् जगत्प्रक्षोभकारकम्।
श्रीरामड्घ्रिध्यानिनिष्ठम् सुग्रीवप्रमुखार्चितम्॥
विन्नासयन्तम् नादेन राक्षसान् मारुतिम् भजेत्॥

ॐ हनुमते नम: आवाहनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि॥
इसके पश्चयात फूलों को हनुमानजी को अर्पित कर दें।

आसन:

इस मंत्र से हनुमानजी का आसन अर्पित करें। आसन हेतु कमल अथवा गुलाब का फूल अर्पित करें।

तप्तकांचनवर्णाभम् मुक्तामणिविराजितम्।
अमलम् कमलम् दिव्यमासनम् प्रतिगृह्यताम्॥

आचमनी:

इसके पश्चयात इन मंत्रों का उच्चारण करते हुए हनुमानजी के सम्मुख भूमि पर अथवा किसी बर्तन में तीन बार जल छोड़ें।

ॐ हनुमते नम:, पाद्यम् समर्पयामि॥
अध्र्यम् समर्पयामि। आचमनीयम् समर्पयामि॥

स्नान:

इसके पश्चयात हनुमानजी की मूर्ति को गंगाजल अथवा शुद्ध जल से स्नान करवाएं तत्पश्चात पंचामृत (घी, शहद,

पंचमुखी हनुमान का पूजन उत्तम फलदायी हैं

चिंतन जोशी

शास्त्रो विधान से हनुमानजी का पूजन और साधना विभिन्न रुप से किये जा सकते हैं।

हनुमानजी का एकमुखी, पंचमुखीऔर एकादश मुखीस्वरूप के साथ हनुमानजी का बाल हनुमान, भक्त हनुमान, वीर हनुमान, दास हनुमान, योगी हनुमान आदि प्रसिद्ध है। किंतु शास्त्रों में श्री हनुमान के ऐसे चमत्कारिक स्वरूप और चरित्र की भक्ति का महत्व बताया गया है, जिससे भक्त को बेजोड़ शक्तियां प्राप्त होती है। श्री हनुमान का यह रूप है - पंचमुखी हनुमान।

मान्यता के अनुशार पंचमुखीहनुमान का अवतार भक्तों का कल्याण करने के लिए हुवा हैं। हनुमान के पांच मुख क्रमश:पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और ऊर्ध्व दिशा में प्रतिष्ठित हैं।

पंचमुखीहनुमानजी का अवतार मार्गशीर्ष कृष्णाष्टमी को माना जाता हैं। रुद्र के अवतार हनुमान ऊर्जा के प्रतीक माने जाते हैं। इसकी आराधना से बल, कीर्ति, आरोग्य और निर्भीकता बढती है।

रामायण के अनुसार श्री हनुमान का विराट स्वरूप पांच मुख पांच दिशाओं में हैं। हर रूप एक मुख वाला, त्रिनेत्रधारी यानि तीन आंखों और दो भुजाओं वाला है। यह पांच मुख नरसिंह, गरुड, अश्व, वानर और वराह रूप है। हनुमान के पांच मुख क्रमश:पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और ऊर्ध्व दिशा में प्रतिष्ठित माने गएं हैं।

पंचमुख हनुमान के पूर्व की ओर का मुख वानर का हैं। जिसकी प्रभा करोडों सूर्यो के तेज समान हैं। पूर्व मुख वाले हनुमान का पूजन करने से समस्त शत्रुओं का नाश हो जाता है।

पश्चिम दिशा वाला मुख गरुड का हैं। जो भक्तिप्रद, संकट, विघ्न-बाधा निवारक माने जाते हैं। गरुड की तरह हनुमानजी भी अजर-अमर माने जाते हैं।

हनुमानजी का उत्तर की ओर मुख शूकर का है। इनकी आराधना करने से अपार धन-सम्पत्ति,ऐश्वर्य, यश, दिर्धायु प्रदान करने वाल व उत्तम स्वास्थ्य देने में समर्थ हैं। हनुमानजी का दक्षिणमुखी स्वरूप भगवान नृसिंह का है। जो भक्तों के भय, चिंता, परेशानी को दूर करता हैं।

श्री हनुमान का ऊर्ध्वमुख घोडे के समान हैं। हनुमानजी का यह स्वरुप ब्रह्मा जी की प्रार्थना पर प्रकट हुआ था। मान्यता है कि हयग्रीवदैत्य का संहार करने के लिए वे अवतरित हुए। कष्ट में पडे भक्तों को वे शरण देते हैं। ऐसे पांच मुंह वाले रुद्र कहलाने वाले हनुमान बडे कृपालु और दयालु हैं।

हनुमतमहाकाव्य में पंचमुखीहनुमान के बारे में एक कथा हैं।

एक बार पांच मुंह वाला एक भयानक राक्षस प्रकट हुआ। उसने तपस्या करके ब्रह्माजीसे वरदान पाया कि मेरे रूप जैसा ही कोई व्यक्ति मुझे मार सके। ऐसा वरदान प्राप्त करके वह समग्र लोक में भयंकर उत्पात मचाने लगा। सभी देवताओं ने भगवान से इस कष्ट से छुटकारा मिलने की प्रार्थना की। तब प्रभु की आज्ञा पाकर हनुमानजी ने वानर, नरसिंह, गरुड, अश्व और शूकर का पंचमुख स्वरूप धारण किया। इस लिये एसी मान्यता है कि पंचमुखीहनुमान की पूजा-अर्चना से सभी देवताओं की उपासना के समान फल मिलता है। हनुमान के पांचों मुखों में तीन-तीन सुंदर आंखें आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक तीनों तापों को छुडाने वाली हैं। ये मनुष्य के सभी विकारों को दूर करने वाले माने जाते हैं। भक्त को शत्रुओं का नाश करने वाले हनुमानजी का हमेशा स्मरण करना चाहिए। विद्वानो के मत से पंचमुखी हनुमानजी की उपासना से जाने-अनजाने किए गए सभी बुरे कर्म एवं चिंतन के दोषों से मुक्ति प्रदान करने वाला हैं। पांच मुख वाले हनुमानजी की प्रतिमा धार्मिक और तंत्र शास्त्रों में भी बहुत ही चमत्कारिक फलदायी मानी गई है।

हनुमानजी के पूजन से कार्यसिद्धि

✍ चिंतन जोशी, स्वस्तिक.ऎन.जोशी

हिन्दू धर्म में श्री हनुमानजी प्रमुख देवी-देवताओ में से एक प्रमुख देव हैं। शास्त्रोक्त मत के अनुशार हनुमानजी को रूद्र (शिव) अवतार हैं। हनुमानजी का पूजन युगो-युगो से अनंत काल से होता आया हैं। हनुमानजी को कलियुग में प्रत्यक्ष देव मानागया हैं। जो थोडे से पूजन-अर्चन से अपने भक्त पर प्रसन्न हो जाते हैं और अपने भक्त की सभी प्रकार के दुःख, कष्ट, संकटो इत्यादी का नाश हो कर उसकी रक्षा करते हैं।



हनुमानजी का दिव्य चरित्र बल, बुद्धि कर्म, समर्पण, भक्ति, निष्ठा, कर्तव्य शील जैसे आदर्श गुणो से युक्त हैं। अतः श्री हनुमानजी के पूजन से व्यक्ति में भक्ति, धर्म, गुण, शुद्ध विचार, मर्यादा, बल , बुद्धि, साहस इत्यादी गुणो का भी विकास हो जाता हैं।

विद्वानो के मतानुशार हनुमानजी के प्रति दृढ आस्था और अटूट विश्वास के साथ पूर्ण भक्ति एवं समर्पण की भावना से हनुमानजी के विभिन्न स्वरूपका अपनी आवश्यकता के अनुशार पूजन-अर्चन कर व्यक्ति अपनी समस्याओं से मुक्त होकर जीवन में सभी प्रकार के सुख प्राप्त कर सकता हैं।

मनोकामना की पूर्ति हेतु कौन सी हनुमान प्रतिमा का पूजल करना लाभप्रद
रहेगा। इस जानकारी से आपको अवगत कराने का प्रयास किया जारहा हैं।

हनुमानजी के प्रमुख स्वरुप इस प्रकार हैं।

राम भक्त हनुमान स्वरुप: राम भक्ति में मग्न हनुमानजी की उपासना करने से जीवन के महत्व पूर्ण कार्यो में आ रहे संकटो एवं बाधाओं को दूर करती हैं एवं अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु आवश्यक एकाग्रता व अटूट लगन प्रदान करने वाली होती है।

संजीवनी पहाड़ लिये हनुमान स्वरुप: संजीवनी पहाड़ उठाये हुए हनुमानजी की उपासना करने से व्यक्ति को प्राणभय, संकट, रोग इत्यादी हेतु लाभप्रद मानी गई हैं। विद्वानो के मत से जिस प्रकार हनुमानजी ने लक्ष्मणजी के प्राण बचाये थे उसी प्रकार हनुमानजी अपने भक्तो के प्राण की रक्षा करते हैं एवं अपने भक्त के बडे से बडे संकटो को संजिवनी पहाड़ की तरह उठाने में समर्थ हैं।

ध्यान मग्न हनुमान स्वरुप: हनुमानजी का ध्यान मग्न स्वरुप व्यक्ति को साधना में सफलता प्रदान करने वाला, योग सिद्धि या प्रदान करने वाला मानागया हैं।

रामायणी हनुमान स्वरुप: रामायणी हनुमानजी का स्वरुप विद्यार्थीयो के लिये विशेष लाभ प्रद होता हैं। जिस प्रकार रामायण एक आदर्श ग्रंथ हैं उसी प्रकार हनुमानजी के रामायणी स्वरुप का पूजन विद्या अध्यन से जुडे लोगो के लिये लाभप्रद होता हैं।

हनुमानजी का पवन पुत्र स्वरुप: हनुमानजी का पवन पुत्र स्वरुप के पूजन से आकस्मिक दुर्घटना, वाहन इत्यादि की सुरक्षा हेतु उत्तम माना गया हैं। हनुमानजी के उस स्वरुप का पूजन करने से

हनुमान बाहुक क पाठ रोग व कष्ट दूर करता हैं

चिंतन जोशी,

हनुमान बाहुक की रचना संत गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपीन दाहिनी बाहु में हुई असह्य पीड़ा के निवारण के लिए की थी। हनुमान बाहुक में तुलसीदासजी ने हनुमानजी की महिमा का चिंतन व तुलसीदासजी के सर्वअंगो में हो रही पीड़ा की निवृति की प्रार्थना है।

हनुमान बाहुक सिद्ध संत गोस्वामी तुलसीदासजी के द्वारा विरचित सिद्ध स्तोत्र है।

हनुमान बाहुक का पाठ किसी भी प्रकार की आधि–व्याधि जेसी पीड़ा, भूत, पेत, पिशाच, जेसी उपाधि तथा किसी भी प्रकार के शत्रु द्वारा किये हुए दुष्ट भिचार कर्म की निवृति के लिए हनुमान बाहुक का नियमित पाठ तथा अनुष्ठान श्रेष्ठ उपाय हैं। अनुष्ठान के समय एकाहार अथवा फलाहार करे। पूर्ण ब्रह्मचर्य आदि का पालन और भूमि शयन करें।

हनुमानजी का पूजन और हनुमान बाहुक के पाठ का अनुष्ठान 40 दिन तक करने से अभीष्ट फल की सिद्धि अथवा रोग, कष्ट इत्यादि का निवारण हो जाता है।

नोट: जो व्यक्ति अनुष्ठान करने में असमर्थ हो वह प्रतिदिन हनुमान बाहुक का श्रद्धा अनुशार पाठ करके भी लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

हनुमान बाहुक

छप्पय

सिंधु तरन, सिय-सोच हरन, रबि बाल बरन तनु । भुज बिसाल, मूरति कराल कालहु को काल जनु ॥ गहन-दहन-निरदहन लंक निःसंक, बंक-भुव । जातुधान-बलवान मान-मद-दवन पवनसुव ॥ कह तुलसिदास सेवत सुलभ सेवक हित सन्तत निकट । गुन गनत, नमत, सुमिरत जपत समन सकल-संकट-विकट ॥१॥

स्वर्न-सैल-संकास कोटि-रवि तरुन तेज घन । उर विसाल भुज दण्ड चण्ड नख-वज्रतन ॥ पिंग नयन, भृकुटी कराल रसना दसनानन । कपिस केस करकस लंगूर, खल-दल-बल-भानन ॥ कह तुलसिदास बस जासु उर मारुतसुत मूरति विकट । संताप पाप तेहि पुरुष पहि सपनेहुँ नहिं आवत निकट ॥२॥

झूलना

पञ्चमुख-छःमुख भृगु मुख्य भट असुर सुर, सर्व सरि समर समरत्थ सूरो । बांकुरो बीर बिरुदैत बिरुदावली, बेद बंदी बदत पैजपूरो ॥ जासु गुनगाथ रघुनाथ कह जासुबल, बिपुल जल भरित जग जलधि झूरो ।
दुवन दल दमन को कौन तुलसीस है, पवन को पूत रजपूत रुरो ॥३॥

घनाक्षरी

भानुसों पढ़न हनुमान गए भानुमन, अनुमानि सिसु केलि कियो फेर फारसो । पाछिले पगनि गम गगन मगन मन, क्रम को न भ्रम कपि बालक बिहार सो ॥ कौतुक बिलोकि लोकपाल हरिहर विधि, लोचननि चकाचौंधी चित्तनि खबार सो। बल कैंधो बीर रस धीरज कै, साहस कै, तुलसी सरीर धरे सबनि सार सो ॥४॥

भारत में पारथ के रथ केथू कपिराज, गाज्यो सुनि कुरुराज दल हल बल भो । कह्यो द्रोन भीषम समीर सुत महाबीर, बीर-रस-बारि-निधि जाको बल जल भो ॥ बानर सुभाय बाल केलि भूमि भानु लागि, फलँग फलाँग हूतें घाटि नभ तल भो । नाई-नाई-माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जो हैं, हनुमान देखे जगजीवन को फल भो ॥५॥

गो-पद पयोधि करि, होलिका ज्यों लाई लंक, निपट निःसंक पर पुर गल बल भो । द्रोन सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर, कंदुक ज्यों कपि खेल बेल कैसो फल भो ॥ संकट समाज असमंजस भो राम राज, काज जुग पूगनि

तुलसी को न चारो । दोष सुनाये तैं आगेहुँ को होशियार ह्वैं हों मन तो हिय हारो ॥१६॥

तेरे थपै उथपै न महेस, थपै थिर को कपि जे उर घाले । तेरे निबाजे गरीब निबाज बिराजत बैरिन के उर साले ॥ संकट सोच सबै तुलसी लिये नाम फटै मकरी के से जाले । बूढ भये बलि मेरिहिं बार, कि हारि परे बहुतै नत पाले ॥१७॥

सिंधु तरे बड़े बीर दले खल, जारे हैं लंक से बंक मवासे । तैं रनि केहरि केहरि के बिदले अरि कुंजर छैल छवासे ॥ तोसो समत्थ सुसाहेब सेई सहै तुलसी दुख दोष दवा से । बानरबाज ! बढ़े खल खेचर, लीजत क्यों न लपेटि लवासे ॥१८॥

अच्छ विमर्दन कानन भानि दसानन आनन भा न निहारो । बारिदनाद अकंपन कुंभकरन से कुञ्जर केहरि वारो ॥ राम प्रताप हुतासन, कच्छ, विपच्छ, समीर समीर दुलारो । पाप ते साप ते ताप तिहूँ तें सदा तुलसी कह सो रखवारो ॥१९॥

घनाक्षरी

जानत जहान हनुमान को निवाज्यो जन, मन अनुमानि बलि बोल न बिसारिये । सेवा जोग तुलसी कबहुँ कहा चूक परी, साहेब सुभाव कपि साहिबी संभारिये ॥ अपराधी जानि कीजै सासति सहस भान्ति, मोदक मरै जो ताहि माहुर न मारिये । साहसी समीर के दुलारे रघुबीर जू के, बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिये ॥२०॥

बालक बिलोकि, बलि बारें तें आपनो कियो, दीनबन्धु दया कीन्हीं निरुपाधि न्यारिये । रावरो भरोसो तुलसी के, रावरोई बल, आस रावरीयै दास रावरो विचारिये ॥ बड़ो बिकराल कलि काको न बिहाल कियो, माथे पगु बलि को निहारि सो निबारिये । केसरी किसोर रनरोर बरजोर बीर, बाँह पीर राहु मातु ज्यौं पछारि मारिये ॥२१॥

उथपे थपनथिर थपे उथपनहार, केसरी कुमार बल आपनो संबारिये ।
राम के गुलामनि को काम तरु रामदूत, मोसे दीन दूबरे को तकिया तिहारिये ॥ साहेब समर्थ तो सों तुलसी के माथे पर, सोऊ अपराध बिनु बीर, बाँधि मारिये । पोखरी बिसाल बाँहु, बलि, बारिचर पीर, मकरी ज्यों पकरि के बदन बिदारिये ॥२२॥

राम को सनेह, राम साहस लखन सिय, राम की भगति, सोच संकट निवारिये । मुद मरकट रोग बारिनिधि हेरि हारे, जीव जामवंत को भरोसो तेरो भारिये ॥ कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेम पब्बयतें, सुथल सुबेल भालू बैठि कै विचारिये । महाबीर बाँकुरे बराकी बाँह पीर क्यों न, लंकिनी ज्यों लात घात ही मरोरि मारिये ॥२३॥

लोक परलोकहुँ तिलोक न विलोकियत, तोसे समरथ चष चारिहूँ निहारिये । कर्म, काल, लोकपाल, अग जग जीवजाल, नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये ॥ खास दास रावरो, निवास तेरो तासु उर, तुलसी सो, देव दुखी देखिअत भारिये । बात तरुमूल बाँहूसूल कपिकच्छु बेलि, उपजी सकेलि कपि केलि ही उखारिये ॥२४॥

करम कराल कंस भूमिपाल के भरोसे, बकी बक भगिनी काहू तें कहा डरैगी । बड़ी बिकराल बाल घातिनी न जात कहि, बाँहू बल बालक छबीले छोटे छरैगी ॥ आई है बनाई बेष आप ही बिचारि देख, पाप जाय सब को गुनी के पाले परैगी । पूतना पिसाचिनी ज्यौं कपि कान्ह तुलसी की, बाँह पीर महाबीर तेरे मारे मरैगी ॥२५॥

भाल की कि काल की कि रोष की त्रिदोष की है, बेदन बिषम पाप ताप छल छाँह की । करमन कूट की कि जन्त्र मन्त्र बूट की, पराहि जाहि पापिनी मलीन मन माँह की ॥ पैहहि सजाय, नत कहत बजाय तोहि, बाबरी न होहि बानि जानि कपि नाँह की । आन हनुमान की दुहाई बलवान की, सपथ महाबीर की जो रहै पीर बाँह की ॥२६॥

घनाक्षरी

काल की करालता करम कठिनाई कीधौ, पाप के प्रभाव की सुभाय बाय बावरे । बेदन कुभाँति सो सही न जाति राति दिन, सोई बाँह गही जो गही समीर डाबरे ॥ लायो तरु तुलसी तिहारो सो निहारि बारि, सींचिये मलीन भो तयो है तिहुँ तावरे । भूतनि की आपनी पराये की कृपा निधान, जानियत सबही की रीति राम रावरे ॥३७॥

पाँय पीर पेट पीर बाँह पीर मुंह पीर, जर जर सकल पीर मई है । देव भूत पितर करम खल काल ग्रह, मोहि पर दवरि दमानक सी दई है ॥ हौं तो बिनु मोल के बिकानो बलि बारे हीतें, ओट राम नाम की ललाट लिखि लई है । कुँभज के किंकर बिकल बूढ़े गोखुरनि, हाय राम राय ऐसी हाल कहूँ भई है ॥३८॥

बाहुक सुबाहु नीच लीचर मरीच मिलि, मुँह पीर केतुजा कुरोग जातुधान है । राम नाम जप जाग कियो चहों सानुराग, काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान है ॥ सुमिरे सहाय राम लखन आखर दौऊ, जिनके समूह साके जागत जहान है । तुलसी सँभारि ताडका सँहारि भारि भट, बेधे बरगद से बनाई बानवान है ॥३९॥

बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो, राम नाम लेत माँगि खात टूक टाक हौं । परयो लोक रीति में पुनीत प्रीति राम राय, मोह बस बैठो तोरि तरकि तराक हौं ॥ खोटे खोटे आचरन आचरत अपनायो, अंजनी कुमार सोध्यो रामपानि पाक हौं । तुलसी गुसाँई भयो भोंडे दिन भूल गयो, ताको फल पावत निदान परिपाक हौं ॥४०॥

असन बसन हीन बिषम बिषाद लीन, देखि दीन दूबरो करै न हाय हाय को । तुलसी अनाथ सो सनाथ रघुनाथ कियो, दियो फल सील सिंधु आपने सुभाय को ॥ नीच यहि बीच पति पाइ भरु हाईगो, बिहाइ प्रभु भजन बचन मन काय को । ता तें तनु पेषियत घोर बरतोर मिस, फूटि फूटि निकसत लोन राम राय को ॥४१॥

जीओ जग जानकी जीवन को कहाइ जन, मरिबे को बारानसी बारि सुर सरि को । तुलसी के दोहूँ हाथ मोदक हैं ऐसे ठाँऊ, जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरि को ॥ मो को झूँटो साँचो लोग राम कौ कहत सब, मेरे मन मान है न हर को न हरि को । भारी पीर दुसह सरीर तें बिहाल होत, सोऊ रघुबीर बिनु सकै दूर करि को ॥४२॥

सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित, हित उपदेश को महेस मानो गुरु कै । मानस बचन काय सरन तिहारे पाँय, तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जाने सुर कै ॥ ब्याधि भूत जनित उपाधि काहु खल की, समाधि की जै तुलसी को जानि जन फुर कै । कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ, रोग सिंधु क्यों न डारियत गाय खुर कै ॥४३॥

कहों हनुमान सों सुजान राम राय सों, कृपानिधान संकर सों सावधान सुनिये । हरष विषाद राग रोष गुन दोष मई, बिरची बिरञ्ची सब देखियत दुनिये ॥ माया जीव काल के करम के सुभाय के, करैया राम बेद कहें साँची मन गुनिये । तुम्ह तें कहा न होय हा हा सो बुझैये मोहिं, हौं हूँ रहों मौनही वयो सो जानि लुनिये ॥४४॥

नटखट बालहनुमान

राकेश पंडा

हनुमान जी अपनी बाल्यावस्था में चंचल और नटखट स्वभाव के थे। वे अपनी शक्ति प्रमाण करने के लिए हाथी को उठाकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते। खेल-खेल में बड़े-बड़े वृक्षों को भी जडमूल से उखाडकर फेंक देते अतूट शक्ति उनमें विद्यमानथी और खेल-खेल में एक पर्वत से दूसरे पर्वत पर छलांग लगा देते थे एसा कोई पर्वतीय शिखर नहीं था जिस पर से हनुमानजी ने छलांग न लगाई हो। इस तरह हनुमान जी कई बार ऋषि-मुनियों के आश्रम में पहुंच कर नादान हरकतें करते, जिससे ऋषिमुनीओं की तपस्या एवं व्रत भंग हो जाते। वहँ ऋषि-मुनियों के कमडंल, आसन इत्यादी वस्तुओं को वृक्ष पर टाँग देते इस प्रकार विभिन्न हरकतो से उन्हें परेशान करते थे। धीरे-धीरे आयु बढ़ने के साथ-साथ श्री हनुमानजी की शरारते और भी बढ़ती चली गई इस वजह से उनके माता-पिता अधिक चिंतित होगए और ऋषि के पास पहुंचे और ऋषियों को हनुमानजी की नटखत शैतानिया कहँ सुनाई। हनुमानजी के पिता केसरीने ऋषि-मुनियों से कहा की हमें यह बालक कठोर तप के प्रभाव से प्राप्त हुआ हैं। आप उस पर अनुग्रह करो और उस पर एसी कृपा करो की जिससे उसकी नटखटता में परिवर्तन हो जाये।

केसरी जी की बात सुनकर ऋषियों ने सोचा कि हनुमानजी अपनी शक्तियों को भूल जाएं तो एसी हरकतें बंद हो जायेगी और उनका हित भी उसी में समाया हुआ है। ऋषि जानते थे के यह बालक का श्री राम के कार्य के संपादन हेतु जन्म हुआ है। इस लिए महर्षि भृगु और महर्षि अंगिरा के वंश में उत्पन्न हुए ऋषि मुनीयों ने श्री हनुमानजी को शाप दिया की वानरवीर आपको अपने बल और तेज का ध्यान नहीं रहेगा। जब कोई आपकी कीर्ति और बल का स्मरण करायेगा तभी आप का बल बढ़ेगा। एसे शाप के कारण श्री हनुमानजी का बल एवं तेज कम हो गया और वह सौम्य स्वभाव के हो गये। इस तरह अन्य ऋषिभी प्रसन्न हुए।

उसके बाद श्री हनुमानजी के उपनयन संस्कार हुए। श्री हनुमानजी ने समय के साथ भगवान श्री सूर्यनारायण को गुरु बनाया। इस तरह श्री हनुमानजी की बाल्यावस्था बहुत ही विशिष्ट एवं अदभूत रही ।

*****

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है। मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मंत्र सिद्ध यंत्र

जब हनुमान जी ने तोड़ा शनिदेव का घमंड!

चिंतन जोशी, स्वस्तिक.ऎन.जोशी

शनि देव पर तेल चढाया जाता हैं, इस संबंध में आनंद रामायण में एक कथा का उल्लेख मिलता हैं। जब श्री राम की सेना ने सागर सेतु बांध लिया, तब राक्षस इसे हानि न पहुंचा सकें, उसके लिए पवन सुत हनुमान को उसकी देखभाल की जिम्मेदारी सौपी गई। जब हनुमान जी शाम के समय अपने इष्टदेव राम के ध्यान में मग्न थे, तभी सूर्य पुत्र शनि ने अपना काला कुरूप चेहरा बनाकर क्रोधपूर्ण कहा- हे वानर मैं देवताओ में शक्तिशाली शनि हूँ। सुना हैं, तुम बहुत बलशाली हो। आँखें खोलो और मेरे साथ युद्ध करो, मैं तुमसे युद्ध करना चाहता हूँ। इस पर हनुमान ने विनम्रतापूर्वक कहा- इस समय मैं अपने प्रभु को याद कर रहा हूं। आप मेरी पूजा में विध्न मत डालिए। आप मेरे आदरणीय है। कृपा करके आप यहा से चले जाइए।

जब शनि देव लड़ने पर उतर आए, तो हनुमान जी ने अपनी पूंछ में लपेटना शुरू कर दिया। फिर उन्हे कसना प्रारंभ कर दिया जोर लगाने पर भी शनि उस बंधन से मुक्त न होकर पीड़ा से व्याकुल होने लगे। हनुमान ने फिर सेतु की परिक्रमा कर शनि के घमंड को तोड़ने के लिए पत्थरो पर पूंछ को झटका दे-दे कर पटकना शुरू कर दिया। इससे शनि का शरीर लहुलुहान हो गया, जिससे उनकी पीड़ा बढ़ती गई। तब शनि देव ने हनुमान जी से प्रार्थना की कि मुझे बधंन मुक्त कर दीजिए। मैं अपने अपराध की सजा पा चुका हूँ, फिर मुझसे ऐसी गलती नही होगी।

इस पर हनुमान जी बोले-मैं तुम्हे तभी छोड़ूंगा, जब तुम मुझे वचन दोगे कि श्री राम के भक्त को कभी परेशान नही करोगे। यदि तुमने ऐसा किया, तो मैं तुम्हें कठोर दंड दूंगा। शनि ने गिड़गिड़ाकर कहा -मैं वचन देता हूं कि कभी भूलकर भी आपके और श्री राम के भक्त की राशि पर नही आऊँगा। आप मुझे छोड़ दें। तभी हनुमान जी ने शनिदेव को छोड़ दिया। फिर हनुमान जी से शनिदेव ने अपने घावो की पीड़ा मिटाने के लिए तेल मांगा। हनुमान जी ने जो तेल दिया, उसे घाव पर लगाते ही शनि देव की पीड़ा मिट गई। उसी दिन से शनिदेव को तेल चढ़ाया जाता हैं, जिससे उनकी पीडा शांत हो जाती हैं और वे प्रसन्न हो जाते हैं।

आम के फलों से विधिवत हवन करें। हवन पूर्ण होने पर 22 ब्रह्मचारियों को भोजन कराना चाहिए । इस साधना से भगवान महावीर प्रसन्न होते हैं और आधक को सिद्धि प्रदान करते हैं ।

ध्यान मंत्र:

रामेष्टमित्रम् जगदेकवीरम् प्लवंगराजेन्द्रकृत प्रणामम् ।
सुमेरु शटन्गागमचिन्तयामाद्यम् हृदि स्मेरहम्
हनुमन्तमीड्यम् ।।

महावीर मंत्र:

ॐ ह्रौं हस्फ्रें ख्फ्रें हस्त्रौं हस्ख्फें हसौं हनुमते नमः।

सर्व कामना पूरक हनुमान माला मन्त्र:

सर्व कामना पूरक हनुमान माला मन्त्र को शुभ मुहूर्त में कुमकुम अथवा गोरोचन से भोजपत्र पर लिख कर विधान के साथ पूजन करके यन्त्र अर्थात ताविज में रख कर धारण करने से नज़र टोना-टोटका भूत-प्रेत आदि बाधाएं शांत हो जाती हैं। इस मंत्र का जप तथा हवन करने से भी शांति प्राप्त होती हैं।

हनुमान जी की मूर्ति या चित्र के सम्मुख इस मंत्र के 51 पाठ करें, इस मंत्र को भोजपत्र पर लिखकर पास में रखने से साधक को सभी शुभ कार्यों में सफलता मिलती हैं।

माला मंत्र:

ॐ वज्र-काय वज्र तुण्ड कपिल पिंगल ऊर्ध्व-केश महावीर सुरक्त मुख तडिज्जिह्व महा-रौद्र दंष्ट्रोत्कट कह कह करालिने महा दृढ प्रहारिन लन्केश्वर वधाय महा सेतु बंध महा शैल प्रवाह गगने चर एह्येहिं भगवन्महा बल पराक्रम भैरवाज्ञापय एह्येहि महारौद्र दीर्घ पुच्छेन वेष्टय वैरिणम् भन्जय भन्जय हुँ फट् ।।

उदर व्याधिनाशक हनुमन मंत्र:

मंत्र:

ॐ यो यो हनुमन्त फलफलित धग्धगित आयुराषः परुडाह ।

उक्त मन्त्र के प्रतिदिन 11 बार पाठ करने से, जटिल पेट के रोग भी शांत हो जाते हैं ।

श्री हनुमद् मंत्र

इस मंत्र का प्रतिदिन एक माल (108 बार) जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है -

श्री हनुमद् मंत्र:

ॐ एं ह्रीं हनुमते रामदूताय लंका विध्वंसनपायांनीगर्भसंभूताय शाकिनी डाकिनी विध्वंसनाय किलि किलि बुवुकरेण विभीषणाय हनुमद्देवाय ॐ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां फट् स्वाहा।

- हनुमान जी को लाल, पीले बड़े फूल अर्पित करने चाहिए जैसे कमल, गेंदे, सूर्यमुखी के फूल अर्पित करने पर हनुमान जी शीघ्र प्रसन्न होते हैं। हनुमान जी को आंकड़े (आंक) के फूल भी प्रिय हैं, इस लिए कई जगह हनुमानजी को आंकड़े (आंक) के फूल अर्पित किये जाते हैं।
- पूजन में नैवेद्य के रुप में हनुमानजी को प्रातः में गुड, नारियल का गोला और लड्डू का प्रसाद अर्पण करना चाहिए, दोपहर के समय में गुड, घी और गेहूं की रोटी का चूरमा का प्रसाद अर्पित करना चाहिए। रात्रि में आम, अमरूद, केला आदि फलों का प्रसाद अर्पित करने चाहिए।
- हनुमान जी की किसी साधना विशेष या व्रत-उपवास के दौरान ब्रह्मचर्य का अवश्य पालन करना चाहिए।
- हनुमान जी को नैवेद्य मै अर्पित किया गया प्रसाद भक्त को ग्रहण करना चाहिए।
- मंत्र जप करते समय हनुमान जी की प्रतिमा या चित्र के समक्ष उनके नेत्रों की ओर देखते हुए मंत्रों के जप करना अत्यंत लाभदायक होता हैं।
- जानकारो के मत से हनुमाजी के मन्त्र जप के लिए सात्विक कार्य के लिए रुद्राक्ष का प्रयोग उत्तम होता हैं और पराक्रमी कार्यों या तामसी कार्यों के लिए मूंगे की माला उत्तम फलदायक होती हैं।
- हनुमान जी की आराधना पूर्ण आस्था, श्रद्धा और सेवा भाव से करनी चाहिए।
- हनुमान जी का दिन मंगलवार है। इस दिन की जाने वाली विशेष पूजा-अर्चना, व्रत-उपवास या साधना भी विशेष फलप्रद होती हैं।
- मंगलवार के अलावा शनिवार को भी हनुमान पूजा का विधान शास्त्रों में मिलता हैं।
- हनुमान जी के पूजन से ग्रहों का अशुभ प्रभाव कम हो जाता हैं।
- इसलिए हनुमान साधना करने वाले साधकों में सूर्य तत्व अर्थात आत्मविश्वास, ओज, तेजस्विता आदि विशेष रूप से आ जाते हैं। यह तेज ही साधकों को सामान्य व्यक्तियों से अलग करता है।
- हनुमान आराधना के कुछ विशेष नियमों का पालन कर के विशेष लाभ प्राप्त हो सकते हैं।

॥ श्री हनुमान चालीसा ॥

॥ **दोहा** ॥
श्री गुरु चरन सरोज रज,
निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु,
जो दायकु फल चारि॥
बुद्धिहीन तनु जानिके,
सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं,
हरहु कलेस बिकार॥
॥ **चौपाई** ॥
जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥ ॥१॥
रामदूत अतुलित बल धामा।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥ ॥२॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी॥ ॥३॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुंडल कुंचित केसा॥ ॥४॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै।। ॥५॥
संकर सुवन केसरीनंदन।
तेज प्रताप महा जग बन्दन॥ ॥६॥
विद्यावान गुनी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर॥ ॥७॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया॥ ॥८॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
बिकट रूप धरि लंक जरावा॥ ॥९॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचंद्र के काज सँवारे॥ ॥१०॥
लाय सजीवन लखन जियाये।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये॥ ॥११॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥ ॥१२॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥ ॥१३॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा॥ ॥१४॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते॥ ॥१५॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥ ॥१६॥
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना।
लंकेस्वर भए सब जग जाना॥ ॥१७॥
जुग सहस्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥ ॥१८॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥ ॥१९॥
दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥ ॥२०॥
राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥ ॥२१॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डर ना॥ ॥२२॥
आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक तें काँपै॥ ॥२३॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै।
महाबीर जब नाम सुनावै॥ ॥२४॥
नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा॥ ॥२५॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥ ॥२६॥
सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा॥ ॥२७॥
और मनोरथ जो कोई लावै।
सोइ अमित जीवन फल पावै॥ ॥२८॥
चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा॥ ॥२९॥
साधु संत के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे॥ ॥३०॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता॥ ॥३१॥
राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा॥ ॥३२॥
तुम्हरे भजन राम को पावै।
जनम-जनम के दुख बिसरावै॥ ॥३३॥
अन्तकाल रघुबर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥ ॥३४॥
और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई॥ ॥३५॥
संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥ ॥३६॥
जय जय जय हनुमान गोसाईं।
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥ ॥३७॥
जो सत बार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महा सुख होई॥ ॥३८॥
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा॥ ॥३९॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय मँह डेरा॥ ॥४०॥
॥ **दोहा** ॥
पवनतनय संकट हरन,
मंगल मूरतिरूप।
राम लखन सीता सहित,
हृदय बसहु सुर भूप॥
॥ इति श्री हनुमान चालीसा सम्पूर्ण ॥

श्री एक मुखी हनुमत् कवच

॥अथ एकमुखी हनुमान् कवचम् ॥
॥श्रीरामदास उवाच ॥
एकदा सुखमासीनं शंकरं लोकशंकरम् ।
प्रपच्छ गिरिजाकांतं कर्पूरधवलं शिवम् ॥
॥पार्वत्युवाच ॥
भगवन् देवदेवेश लोकनाथ जगत्प्रभो ।
शोकाकुलानां लोकानां केन रक्षा भवेद् ध्रुवम् ॥
संग्रामे संकटे घोरे भूत प्रेतादिके भये ।
दु:ख दावाग्नि संतप्त चेतसां दु:खभागिनाम् ॥
॥श्रीमहादेव उवाच ॥
श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया ।
विभीषणाय रामेण प्रेम्णा दत्तं च यत्पुरा ॥
कवचं कपि नाथस्य वायु पुत्रस्य धीमतः ।
गुह्यं तत्ते प्रवक्ष्यामि विशेषाच्छ्रणु सुंदरि ॥
उद्यदादित्य संकाशमुदार भुज विक्रमम् ।
कंदर्प कोटि लावण्यं सर्व विद्या विशारदम् ॥
श्रीराम हृदयानन्दं भक्त कल्पमहीरुहम् ।
अभयं वरदं दोर्भ्यां कलये मारुतात्मजम् ॥
हनुमानञ्जनीसूनुर्वायुपुत्रो महाबलः ।
रामेष्टः फाल्गुनसखः पिङ्गाक्षोऽमितविक्रमः ॥
उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः ।
लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा ॥
एवं द्वादश नामानि कपीन्द्रस्य महात्मनः ।
स्वल्पकाले प्रबोधे च यात्राकाले च यः पठेत् ॥
तस्य सर्वभयं नास्ति रणे च विजयी भवेत् ।
राजद्वारे गह्वरे च भयं नास्ति कदाचन ॥
उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥

मंत्र ॐ नमो हनुमते सर्व ग्रहान् भूत भविष्य द्वर्तमानान् समीप स्थान् सर्व काल दुष्ट बुद्धीनुच्चाटयोच्चाटय परबलान् क्षोभय क्षोभय मम सर्व कार्याणि साधय साधय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् । घे घे घे ॐ शिवसिद्धिं ॐ ह्रां ॐ ह्रीं ॐ ह्रूं ॐ ह्रैं ॐ ह्रौं ॐ ह्रः स्वाहा । पर कृत यन्त्र मन्त्र पराहंकार भूत प्रेत पिशाच दृष्टि सर्व विघ्न दुर्जन चेष्टा कुविद्या सर्वोग्रभयानि निवारय निवारय बन्ध बन्ध लुण्ठ लुण्ठ विलुञ्च विलुञ्च किलि किलि सर्वकुयन्त्राणि दुष्टवाचं ॐ हुं फट् स्वाहा ।

श्रद्धापूर्वक प्रार्थना करने के उपरांत हाथ की अंजली में जल लेकर विनियोग करते हुए जल को पृथ्वी पर छोड़ दें। तत्पश्चात् वायुपुत्र का ध्यान करते हुए सम्पूर्ण अंगों का न्यास करें। प्रत्येक अंग को ध्यान करते हुए स्पर्श करें।

विनियोगः ॐ अस्य श्रीहनुमत् कवच स्तोत्र मन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः, श्रीहनुमान् परमात्मा देवता, अनुष्टुप् छंदः, मारुतात्मज इति बीजम्, ॐ अंजनीसूनुरिति शक्तिः, लक्ष्मण प्राण दातेति कीलकम् रामदूतायेती अस्त्रम्, हनुमानदेवता इति कवचम्, पिङ्गाक्षोऽमितविक्रम इति मन्त्रः, श्रीरामचन्द्रप्रेरणया रामचन्द्रप्रीत्यर्थं मम सकलकामनासिद्धये जपे विनियोगः।

करन्यासः ॐ ह्रां अञ्जनी सुताय अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं रुद्र मूर्त्तये तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं राम दूताय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं वायु पुत्राय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ अग्नि गर्भाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः ब्रह्मास्त्र निवारणाय करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः ॐ ह्रां अञ्जनीसुताय हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं रामदूताय शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं वायुपुत्राय कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं अग्निगर्भाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः ब्रह्मास्त्रनिवारणाय अस्त्राय फट्।

॥ध्यानम् ॥
ध्यायेद् बाल दिवाकर द्युति निभं देवारि दर्पापहं देवेन्द्र
प्रमुखं प्रशस्त यशसं देदीप्यमानं रुचा ।
सुग्रीवादि समस्त वानर युतं सुव्यक्त तत्त्व प्रियं संरक्तारुण
लोचनं पवनजं पीताम्बरालंकृतम् ॥

मध्यरात्रे जले स्थित्वा सप्तवारं पठेद्यदि ।
क्षयाऽपस्मार कुष्ठादितापत्रय निवारणम् ॥१७॥
अश्वत्थमूलेऽर्कवारे स्थित्वा पठति यः पुमान् ।
अचलां श्रियमाप्नोति संग्रामे विजयं तथा ॥१८॥
रामाग्रे हनुमदग्रे यः पठेच्च नरः सदा ।
लिखित्वा पूजयेद्यस्तु सर्वत्र विजयी भवेत् ॥१९॥
यः करे धारयेन्नित्यं सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥२०॥
बुद्धिर्बलं यशोवीर्यं निर्भयत्वमरोगता ।
सुदार्ढ्यं वाक्स्फुरत्वं च हनुमत्स्मरणाद्भवेत् ॥२१॥
मारणं वैरिणां सद्यः शरणं सर्वसम्पदाम् ।
शोकस्य हरणे दक्षं वन्दे तं रणदारुणम् ॥२२॥
लिखित्वा पूजयेद्यस्तु सर्वत्र विजयी भवेत् ।
यः करे धारयेन्नित्यं स पुमान् श्रियमाप्नुयात् ॥२३॥
स्थित्वा तु बन्धने यस्तु जपं कारयति द्विजैः ।
तत्क्षणान्मुक्तिमाप्नोति निगडात्तु तथैव च ॥२४॥

॥ईश्वर उवाच ॥

भाविन्दू चरणारविन्दयुगलं कौपीनमौञ्जीधरं, काञ्ची
श्रेणिधरं दुकूलवसनं यज्ञोपवीताजिनम् ।
हस्ताभ्यां धृतपुस्तकं च विलसद्धारावलिं कुण्डलं
यश्चालंबिशिखं प्रसन्नवदनं श्री वायुपुत्रं भजेत् ॥
यो वारांनिधिमल्पपल्वलमिवोल्लंघ्य प्रतापान्वितो
वैदेहीघनशोकतापहरणो वैकुण्ठभक्ति प्रियः ।
अक्षाद्यूर्जितराक्षसेश्वरमहादर्पापहारी रणे सोऽयं
वानरपुंगवोऽवतु सदा योऽस्मान् समीरात्मजः ॥
वज्रांगं पिङ्गनेत्रं कनकमयलस्कुण्डलाक्रान्तगण्डं
दंभोलिस्तंभसारप्रहरणसुवशीभूतरक्षोधीनाथम् ।
उद्यल्लाङ्गूलसप्तप्रचलाचलधरं भीममूर्तिं कपीन्द्रं ध्यायन्तं
रामचन्द्रं भ्रमरदृढकरं सत्त्वसारं प्रसन्नम् ॥
वज्राङ्गं पिङ्गनेत्रं कनकमयलसत्कुण्डलैः शोभनीयं
सर्वापीठ्यादिनाथं करतलविधृतं पूर्णकुम्भं दृढाङ्म् ।
भक्तानामिष्टकारं विदधतिच सदा सुप्रसन्नम् हरीशं त्रैलोक्यं
त्रातुकामं सकलभुविगतं रामदूतं नमामि ॥
वामे करे वैरभिदं वहन्तं शैलं परं श्रृङ्खलहारकण्ठम् ।
दधानमाच्छाद्य सुवर्णवर्णं भजेज्ज्वलकुण्डलमाञ्जनेयम् ॥
पद्मरागमणिकुण्डलत्विषा पाटलीकृतकपोलमण्डलम् ।
दिव्यदेहकदलीवनान्तरे भावयामि पवमानन्दनम् ॥
यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनम् तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
वाष्पवारिपरिपूर्णलोवनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥
विवादे युद्धकाले च द्युते राजकुले रणे ।
दशवारं पठेद्रात्रौ मिताहारो जितेन्द्रियः ॥
विजयं लभते लोके मानवेषु नरेषु च ।
भुते प्रेते महादुर्गेऽरण्ये सागरसम्प्लवे ॥
सिंहव्याघ्रभये चोग्रे शरशस्त्रास्त्रपातने ।
श्रृङ्खलाबन्धने चैव कारागृहादियंत्रणे ॥
कोपस्तम्भे वह्नि चक्रे क्षेत्रे घोरे सुदारुणे ।
शोके महारणे चैव ब्रह्मग्रह निवारणे ॥
सर्वदा तु पठेन्नित्यं जयमाप्नोति निश्चितम् ।
भूर्जे वा वसने रक्ते क्षौमे वा तालपत्रके ॥
त्रिगंधिना वा मष्या वा विलिख्य धारयेन्नरः ।
पंचसप्तत्रिलोहैर्वा गोपितः सर्वतः शुभम् ॥
करे कट्यां बाहुमूले कण्ठे शिरसि धारितम् ।
सर्वान्कामान्वाप्नोति सत्यं श्रीरामभाषितम् ॥
अपराजित नमस्तेऽस्तु नमस्ते रामपूजित ।
प्रस्थानञ्च करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥
इत्युक्त्वा यो व्रजेद् ग्राम देशं तीर्थान्तरं रणम् ।
आगमिष्यति शीघ्रं स क्ज़ेमरुपो गृहं पुनः ॥
इति वदति विशेषाद्राघवे राक्षसेन्द्रः प्रमुदितवरचित्तो
रावणस्यानुजो हि ।
रघुवरपदपद्मं वंदयामास भूयः कुलसहितकृतार्थः शर्मदं
मन्यमानं ॥
तं वेदशास्त्रपरिनिष्ठितशुद्धबुद्धिं शर्माम्बरं सुरमुनीन्द्रनुतं
कपीन्द्रम् ।
कृष्णत्वचं क नकपिङ्गजटाकलापं व्यासं नमामि शिरसा
तिलकं मुनीनाम् ॥
य इदं प्रातरुत्थाय पठते कवचं सदा ।
आयुरारोग्यसंतानैस्तेभ्यस्तस्य स्तवो भवेत् ॥

श्री पच्चमुखी हनुमत्कवचम्

॥अथ श्रीपच्चमुखी हनुमत्कवचम्॥

श्री गणेशाय नमः।

ईश्वर उवाच:

अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि श्रृणु सर्वाङ्ग-सुन्दरी । यत्कृतं देवदेवेशि ध्यानं हनुमतः परम् ॥१॥ पच्चवक्त्र महाभीमं त्रिपच्चनयनैर्युतम् । बाहुभिर्दशभिर्युक्तं सर्वकामार्थ सिद्धिदम् ॥२॥ पूर्वं तु वानरं वक्त्र कोटिसूर्यसमप्रणम् । दंष्ट्राकराल वदनं भ्रकुटी कुटिलेक्षणम् ॥३॥ अस्यैव दक्षिणं वक्त्रं नारसिंहं महाद्भुतम् । अत्युग्र तेजवपुषं भीषणं भयनाशनम् ॥४॥ पश्चिमं गारुडं वक्त्रं वज्रतुण्डं महाबलम् । सर्वनागप्रशमनं विषभुतादिकृतन्तनम् ॥५॥

उत्तरं सौकर वक्त्रं कृष्णं दीप्तं नभोपमम् । पातालसिद्धिवेतालज्वररोगादि कृन्तनम् ॥६॥ ऊर्ध्वं हयाननं घोरं दानवान्तकरं परम् । खङ्ग त्रिशूल खट्वाङ्गं पाशमंकुशपर्वतम् ॥७॥ मुष्टिद्रुमगदाभिन्दिपालज्ञानेनसंयुतम् । एतान्यायुधजालानि धारयन्तं यजामहे ॥८॥ प्रेतासनोपविष्टं त सर्वाभरणभूषितम् । दिव्यमालाम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् ॥९॥

सर्वाश्चर्यमयं देवं हनुमद्विश्वतोमुखम् ॥१०॥ पञ्चास्यमच्युतमनेक विचित्रवर्णं चक्रं सुशङ्खविधृतं कपिराजवर्यम् । पीताम्बरादिमुकुटैरुपशोभिताङ्गं पिङ्गाक्षमाद्यमनिशं मनसा स्मरामि ॥११॥ मर्कटेशं महोत्साहं सर्वशोक-विनाशनम् । शत्रुं संहर मां रक्ष श्रियं दापयमे हरिम् ॥१२॥ हरिमर्कटमर्कटमन्त्रमिमं परिलिख्यति भूमितले । यदि नश्यति शत्रु-कुलं यदि मुञ्चति मुञ्चति वामकरः ॥१३॥

ॐ हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा । नमो भगवते पच्चवदनाय पूर्वकपिमुखे सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते पंचवदनाय दक्षिणमुखे करालवदनाय नर-सिंहाय सकल भूत प्रेत प्रमथनाय स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते पंचवदनाय पश्चिममुखे गरुडाय सकलविषहराय स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते पंचवदनाय उत्तरमुखे आदि-वराहाय सकलसम्पतकराय स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते पंचवदनाय ऊर्ध्वमुखे हयग्रीवाय सकलजनवशीकरणाय स्वाहा ।

॥ अथ न्यासध्यानादिकम् । दशांश तर्पणं कुर्यात् ॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीपच्चमुखी-हनुमत्-कवच-स्तोत्र-मंत्रस्य रामचन्द्र ऋषिः, अनुष्टुप छंदः, मम सकल भयविनाशार्थे जपे विनियोगः ।

ॐ हं हनुमानिति बीजम्, ॐ वायुदेवता इति शक्तिः, ॐ अञ्जनीसूनुरिति कीलकम्, श्रीरामचन्द्रप्रसादसिद्धयर्थं हनुमत्कवच मन्त्र जपे विनियोगः ।

कर-न्यासः- ॐ हं हनुमान् अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ वायुदेवता तर्जनीभ्यां नमः, ॐ अञ्जनी-सुताय मध्यमाभ्यां नमः, ॐ रामदूताय अनामिकाभ्यां नमः, ॐ श्री हनुमते कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ रुद्र-मूर्तये करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादि-न्यासः- ॐ हं हनुमान् हृदयाय नमः, ॐ वायुदेवता शिरसे स्वाहा, ॐ अञ्जनी-सुताय शिखायै वषट्, ॐ रामदूताय कवचाय हुम्, ॐ श्री हनुमते नेत्र-त्रयाय विषट्, ॐ रुद्र-मूर्तये अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्:

श्रीरामचन्द्र-दूताय आञ्जनेयाय वायु-सुताय महा-बलाय सीता-दुःख-निवारणाय लङ्कोपदहनाय महाबल-प्रचण्डाय फाल्गुन-सखाय कोलाहल-सकल-ब्रह्माण्ड-विश्वरुपाय सप्तसमुद्रनीरालङ्घिताय पिङ्लनयनामित-विक्रमाय सूर्य-बिम्ब-फल-सेवनाय दृष्टिनिरालङ्कृताय सञ्जीवनीनां निरालङ्कृताय अङ्गद-लक्ष्मण-महाकपि-सैन्य-प्राण-निर्वाहकाय दशकण्ठविध्वंसनाय रामेष्टाय महाफाल्गुन-सखाय सीता-समेत-श्रीरामचन्द्र-वर-प्रसादकाय षट् प्रयोगागम पच्चमुखी हनुमन् मन्त्र जपे विनियोगः ।

ॐ ह्रीं हरिमर्कटाय वं वं वं वं वं वषट् स्वाहा ।

ॐ ह्रीं हरिमर्कटमर्कटाय फं फं फं फं फं फट् स्वाहा ।

श्री सप्तमुखी हनुमत् कवचम्

॥ अथ श्री सप्तमुखी हनुमत् कवचम् ॥ (अथर्णव रहस्योक्त)

विनियोगः ॐ अस्य श्रीसप्तमुखिवीरहनुमत्कवच स्तोत्र मन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्रीसप्तमुखिकपिः परमात्मा देवता, ह्रां बीजम्, ह्रीं शक्तिः, ह्रूं कीलकम्, मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

करन्यासः ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः ॐ ह्रां हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रूं शिखायै वषट्, ॐ ह्रै कवचाय हुम्, ॐ ह्रौं नेत्र त्रयाय वोषट्, ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ।

ध्यानः वंदे वानरसिंह सर्परिपुवाराहश्वगोमानुषैर्युक्तं सप्तमुखैः करैर्द्रुमगिरिं चक्रं गदां खेटकम् । खट्वाङ्गं हलमंकुशं फणिसुधाकुम्भौ शराब्जाभयाञ्छूलं सप्तशिखं दधानममरैः सेव्यं कपिं कामदम् ॥

॥ ब्रह्मोवाच ॥

सप्तशीर्ष्णः प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम् । जप्त्वा हनुमतो नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१॥

सप्तस्वर्गपतिः पायाच्छिखां मे मारुतात्मजः । सप्तमूर्धा शिरोऽव्यान्मे सप्तार्चिर्भालदेशकम् ॥२॥

त्रिःसप्तनेत्रो नेत्रेऽव्यात्सप्तस्वरगतिः श्रुती । नासां सप्तपदार्थोव्यान्मुखं सप्तमुखोऽवतु ॥३॥

सप्तजिह्वस्तु रसनां रदान्सप्तहयोऽवतु । सप्तच्छंदो हरिः पातु कण्ठं बाहूगिरिस्थितः ॥४॥

करौ चतुर्दशकरो भूधरोऽव्यान्ममाङ्गुलीः । सप्तर्षिध्यातो हृदयमुदरं कुक्षिसागरः ॥५॥

सप्तद्वीपपतिश्चितं सप्तव्याहृतिरुपवान् । कटिं मे सप्तसंस्थार्थदायकः सक्थिनी मम ॥६॥

सप्तग्रहस्वरुपी मे जानुनी जंघयोस्तथा । सप्तधान्यप्रियः पादौ सप्तपातालधारकः ॥७॥

पशून्धनं च धान्यं च लक्ष्मी लक्ष्मीप्रदोऽवतु । दारान् पुत्रांश्च कन्याश्च कुटुम्बं विश्वपालकः ॥८॥

अनुरक्तस्थानमपि मे पायाद्वायुसुतः सदा ।

चौरेभ्यो व्यालदंष्ट्रिभ्यः श्रृङ्गिभ्यो भूतराक्षसात् ॥९॥ दैत्येभ्योऽप्यथ यक्षेभ्यो ब्रह्मराक्षसजाद्भयात् । दंष्ट्राकरालवदनो हनुमान्मां सदाऽवतु ॥१०॥

परशस्त्रमंत्रतंत्रयंत्राग्निजलविद्युतः । रुद्रांशः शत्रुसंग्रामात्सर्वावस्थासु सर्वभृत् ॥११॥

ॐ नमो भगवते सप्तवदनाय आद्यकपिमुखाय वीरहनुमते सर्वशत्रुसंहारणाय ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ॐ नमः स्वाहा ॥१२॥

ॐ नमो भगवते सप्तवदनाय द्वितीयनारसिंहास्याय अत्युग्रतेजोवपुषे भीषणाय भयनाशनाय हं हं हं हं हं हं हं ॐ नमः स्वाहा ॥१३॥

ॐ नमो भगवते सप्तवदनाय तृतीयविनाशनायवक्त्राय वज्रदंष्ट्राय महाबलाय सर्वरोगविनाशनाय मं मं मं मं मं मं मं ॐ नमः स्वाहा ॥१४॥

ॐ नमो भगवते सप्तवदनाय चतुर्थक्रोडतुण्डाय सौमित्रिरक्षकायपुत्राद्यभिवृद्धिकराय लं लं लं लं लं लं लं ॐ नमः स्वाहा ॥१५॥

ॐ नमो भगवते सप्तवदनाय पञ्चमाश्ववदनाय रुद्रमूर्तये सर्ववशीकरणाय सर्वनिगमस्वरुपाय रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं ॐ नमः स्वाहा ॥१६॥

ॐ नमो भगवते सप्तवदनाय षष्ठगोमुखाय सूर्यस्वरुपाय सर्वरोगहराय मुक्तिदात्रे ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमः स्वाहा ॥१७॥

एकादशमुखी हनुमान कवच

॥ अथ श्री एकादशमुखी हनुमान कवचम् ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ लोपामुद्रोवाच ॥
कुम्भोद्भवदया सिन्धो श्रुतं हनुमंतः परम् । यंत्रमंत्रादिकं सर्वं त्वन्मुखोदीरितं मया ॥१॥
दयां कुरु मयि प्राणनाथ वेदितुमुत्सहे । कवचं वायुपुत्रस्य एकादशखात्मनः ॥२॥
इत्येवं वचनं श्रुत्वा प्रियायाः प्रश्रयान्वितम् । वक्तुं प्रचक्रमे तत्र लोपामुद्रां प्रति प्रभुः ॥३॥
॥ अगस्त उवाच ॥
नमस्कृत्वा रामदूतं हनुमन्तं महामतिम् । ब्रह्मप्रोक्तं तु कवचं श्रृणु सुन्दरि सादरात् ॥४॥
सनन्दनाय सुमहच्चतुराननभाषितम् । कवचं कामदं दिव्यं रक्षःकुलनिबर्हणम् ॥५॥
सर्वसंपत्प्रदं पुण्यं मर्त्यानां मधुरस्वरे । ॐ अस्य श्रीकवचस्यैकादशवक्त्रस्य धीमतः ॥६॥
हनुमत्कवचमंत्रस्य सनन्दन ऋषिः स्मृतः । प्रसन्नात्मा हनुमांश्च देवाताऽत्र प्रकीर्तितः ॥७॥
छन्दोऽनुष्टुप् समाख्यातं बीजं वायुसुतस्तथा । मुख्यात्र प्राणः शक्तिश्च विनियोगः प्रकर्तितः ॥८॥
सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थ जप एवमुदीरयेत् ।
स्फ्रें बीजं शक्तिधृक् पातु शिरो मे पवनात्मजः ।
इति अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
क्रौं बीजात्मा नयनयोः पातु मां वानरेश्वरः ॥९॥ इति तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ क्षं बीजरुपी कर्णौ मे सीताशोकविनाशनः । इति मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ ग्लौं बीजवाच्यो नासां मे लक्ष्मणप्राणदायकः । इति अनामिकाभ्यां नमः ॥१०॥
ॐ वं बीजार्थश्च कण्ठं मे अक्षयक्षयकारकः । इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ रां बीजवाच्यो हृदयं पातु मे कपिनायकः । इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥११॥
ॐ वं बीजकीर्तितः पातु बाहु मे चाञ्जनीसुतः ।
ॐ ह्रां बीजं राक्षसेन्द्रस्य दर्पहा पातु चोदरम् ॥१२॥
सौं बीजमयो मध्यं मे पातु लंकाविदाहाकः ।
ह्रीं बीजधरो गुह्यं मे पातु देवेन्द्रवन्दितः ॥१३॥
रं बीजात्मा सदा पातु चोरू वार्धिलङ्घनः ।
सुग्रीव सचिवः पातु जानुनी मे मनोजवः ॥१४॥
आपादमस्तकं पातु रामदुतो महाबलः ।
पुर्वे वानरवक्त्रो मां चाग्नेय्यां क्षत्रियान्तकृत् ॥१५॥
दक्षिणे नारसिंहस्तु नैऋत्यां गणनायकः ।
वारुण्यां दिशि मामव्यात्खवक्त्रो हरिश्वरः ॥१६॥
वायव्यां भैरवमुखः कौबर्यां पातु मां सदा ।
क्रोडास्यः पातु मां नित्यमीशान्यां रुद्ररूपधृक् ॥१७॥
रामस्तु पातु मां नित्यं सौम्यरुपी महाभुज ः ।
एकादशमुखस्यैतद्दिव्यं वै कीर्तितं मया ॥१८॥
रक्षोघ्नं कामदं सौम्यं सर्वसम्पद्विधायकम् ।
पुत्रदं धनदं चोग्रं शत्रुसम्पत्तिमर्दनम् ॥१९॥
स्वर्गापवर्गदं दिव्यं चिन्तितार्थप्रदं शुभम् ।
एतत्कवचमज्ञात्वा मंत्रसिद्धिर्न जायते ॥२०॥
चत्वारिंशत्सहस्त्राणि पठेच्छुद्वात्मना नरः ।
एकवारं पठेन्नित्यं कवचं सिद्धिदं महत् ॥२१॥
द्विवारं वा त्रिवारं वा पठन्नायुष्यमाप्नुयात् ।
क्रमादेकादशादेवमावर्तनकृतात्सुधीः ॥२२॥
वर्षान्ते दर्शनं साक्षाल्लभते नात्र संशयः ।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति पुरुषः ॥२३॥
ब्रह्मोदीरितमेतद्धि तवाग्रे कथितं महत् ।
इत्येवमुक्त्वा कवचं महर्षिस्तूष्णीं बभूवेन्दुमुखीं निरीक्ष्य ।
संहृष्टचित्ताऽपि तदा तदीयपादौ ननामातिमुदा स्वभर्तुः ॥२४॥
॥ इत्यगस्त्यसंहितायामेकादशमुखहनुमत्कवचं संपूर्णम् ॥

लाङ्गूलास्त्र शत्रुञ्जय हनुमत् स्तोत्र

ॐ हनुमन्तमहावीर वायुतुल्यपराक्रमम् ।
मम कार्यार्थमागच्छ प्रणमाणि मुहुर्मुहुः ॥
विनियोगः ॐ अस्य श्रीहनुमच्छत्रुञ्जयस्तोत्रमालामन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः, नानाच्छन्दांसि श्री महावीरो हनुमान् देवता मारुतात्मज इति ह्सौं बीजम्, अञ्जनीसूनुरिति ह्फ्रें शक्तिः, ॐ हा हा हा इति कीलकम् श्री राम भक्ति इति ह्रां प्राणः, श्रीराम लक्ष्मणानन्दकर इति ह्रां ह्रीं ह्रूं जीव, ममाऽरातिपराजय निमित्त शत्रुञ्जय स्तोत्र मन्त्र जपे **विनियोगः।**

करन्यासः

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं हनुमते अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं रामदूताय तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं लक्ष्मण प्राणदात्रे मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं अञ्जनीसूनवे अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं सीताशोक विनाशाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं लङ्काप्रासादभञ्जनाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादि न्यासः

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं हनुमते हृदयाय नमः ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं रामदूताय शिरसे स्वाहा ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं लक्ष्मण प्राणदात्रे शिखायै वषट् ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं अञ्जनीसूनवे कवचाय हुम् ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं सीताशोक विनाशाय नेत्र त्रयाय वोषट् ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं लङ्काप्रासादभञ्जनाय अस्त्राय फट् ।

ध्यानः

ध्यायेदच् बालदिवाकर द्युतनिभं देवारिदर्पापहं देवेन्द्रप्रमुख प्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा ।
सुग्रीवादिसमस्तवानरयुतं सुव्यक्त तत्त्व प्रियं संरक्तारुण लोचनं पवनजं पीताम्बरालंकृतम् ॥
उद्यन्मार्तण्ड कोटि प्रकटरुचियुतं चारुवीरासनस्थं मौञ्जीयज्ञोपवीताभरणरुचिशिखं शोभितं कुंडलाङ्कम् ।
भक्तानामिष्टदं तं प्रणतमुनिजनं वेदनादप्रमोदं ध्यायेद् देवं विधेयं प्लवगकुलपतिं गोष्पदी भूतवार्धिम् ॥
वज्राङ्गं पिङ्गकेशाढ्यं स्वर्णकुण्डल मण्डितम् ।
निगूढमुपसङ्गम्य पारावारपराक्रमम् ॥
स्फटिकाभं स्वर्णकान्तिं द्विभुजं च कृताञ्जलिम् ।
कुण्डलद्वयसंशोभिमुखाम्भोजं हरिं भजे ॥
सव्यहस्ते गदायुक्तं वामहस्ते कमण्डलुम् ।
उद्यद्दक्षिणदोर्दण्डं हनुमन्तं विचिन्तयेत् ॥

इस तरह से श्रीहनुमानजी का ध्यान करके "अरे मल्ल चटख" तथा "टोडर मल्ल चटख" का उच्चारण करके हनुमानजी को 'कपिमुद्रा' प्रदर्शित करें ।

॥ माला मन्त्र ॥

"ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें ह्सौं नमो हनुमते त्रैलोक्याक्रमण पराक्रमण श्रीरामभक्त मम परस्य च सर्वशत्रून् चतुर्वर्णसम्भवान् पुं स्त्री नपुंसकान् भूत भविष्यद् वर्तमानान् दूरस्थ समीपस्थान् नाना नामधेयान् नाना संकर जातियान् कलत्र पुत्र मित्र भृत्य बन्धु सुहृत् समेतान् प्रभु शक्ति समेतान् धन धान्यादि सम्पत्ति युतान् राज्ञो राजपुत्र सरवकान् मंत्री सचिव सखीन् आत्यन्ति कान्क्षणेन त्वरया एतद्दिनावधि नानोपायैर्मारय मारय शस्त्रेण छेदय छेदय अग्निना ज्वालय ज्वालय दाहय दाहय अक्षयकुमारवत् पादताक्रमणे शिलातले त्रोटय त्रोटय घातय घातय बंधय बंधय भ्रामय भ्रामय भयातुरान्विसंज्ञान्सद्यः कुरु कुरु भस्मीभूतानुद्धूलय

भस्मीभूतानुद्धूलय भक्तजनवत्सल सीताशोकापहारक सर्वत्र मामेनं च रक्ष रक्ष महारुद्रावतार हां हां हुं हुं भूत संघैः सह भक्षय भक्षय क्रुद्ध चेतसा नखैर्विदारय नखैर्विदारय देशादस्मादुच्चाटय पिशाचवद् भ्रंशय भ्रंशय घे घे हूं फट् स्वाहा ॥१॥

ॐ नमो भगवते हनुमते महाबलपराक्रमाय महाविपत्ति निवारकाय भक्तजन मनःकल्पना कल्पद्रुमाय दुष्टजन मनोरथ स्तम्भकाय प्रभञ्जन प्राणप्रियाय स्वाहा ॥२॥

ध्यानः

श्रीमन्तं हनुमन्तमात्तरिपुभिद्भूभृत्तरुभ्राजितं
वल्गद्वालधिबद्धवैरिनिचयं चामीकराद्रिप्रभम् ।
रोषाद्रक्तपिशङ्ग नेत्र नलिनं भ्रूमभङ्गस्फुरत् प्रोद्यच्चण्ड
मयूख मण्डल मुखं दुःखापहं दुःखिनाम् ॥१॥
कौपीनं कटिसूत्रमौंज्यजिनयुग्देहं विदेहात्मजाप्राणाधीश
पदारविन्द निरतं स्वान्तं कृतान्तं द्विषाम् ।
ध्यात्वैव समराङ्गणस्थितमथानीय स्वहृत्पङ्कजे
संपूजनोक्तविधिना संप्रार्थयेत्प्रार्थितम् ॥२॥

॥मूल पाठ॥

हनुमन्नञ्जनीसूनो ! महाबलपराक्रम ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥१॥
मर्कटाधिप ! मार्तण्ड मण्डल ग्रास कारक ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥२॥
अक्षक्षपणपिङ्गाक्षक्षितिजाशुग्क्षयङ्ग ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥३॥
रुद्रावतार ! संसार दुःख भारापहारक ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥४॥
श्रीराम चरणाम्भोज मधुपायितमानस ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥५॥
बालिप्रथमक्रान्त सुग्रीवोन्मोचनप्रभो ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥६॥
सीता विरह वारीश मग्न सीतेश तारक ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥७॥
रक्षोराज तापाग्नि दह्यमान जगद्वन ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥८॥
ग्रस्ताऽशैजगत् स्वास्थ्य राक्षसाम्भोधिमन्दर ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥९॥
पुच्छ गुच्छ स्फुरद्वीर जगद् दग्धारिपत्तन ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥१०॥
जगन्मनो दुरुल्लंघ्य पारावार विलंघन ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥११॥
स्मृतमात्र समस्तेष्ट पूरक ! प्रणत प्रिय ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥१२॥
रात्रिञ्चर चमूराशिकर्त्तनैकविकर्त्तन ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥१३॥
जानकी जानकीजानि प्रेम पात्र ! परंतप ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥१४॥
भीमादिक महावीर वीरवेशावतारक ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥१५॥
वैदेही विरह क्लान्त रामरोषैक विग्रह ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥१६॥
वज्राङ्गनखदंष्ट्रेश ! वज्रिवज्रावगुण्ठन ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥१७॥
अखर्व गर्व गंधर्व पर्वतोद् भेदन स्वरः ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥१८॥
लक्ष्मण प्राण संत्राण त्रात तीक्ष्ण करान्वय ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥१९॥
रामादिविप्रयोगार्त्त ! भरताद्यार्त्तिनाशन ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥२०॥
द्रोणाचल समुत्क्षेप समुत्क्षिप्तारि वैभव ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥२१॥
सीताशीर्वाद सम्पन्न ! समस्तावयवाक्षत ! ।
लोलल्लांगूलपातेन ममाऽतरीन् निपातय ॥२२॥
इत्येवमश्वत्थतलोपविष्टः शत्रुंजयं नाम पठेत्स्वयं यः ।
स शीघ्रमेवास्त समस्तशत्रुः प्रमोदते मारुतज प्रसादात्
॥२३॥

॥ इति शत्रुञ्जय हनुमत्स्त्रोतं ॥

॥ श्री आञ्जनेय अष्टोत्तरशत नामावलिः ॥

ॐ मनोजवं मारुततुल्य वेगं,जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं,श्री रामदूतं शिरसा नमामि ॥

ॐ आञ्जनेयाय नमः ।
ॐ महावीराय नमः ।
ॐ हनूमते नमः ।
ॐ मारुतात्मजाय नमः ।
ॐ तत्वज्ञानप्रदाय नमः ।
ॐ सीतादेविमुद्राप्रदायकाय नमः ।
ॐ अशोकवनकाच्छेत्रे नमः ।
ॐ सर्वमायाविभंजनाय नमः ।
ॐ सर्वबन्धविमोक्त्रे नमः ।
ॐ रक्षोविध्वंसकारकाय नमः ।
ॐ परविद्या परिहाराय नमः ।
ॐ पर शौर्य विनाशकाय नमः ।
ॐ परमन्त्र निराकर्त्रे नमः ।
ॐ परयन्त्र प्रभेदकाय नमः ।
ॐ सर्वग्रह विनाशिने नमः ।
ॐ भीमसेन सहायकृथे नमः ।
ॐ सर्वदुखः हराय नमः ।
ॐ सर्वलोकचारिणे नमः ।
ॐ मनोजवाय नमः ।
ॐ पारिजात द्रुमूलस्थाय नमः ।
ॐ सर्व मन्त्र स्वरूपाय नमः ।
ॐ सर्व तन्त्र स्वरूपिणे नमः ।
ॐ सर्वयन्त्रात्मकाय नमः ।
ॐ कपीश्वराय नमः ।
ॐ महाकायाय नमः ।
ॐ सर्वरोगहराय नमः ।
ॐ प्रभवे नमः ।
ॐ बल सिद्धिकराय नमः ।
ॐ सर्वविद्या सम्पत्तिप्रदायकाय नमः ।
ॐ कपिसेनानायकाय नमः ।
ॐ भविष्यथ्चतुराननाय नमः ।
ॐ कुमार ब्रह्मचारिणे नमः ।
ॐ रत्नकुन्डलाय नमः ।
ॐ दीप्तिमते नमः ।
ॐ चन्चलद्वालसन्नद्धाय नमः ।
ॐ लम्बमानशिखोज्वलाय नमः ।
ॐ गन्धर्व विद्याय नमः ।
ॐ तत्वज्ञाय नमः ।
ॐ महाबल पराक्रमाय नमः ।
ॐ काराग्रह विमोक्त्रे नमः ।
ॐ शृन्खला बन्धमोचकाय नमः ।
ॐ सागरोत्तारकाय नमः ।
ॐ प्राज्ञाय नमः ।
ॐ रामदूताय नमः ।
ॐ प्रतापवते नमः ।
ॐ वानराय नमः ।
ॐ केसरीसुताय नमः ।
ॐ सीताशोक निवारकाय नमः ।
ॐ अन्जनागर्भ संभूताय नमः ।
ॐ बालार्कसद्रशाननाय नमः ।
ॐ विभीषण प्रियकराय नमः ।
ॐ दशग्रीव कुलान्तकाय नमः ।
ॐ लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः ।
ॐ वज्र कायाय नमः ।
ॐ महाद्युथये नमः ।
ॐ चिरंजीविने नमः ।
ॐ राम भक्ताय नमः ।
ॐ दैत्य कार्य विघातकाय नमः ।
ॐ अक्षहन्त्रे नमः ।
ॐ काञ्चनाभाय नमः ।
ॐ पञ्चवक्त्राय नमः ।
ॐ महा तपसे नमः ।
ॐ लन्किनी भञ्जनाय नमः ।
ॐ श्रीमते नमः ।
ॐ सिंहिका प्राण भन्जनाय नमः ।
ॐ गन्धमादन शैलस्थाय नमः ।
ॐ लंकापुर विदायकाय नमः ।
ॐ सुग्रीव सचिवाय नमः ।
ॐ धीराय नमः ।
ॐ शूराय नमः ।
ॐ दैत्यकुलान्तकाय नमः ।
ॐ सुवार्चलार्चिताय नमः ।
ॐ तेजसे नमः ।
ॐ रामचूडामणिप्रदायकाय नमः ।
ॐ कामरूपिणे नमः ।
ॐ पिन्गाळाक्षाय नमः ।
ॐ वार्धि मैनाक पूजिताय नमः ।
ॐ कबळीकृत मार्तान्ड मन्डलाय नमः ।
ॐ विजितेन्द्रियाय नमः ।
ॐ रामसुग्रीव सन्धात्रे नमः ।
ॐ महिरावण मर्धनाय नमः ।
ॐ स्फटिकाभाय नमः ।
ॐ वागधीशाय नमः ।
ॐ नवव्याकृतपण्डिताय नमः ।
ॐ चतुर्बाहवे नमः ।
ॐ दीनबन्धुराय नमः ।
ॐ मायात्मने नमः ।
ॐ भक्तवत्सलाय नमः ।
ॐ संजीवननगायार्था नमः ।
ॐ सुचये नमः ।
ॐ वाग्मिने नमः ।
ॐ दृढव्रताय नमः ।
ॐ कालनेमि प्रमथनाय नमः ।
ॐ हरिमर्कट मर्कटाय नमः ।
ॐ दान्ताय नमः ।
ॐ शान्ताय नमः ।
ॐ प्रसन्नात्मने नमः ।
ॐ शतकन्टमुदापहर्त्रे नमः ।
ॐ योगिने नमः ।
ॐ रामकथा लोलाय नमः ।
ॐ सीतान्वेशण पठिताय नमः ।
ॐ वज्रद्रनुष्टाय नमः ।
ॐ वज्रनखाय नमः ।
ॐ रुद्र वीर्य समुद्भवाय नमः ।
ॐ इन्द्रजित्प्रहितामोघब्रह्मास्त्र विनिवारकाय नमः ।
ॐ पार्थ ध्वजाग्रसंवासिने नमः ।
ॐ शरपंजरभेधकाय नमः ।
ॐ दशबाहवे नमः ।
ॐ लोकपूज्याय नमः ।
ॐ जाम्बवत्प्रीतिवर्धनाय नमः ।
ॐ सीतासमेत श्रीरामपाद सेवदुरन्धराय नमः।

॥ इति श्री आञ्जनेय अष्टोत्तरशत नामावलि संपूर्णम् ॥

मन्द्वात्मकं मारुतिस्तोत्रम्

नमो वायुपुत्राय भीमरूपाय धीमते।
नमस्ते रामदूताय कामरूपाय श्रीमते॥

मोह शोकविनाशाय सीताशोकविनाशिने।
भगनशोकवनायास्तु दग्धलङ्काय वाग्मिने॥

गतिनिर्जितवाताय लक्ष्मणप्राणदाय च।
वनौकसां वरिष्ठाय वशिने वनवासिने॥

तत्त्वज्ञानसुधासिन्धुनिमगनय महीयते।
आञ्जनेयाय शूराय सुग्रीवसचिवाय ते॥

जन्ममृत्युभयघनय सर्वकष्टहराय च।
नेदिष्ठाय प्रेतभूतपिशाचभयहारिणे॥

यातनानाशनायास्तु नमो मर्कटरूपिणे।
यक्षराक्षसशार्दूलसर्पवृश्चिकभीहृते॥

महाबलाय वीराय चिरंजीविन उद्धते।
हारिणे वज्रदेहाय चोल्लङ्घितमहाब्धये॥

बलिनामग्रगण्याय नमो नः पाहि मारुते।
लाभदोऽसि त्वमेवाशु हनुमन् राक्षसान्तक॥

यशो जयं च मे देहि शत्रून् नाशय नाशय।
स्वाश्रितानामभयदं य एवं स्तौति मारुतिम्।

हानिः कुतो भवेत्तस्य सर्वत्र विजयी भवेत्॥

इस स्तोत्रका प्रतिदिन पाठ करने से मृत्यु , यक्ष, राक्षस, सिंह, सर्प, बिच्छू भूत, प्रेत और पिशाच इत्यादि भयका नाश होकर उसकी समस्त पीड़ा का निराकरण होता हैं। उसे समस्त कार्यो मे विजय प्राप्त होती हैं

॥ श्री हनुमत् स्तवन ॥

प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन।
जासु ह्रदय आगार बसहिं राम सर चाप धर॥१॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं।
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्॥२॥

सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं।
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि॥३॥

गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम्।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम्॥४॥

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम्।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम्॥५॥

महाव्याकरणाम्भोधिमन्थमानसमन्दरम्।
कवयन्तं रामकीर्त्या हनुमन्तमुपास्महे॥६॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं
जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं
प्राञ्जलिराञ्जनेयम्॥७॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥८॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम्।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम्॥९॥

यत्र-यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र-तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।
बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्॥१०॥

॥ मारुतिस्तोत्रम् ॥

भीमरूपी महारुद्रा वज्र हनुमान मारुती ।
वनारी अन्जनीसूता रामदूता प्रभंजना ॥१॥
महाबळी प्राणदाता सकळां उठवी बळें ।
सौख्यकारी दुःखहारी (शोकहर्ता)(धूर्त)दूत वैष्णव गायका ॥२॥
दीननाथा हरीरूपा सुंदरा जगदंतरा ।
पातालदेवताहंता भव्यसिंदूरलेपना ॥३॥
लोकनाथा जगन्नाथा प्राणनाथा पुरातना ।
पुण्यवंता पुण्यशीला पावना परितोषका ॥४॥
ध्वजांगें उचली बाहो आवेशें लोटला पुढें ।
काळाग्नि काळरुद्राग्नि देखतां कांपती भयें ॥५॥
ब्रह्मांडें माइलीं नेणों आंवाळे दंतपंगती ।
नेत्राग्नी चालिल्या ज्वाळा भ्रुकुटी ताठिल्या बळें ॥६॥
पुच्छ तें मुरडिलें माथां किरीटी कुंडलें बरीं ।
सुवर्ण कटि कांसोटी घंटा किंकिणि नागरा ॥७॥
ठकारे पर्वता ऐसा नेटका सडपातळू ।
चपळांग पाहतां मोठें महाविद्युल्लतेपरी ॥८॥
कोटिच्या कोटि उड्डाणें झेंपावे उत्तरेकडे ।
मंदाद्रीसारखा द्रोणू क्रोधें उत्पाटिला बळें ॥९॥
आणिला मागुतीं नेला आला गेला मनोगती ।
मनासी टाकिलें मागें गतीसी तूळणा नसे ॥१०॥
अणूपासोनि ब्रह्मांडाएवढा होत जातसे ।
तयासी तुळणा कोठें मेरु- मांदार धाकुटे ॥११॥
ब्रह्मांडाभोंवते वेढे वज्रपुच्छें करूं शके ।
तयासी तुळणा कैंची ब्रह्मांडीं पाहतां नसे ॥१२॥
आरक्त देखिले डोळां ग्रासिलें सूर्यमंडळा ।
वाढतां वाढतां वाढे भेदिलें शून्यमंडळा ॥१३॥
धनधान्य पशुवृद्धि पुत्रपौत्र समग्रही (समस्तही)।
पावती रूपविद्यादि स्तोत्रपाठें करूनियां ॥१४॥
भूतप्रेतसमंधादि रोगव्याधि समस्तही ।
नासती तुटती चिंता आनंदे भीमदर्शनें ॥१५॥
हे धरा पंधराश्लोकी लाभली शोभली भली (बरी)
दृढदेहो निःसंदेहो संख्या चंद्रकला गुणें ॥१६॥
रामदासीं अग्रगण्यू कपिकुळासि मंडणू ।
रामरूपी अन्तरात्मा दर्शने दोष नासती ॥१७॥
॥इति श्री रामदासकृतं संकटनिरसनं नाम श्री मारुतिस्तोत्रम् संपूर्णम् ॥

॥श्रीहनुमन्नमस्कारः ॥

गोष्पदी- कृत- वारीशं मशकी- कृत- राक्षसम् ।
रामायण- महामाला- रत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥१॥

अञ्जना- नन्दनं- वीरं जानकी- शोक- नाशनम् ।
कपीशमक्ष- हन्तारं वन्दे लङ्का- भयङ्करम् ॥२॥

महा- व्याकरणाम्भोधि- मन्थ- मानस- मन्दरम् ।
कवयन्तं राम- कीर्त्या हनुमन्तमुपास्महे ॥३॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं
यः शोक- वह्निं जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां
नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥४॥

मनोजवं मारुत- तुल्य- वेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानर- यूथ- मुख्यं
श्रीराम- दूतं शिरसा नमामि ॥५॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं
काञ्चनाद्रि- कमनीय- विग्रहम् ।
पारिजात- तरु- मूल- वासिनं
भावयामि पवमान- नन्दनम् ॥६॥

यत्र यत्र रघुनाथ- कीर्तनं
तत्र तत्र कृत- मस्तकाञ्जलिम् ।
बाष्प- वारि- परिपूर्ण- लोचनं
मारुतिर्नमत राक्षसान्तकम् ॥७॥

श्री हनुमान सहस्त्रनमावलिः

१ ॐ हनुमते नमः।
२ ॐ श्रीप्रदाय नमः।
३ ॐ वायुपुत्राय नमः।
४ ॐ रुद्राय नमः।
५ ॐ अनघाय नमः।
६ ॐ अजराय नमः।
७ ॐ अमृत्यवे नमः।
८ ॐ वीरवीराय नमः।
९ ॐ ग्रामवासाय नमः।
१० ॐ जनाश्रयाय नमः।
११ ॐ धनदाय नमः।
१२ ॐ निर्गुणाय नमः।
१३ ॐ अकायाय नमः।
१४ ॐ वीराय नमः।
१५ ॐ निधिपतये नमः।
१६ ॐ मुनये नमः।
१७ ॐ पिङ्गक्षाय नमः।
१८ ॐ वरदाय नमः।
१९ ॐ वाग्मिने नमः।
२० ॐ सीताशोकविनाशनाय नमः।
२१ ॐ शिवाय नमः।
२२ ॐ सर्वस्मै नमः।
२३ ॐ परस्मै नमः।
२४ ॐ अव्यक्ताय नमः।
२५ ॐ व्यक्ताव्यक्ताय नमः।
२६ ॐ रसाधराय नमः।
२७ ॐ पिङ्गकेशाय नमः।
२८ ॐ पिङ्गरोम्णे नमः।
२९ ॐ श्रुतिगम्याय नमः।
३० ॐ सनातनाय नमः।
३१ ॐ अनादये नमः।
३२ ॐ भगवते नमः।
३३ ॐ देवाय नमः।
३४ ॐ विश्वहेतवे नमः।
३५ ॐ निरामयाय नमः।
३६ ॐ आरोग्यकर्त्रे नमः।
३७ ॐ विश्वेशाय नमः।
३८ ॐ विश्वनाथाय नमः।
३९ ॐ हरीश्वराय नमः।
४० ॐ भर्गाय नमः।
४१ ॐ रामाय नमः।
४२ ॐ रामभक्ताय नमः।
४३ ॐ कल्याणप्रकृतये नमः।
४४ ॐ स्थिराय नमः।
४५ ॐ विश्वम्भराय नमः।
४६ ॐ विश्वमूर्तये नमः।
४७ ॐ विश्वाकाराय नमः।
४८ ॐ विश्वपाय नमः।
४९ ॐ विश्वात्मने नमः।
५० ॐ विश्वसेव्याय नमः।
५१ ॐ विश्वस्मै नमः।
५२ ॐ विश्वहराय नमः।
५३ ॐ रवये नमः।
५४ ॐ विश्वचेष्टाय नमः।
५५ ॐ विश्वगम्याय नमः।
५६ ॐ विश्वध्येयाय नमः।
५७ ॐ कलाधराय नमः।
५८ ॐ प्लवङ्गमाय नमः।
५९ ॐ कपिश्रेष्ठाय नमः।
६० ॐ ज्येष्ठाय नमः।
६१ ॐ वैद्याय नमः।
६२ ॐ वनेचराय नमः।
६३ ॐ बालाय नमः।
६४ ॐ वृद्धाय नमः।
६५ ॐ यूने नमः।
६६ ॐ तत्त्वाय नमः।
६७ ॐ तत्त्वगम्याय नमः।
६८ ॐ सख्ये नमः।
६९ ॐ अजाय नमः।
७० ॐ अञ्जनासूनवे नमः।
७१ ॐ अव्यग्राय नमः।
७२ ॐ ग्रामख्याताय नमः।
७३ ॐ धराधराय नमः।
७४ ॐ भूर्लोकाय नमः।
७५ ॐ भुवर्लोकाय नमः।
७६ ॐ स्वर्लोकाय नमः।
७७ ॐ महर्लोकाय नमः।
७८ ॐ जनलोकाय नमः।
७९ ॐ तपोलोकाय नमः।
८० ॐ अव्ययाय नमः।
८१ ॐ सत्याय नमः।
८२ ॐ ओङ्कारगम्याय नमः।
८३ ॐ प्रणवाय नमः।
८४ ॐ व्यापकाय नमः।
८५ ॐ अमलाय नमः।
८६ ॐ शिवधर्मप्रतिष्ठात्रे नमः।
८७ ॐ रामेष्टाय नमः।
८८ ॐ फाल्गुनप्रियाय नमः।
८९ ॐ गोष्पदीकृतवारीशाय नमः।
९० ॐ पूर्णकामाय नमः।
९१ ॐ धरापतये नमः।
९२ ॐ रक्षोघ्नाय नमः।
९३ ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः।
९४ ॐ शरणागतवत्सलाय नमः।
९५ ॐ जानकीप्राणदात्रे नमः।
९६ ॐ रक्षःप्राणापहारकाय नमः।
९७ ॐ पूर्णाय नमः।
९८ ॐ सत्यायः नमः।
९९ ॐ पीतवाससे नमः।
१०० ॐ दिवाकरसमप्रभाय नमः।
१०१ ॐ देवोद्यानविहारिणे नमः।
१०२ ॐ देवताभयभञ्जनाय नमः।
१०३ ॐ भक्तोदयाय नमः।
१०४ ॐ भक्तलब्धाय नमः।
१०५ ॐ भक्तपालनतत्पराय नमः।
१०६ ॐ द्रोणहर्त्रे नमः।
१०७ ॐ शक्तिनेत्रे नमः।
१०८ ॐ शक्तिराक्षसमारकाय नमः।
१०९ ॐ अक्षघ्नाय नमः।
११० ॐ रामदूताय नमः।
१११ ॐ शाकिनीजीवहारकाय नमः।

११२ ॐ बुबुकारहतारातये नमः।
११३ ॐ गर्वपर्वतमर्दनाय नमः।
११४ ॐ हेतवे नमः।
११५ ॐ अहेतवे नमः।
११६ ॐ प्रांशवे नमः।
११७ ॐ विश्वभर्त्रे नमः।
११८ ॐ जगद्गुरवे नमः।
११९ ॐ जगन्नेत्रे नमः।
१२० ॐ जगन्नाथाय नमः।
१२१ ॐ जगदीशाय नमः।
१२२ ॐ जनेश्वराय नमः।
१२३ ॐ जगद्धिताय नमः।
१२४ ॐ हरये नमः।
१२५ ॐ श्रीशाय नमः।
१२६ ॐ गुरुडस्मयभञ्जनाय नमः।
१२७ ॐ पार्थध्वजाय नमः।
१२८ ॐ वायुपुत्राय नमः।
१२९ ॐ अमितपुच्छाय नमः।
१३० ॐ अमितविक्रमाय नमः।
१३१ ॐ ब्रह्मपुच्छाय नमः।
१३२ ॐ परब्रह्मपुच्छाय नमः।
१३३ ॐ रामेष्टकारकाय नमः।
१३४ ॐ सुग्रीवादियुताय नमः।
१३५ ॐ ज्ञानिने नमः।
१३६ ॐ वानराय नमः।
१३७ ॐ वानरेश्वराय नमः।
१३८ ॐ कल्पस्थायिने नमः।
१३९ ॐ चिरञ्जीविने नमः।
१४० ॐ तपनाय नमः।
१४१ ॐ सदाशिवाय नमः।
१४२ ॐ सन्नतये नमः।
१४३ ॐ सद्गतये नमः।
१४४ ॐ भुक्तिमुक्तिदाय नमः।
१४५ ॐ कीर्तिदायकाय नमः।
१४६ ॐ कीर्तये नमः।
१४७ ॐ कीर्तिप्रदाय नमः।
१४८ ॐ समुद्राय नमः।
१४९ ॐ श्रीप्रदाय नमः।
१५० ॐ शिवाय नमः।
१५१ ॐ भक्तोदयाय नमः।
१५२ ॐ भक्तगम्याय नमः।
१५३ ॐ भक्तभाग्यप्रदायकाय नमः।
१५४ ॐ उदधिक्रमणायनमः।
१५५ ॐ देवाय नमः।
१५६ ॐ संसारभयनाशनाय नमः।
१५७ ॐ वार्धिबन्धनकृते नमः।
१५८ ॐ विश्वजेत्रे नमः।
१५९ ॐ विश्वप्रतिष्ठिताय नमः।
१६० ॐ लङ्कारये नमः।
१६१ ॐ कालपुरुषाय नमः।
१६२ ॐ लङ्केशगृहभञ्जनाय नमः।
१६३ ॐ भूतावासाय नमः।
१६४ ॐ वासुदेवाय नमः।
१६५ ॐ वसवे नमः।
१६६ ॐ त्रिभुवनेश्वराय नमः।
१६७ ॐ श्रीरामरूपाय नमः।
१६८ ॐ कृष्णाय नमः।
१६९ ॐ लङ्काप्रासादभञ्जकाय नमः।
१७० ॐ कृष्णाय नमः।
१७१ ॐ कृष्णस्तुताय नमः।
१७२ ॐ शान्ताय नमः।
१७३ ॐ शान्तिदाय नमः।
१७४ ॐ विश्वपावनाय नमः।
१७५ ॐ विश्वभोक्त्रे नमः।
१७६ ॐ मारघ्नाय नमः।
१७७ ॐ ब्रह्मचारिणे नमः।
१७८ ॐ जितेन्द्रियाय नमः।
१७९ ॐ ऊर्ध्वगाय नमः।
१८० ॐ लाङ्गुलिने नमः।
१८१ ॐ मालिने नमः।
१८२ ॐ लाङ्गूलाहतराक्षसाय नमः।
१८३ ॐ समीरतनुजाय नमः।
१८४ ॐ वीराय नमः।
१८५ ॐ वीरताराय नमः।
१८६ ॐ जयप्रदाय नमः।
१८७ ॐ जगन्मङ्गलदाय नमः।
१८८ ॐ पुण्याय नमः।
१८९ ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः।
१९० ॐ पुण्यकीर्तये नमः।
१९१ ॐ पुण्यगतये नमः।
१९२ ॐ जगत्पावनपावनाय नमः।
१९३ ॐ देवेशाय नमः।
१९४ ॐ जितमाराय नमः।
१९५ ॐ रामभक्तिविधायकाय नमः।
१९६ ॐ ध्यात्रे नमः।
१९७ ॐ ध्येयाय नमः।
१९८ ॐ लयाय नमः।
१९९ ॐ साक्षिणे नमः।
२०० ॐ चेतसे नमः।
२०१ ॐ चैतन्यविग्रहाय नमः।
२०२ ॐ ज्ञानदाय नमः।
२०३ ॐ प्राणदाय नमः।
२०४ ॐ प्राणाय नमः।
२०५ ॐ जगत्प्राणाय नमः।
२०६ ॐ समीरणाय नमः।
२०७ ॐ विभीषणप्रियाय नमः।
२०८ ॐ शूराय नमः।
२०९ ॐ पिप्पलाश्रयसिद्धिदाय नमः।
२१० ॐ सिद्धाय नमः।
२११ ॐ सिद्धाश्रयाय नमः।
२१२ ॐ कालाय नमः।
२१३ ॐ महोक्षाय नमः।
२१४ ॐ कालजान्तकाय नमः।
२१५ ॐ लङ्केशनिधनाय नमः।
२१६ ॐ स्थायिने नमः।
२१७ ॐ लङ्कादाहकाय नमः।
२१८ ॐ ईश्वराय नमः।
२१९ ॐ चन्द्रसूर्याग्निनेत्राय नमः।
२२० ॐ कालाग्नये नमः।
२२१ ॐ प्रलयान्तकाय नमः।
२२२ ॐ कपिलाय नमः।
२२३ ॐ कपिशाय नमः।
२२४ ॐ पुण्यराशये नमः।
२२५ ॐ द्वादशराशिगाय नमः।
२२६ ॐ सर्वाश्रयाय नमः
२२७ ॐ अप्रमेयात्मने नमः।
२२८ ॐ रेवत्यादिनिवारकाय नमः।

२२९ ॐ लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः।
२३० ॐ सीताजीवनहेतुकाय नमः।
२३१ ॐ रामध्येयाय नमः।
२३२ ॐ हृषीकेशाय नमः।
२३३ ॐ विष्णुभक्ताय नमः।
२३४ ॐ जटिने नमः।
२३५ ॐ बलिने नमः।
२३६ ॐ देवारिदर्पघ्ने नमः।
२३७ ॐ होत्रे नमः।
२३८ ॐ धात्रे नमः।
२३९ ॐ कर्त्रे नमः।
२४० ॐ जगत्प्रभवे नमः।
२४१ ॐ नगरग्रामपालाय नमः।
२४२ ॐ शुद्धाय नमः।
२४३ ॐ बुद्धाय नमः।
२४४ ॐ निरत्रपाय नमः।
२४५ ॐ निरञ्जनाय नमः।
२४६ ॐ निर्विकल्पाय नमः।
२४७ ॐ गुणातीताय नमः।
२४८ ॐ भयंकराय नमः।
२४९ ॐ हनुमते नमः।
२५० ॐ दुराराध्याय नमः।
२५१ ॐ तपःसाध्याय नमः।
२५२ ॐ महेश्वराय नमः।
२५३ ॐ जानकीधनशोकोत्थतापहर्त्रे नमः।
२५४ ॐ परात्परस्मै नमः।
२५५ ॐ वाङ्मयाय नमः।
२५६ ॐ सदसद्रूपाय नमः।
२५७ ॐ कारणाय नमः।
२५८ ॐ प्रकृतेः परस्मै नमः।
२५९ ॐ भाग्यदाय नमः।
२६० ॐ निर्मलाय नमः।
२६१ ॐ नेत्रे नमः।
२६२ ॐ पुच्छङ्काविदाहकाय नमः।
२६३ ॐ पुच्छबद्धयातुधानाय नमः।
२६४ ॐ यातुधानरिपुप्रियाय नमः।
२६५ ॐ छायापहारिणे नमः।
२६६ ॐ भूतेशाय नमः।
२६७ ॐ लोकेशाय नमः।
२६८ ॐ सद्गतिप्रदाय नमः।
२६९ ॐ प्लवङ्गमेश्वराय नमः।
२७० ॐ क्रोधाय नमः।
२७१ ॐ क्रोधसंरक्तलोचनाय नमः।
२७२ ॐ सौम्याय नमः।
२७३ ॐ गुरवे नमः।
२७४ ॐ काव्यकर्त्रे नमः।
२७५ ॐ भक्तानां वरप्रदाय नमः।
२७६ ॐ भक्तानुकम्पिने नमः।
२७७ ॐ विश्वेशाय नमः।
२७८ ॐ पुरुहूताय नमः।
२७९ ॐ पुरंदराय नमः।
२८० ॐ क्रोधहर्त्रे नमः।
२८१ ॐ तमोहर्त्रे नमः।
२८२ ॐ भक्तभयवरप्रदाय नमः।
२८३ ॐ अग्नये नमः।
२८४ ॐ विभावसवे नमः।
२८५ ॐ भास्वते नमः।
२८६ ॐ यमाय नमः।
२८७ ॐ निर्ऋतये नमः।
२८८ ॐ वरुणाय नमः।
२८९ ॐ वायुगतिमते नमः।
२९० ॐ वायवे नमः।
२९१ ॐ कौबेराय नमः।
२९२ ॐ ईश्वराय नमः।
२९३ ॐ रवये नमः।
२९४ ॐ चन्द्राय नमः।
२९५ ॐ कुजाय नमः।
२९६ ॐ सौम्याय नमः।
२९७ ॐ गुरवे नमः।
२९८ ॐ काव्याय नमः।
२९९ ॐ शनैश्वराय नमः।
३०० ॐ राहवे नमः।
३०१ ॐ केतवे नमः।
३०२ ॐ मरुते नमः।
३०३ ॐ होत्रे नमः।
३०४ ॐ दात्रे नमः।
३०५ ॐ हर्त्रे नमः।
३०६ ॐ समीरजाय नमः।
३०७ ॐ मशकीकृतदेवारये नमः।
३०८ ॐ दैत्यारये नमः।
३०९ ॐ मधुसूदनाय नमः।
३१० ॐ कामाय नमः।
३११ ॐ कपये नमः।
३१२ ॐ कामपालाय नमः।
३१३ ॐ कपिलाय नमः।
३१४ ॐ विश्वजीवनाय नमः।
३१५ ॐ भागीरथीपदाम्भोजाय नमः।
३१६ ॐ सेतुबन्धविशारदाय नमः।
३१७ ॐ स्वाहायै नमः।
३१८ ॐ स्वधायै नमः।
३१९ ॐ हविषे नमः।
३२० ॐ कव्याय नमः।
३२१ ॐ हव्यवाहप्रकाशकाय नमः।
३२२ ॐ स्वप्रकाशाय नमः।
३२३ ॐ महावीराय नमः।
३२४ ॐ लघवे नमः।
३२५ ॐ ऊर्जितविक्रमाय नमः।
३२६ ॐ उड्डीनोड्डीनगतिमते नमः।
३२७ ॐ सद्गतये नमः।
३२८ ॐ पुरुषोत्तमाय नमः।
३२९ ॐ जगदात्मने नमः।
३३० ॐ जगद्योनये नमः।
३३१ ॐ जगदन्ताय नमः।
३३२ ॐ अनन्तकाय नमः।
३३३ ॐ विपाप्मने नमः।
३३४ ॐ निष्कलङ्काय नमः।
३३५ ॐ महते नमः।
३३६ ॐ महदहंकृतये नमः।
३३७ ॐ खाय नमः।
३३८ ॐ वायवे नमः।
३३९ ॐ पृथिव्यै नमः।
३४० ॐ अद्भ्यो नमः।
३४१ ॐ वह्नये नमः।
३४२ ॐ दिक्पालाय नमः।
३४३ ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः।
३४४ ॐ क्षेत्रहर्त्रे नमः।

३४५ ॐ पल्वलीकृतसागराय नमः।
३४६ ॐ हिरण्यमयाय नमः।
३४७ ॐ पुराणाय नमः।
३४८ ॐ खेचराय नमः।
३४९ ॐ भूचराय नमः।
३५० ॐ अमराय नमः।
३५१ ॐ हिरण्यगर्भाय नमः।
३५२ ॐ सूत्रात्मने नमः।
३५३ ॐ राजराजाय नमः।
३५४ ॐ विशांपतये नमः।
३५५ ॐ वेदान्तवेद्याय नमः।
३५६ ॐ उद्गीथाय नमः।
३५७ ॐ वेदवेदाङ्गपारगाय नमः।
३५८ ॐ प्रतिग्रामस्थितये नमः।
३५९ ॐ सद्यः स्फूर्तिदात्रे नमः।
३६० ॐ गुणाकराय नमः।
३६१ ॐ नक्षत्रमालिने नमः।
३६२ ॐ भूतात्मने नमः।
३६३ ॐ सुरभये नमः।
३६४ ॐ कल्पपादपाय नमः।
३६५ ॐ चिन्तामणये नमः।
३६६ ॐ गुणनिधये नमः।
३६७ ॐ प्रजाधाराय नमः।
३६८ ॐ अनुतमाय नमः।
३६९ ॐ पुण्यश्लोकाय नमः।
३७० ॐ पुरारातये नमः।
३७१ ॐ ज्योतिष्मते नमः।
३७२ ॐ शर्वरीपतये नमः।
३७३ ॐ किलकिलारावसंत्रस्तभूतप्रेत-पिशाचकाय नमः।
३७४ ॐ ऋणत्रयहराय नमः।
३७५ ॐ सूक्ष्माय नमः।
३७६ ॐ स्थूलाय नमः।
३७७ ॐ सर्वगतये नमः।
३७८ ॐ पुंसे नमः।
३७९ ॐ अपस्मारहराय नमः।
३८० ॐ स्मर्त्रे नमः।
३८१ ॐ श्रुतये नमः।
३८२ ॐ गाथायै नमः।
३८३ ॐ स्मृतये नमः।
३८४ ॐ मनवे नमः।
३८५ ॐ स्वर्गद्वाराय नमः।
३८६ ॐ प्रजाद्वाराय नमः।
३८७ ॐ मोक्षद्वाराय नमः।
३८८ ॐ यतीश्वराय नमः।
३८९ ॐ नादरूपाय नमः।
३९० ॐ परस्मै ब्रह्मणे नमः।
३९१ ॐ ब्रह्मणे नमः।
३९२ ॐ ब्रह्मपुरातनाय नमः।
३९३ ॐ एकस्मै नमः।
३९४ ॐ अनेकस्मै नमः।
३९५ ॐ जनाय नमः।
३९६ ॐ शुक्लाय नमः।
३९७ ॐ स्वयंज्योतिषे नमः।
३९८ ॐ अनाकुलाय नमः।
३९९ ॐ ज्योतिर्ज्योतिषे नमः।
४०० ॐ अनादये नमः।
४०१ ॐ सात्त्विकाय नमः।
४०२ ॐ राजसाय नमः।
४०३ ॐ तमाय नमः।
४०४ ॐ तमोहर्त्रे नमः।
४०५ ॐ निरालम्बाय नमः।
४०६ ॐ निराकाराय नमः।
४०७ ॐ गुणाकराय नमः।
४०८ ॐ गुणाश्रयाय नमः।
४०९ ॐ गुणमयाय नमः।
४१० ॐ बृहत्कर्मणे नमः।
४११ ॐ बृहद्यशसे नमः।
४१२ ॐ बृहद्धनवे नमः।
४१३ ॐ बृहत्पादाय नमः।
४१४ ॐ बृहन्मूर्ध्ने नमः।
४१५ ॐ बृहत्स्वनाय नमः।
४१६ ॐ बृहत्कर्णाय नमः।
४१७ ॐ बृहन्नासाय नमः।
४१८ ॐ बृहद्बाहवे नमः।
४१९ ॐ बृहत्तनवे नमः।
४२० ॐ बृहज्जानवे नमः।
४२१ ॐ बृहत्कार्याय नमः।
४२२ ॐ बृहत्पुच्छाय नमः।
४२३ ॐ बृहत्कराय नमः।
४२४ ॐ बृहद्गतये नमः।
४२५ ॐ बृहत्सेव्याय नमः।
४२६ ॐ बृहल्लोकफलप्रदाय नमः।
४२७ ॐ बृहच्छक्तये नमः।
४२८ ॐ बृहद्वाञ्छाफलदाय नमः।
४२९ ॐ बृहदीश्वराय नमः।
४३० ॐ बृहल्लोकनुताय नमः।
४३१ ॐ द्रष्ट्रे नमः।
४३२ ॐ विद्यादात्रे नमः।
४३३ ॐ जगद्गुरवे नमः।
४३४ ॐ देवाचार्याय नमः।
४३५ ॐ सत्यवादिने नमः।
४३६ ॐ ब्रह्मवादिने नमः।
४३७ ॐ कलाधराय नमः।
४३८ ॐ सप्तपातालगामिने नमः।
४३९ ॐ मलयाचलसंश्रयाय नमः।
४४० ॐ उत्तराशास्थिताय नमः।
४४१ ॐ श्रीदाय नमः।
४४२ ॐ दिव्यौषधिवशाय नमः।
४४३ ॐ खगाय नमः।
४४४ ॐ शाखामृगाय नमः।
४४५ ॐ कपीन्द्राय नमः।
४४६ ॐ पुराणश्रुतिचञ्चुराय नमः।
४४७ ॐ चतुरब्राह्मणाय नमः।
४४८ ॐ योगिने नमः।
४४९ ॐ योगगम्याय नमः।
४५० ॐ परस्मै नमः।
४५१ ॐ अवरस्मै नमः।
४५२ ॐ अनादिनिधनाय नमः।
४५३ ॐ व्यासाय नमः।
४५४ ॐ वैकुण्ठाय नमः।
४५५ ॐ पृथिवीपतये नमः।
४५६ ॐ अपराजिताय नमः।
४५७ ॐ जितारातये नमः।
४५८ ॐ सदानन्दाय नमः।
४५९ ॐ दयायुताय नमः।
४६० ॐ गोपालाय नमः।

४६१ ॐ गोपतये नमः।
४६२ ॐ गोप्त्रे नमः।
४६३ ॐ कलिकालपराशराय नमः।
४६४ ॐ मनोवेगिने नमः।
४६५ ॐ सदायोगिने नमः।
४६६ ॐ संसारभयनाशनाय नमः।
४६७ ॐ तत्वदात्रे नमः।
४६८ ॐ तत्त्वज्ञाय नमः।
४६९ ॐ तत्त्वाय नमः।
४७० ॐ तत्त्वप्रकाशकाय नमः।
४७१ ॐ शुद्धाय नमः।
४७२ ॐ बुद्धाय नमः।
४७३ ॐ नित्यमुक्ताय नमः।
४७४ ॐ भक्तराजाय नमः।
४७५ ॐ जयद्रथाय नमः।
४७६ ॐ प्रलयाय नमः।
४७७ ॐ अमितमायाय नमः।
४७८ ॐ मायातीताय नमः।
४७९ ॐ विमत्सराय नमः।
४८० ॐ मायाभर्जितरक्षमे नमः।
४८१ ॐ मायानिर्मितविष्टपाय नमः।
४८२ ॐ मायाश्रयाय नमः।
४८३ ॐ निर्लेपाय नमः।
४८४ ॐ मायानिर्वर्तकाय नमः।
४८५ ॐ सुखाय नमः।
४८६ ॐ सुखिगे नमः।
४८७ ॐ सुखप्रदाय नमः।
४८८ ॐ नागाय नमः।
४८९ ॐ महेशकृतसंस्तवाय नमः।
४९० ॐ महेश्वराय नमः।
४९१ ॐ सत्यसंधाय नमः।
४९२ ॐ शरभाय नमः।
४९३ ॐ कलिपावनाय नमः।
४९४ ॐ सहस्त्रकन्धर बलविध्वंसन-
विचक्षणाय नमः।
ॐ सहस्त्रबाहवे नमः।
४९६ ॐ सहजाय नमः।
४९७ ॐ द्विबाहवे नमः।
४९८ ॐ द्विभुजाय नमः।
४९९ ॐ अमराय नमः।
५०० ॐ चतुर्भुजाय नमः।
५०१ ॐ दशभुजाय नमः।
५०२ ॐ हयग्रीवाय नमः।
५०३ ॐ खगाननाय नमः।
५०४ ॐ कपिवक्त्राय नमः।
५०५ ॐ कपिपतये नमः।
५०६ ॐ नरसिंहाय नमः।
५०७ ॐ महाद्युतये नमः।
५०८ ॐ भीषणाय नमः।
५०९ ॐ भावगाय नमः।
५१० ॐ वन्द्याय नमः।
५११ ॐ वराहाय नमः।
५१२ ॐ वायुरूपधृषे नमः।
५१३ ॐ लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः।
५१४ ॐ पराजितदशाननाय नमः।
५१५ ॐ पारिजातनिवासिने नमः।
५१६ ॐ वटवे नमः।
५१७ ॐ वचनकोविदाय नमः।
५१८ ॐ सुरसास्यविनिर्मुक्ताय नमः।
५१९ ॐ सिंहिकारप्राणहारकाय नमः।
५२० ॐ लङ्कालङ्कारविध्वंसिने नमः।
५२१ ॐ वृषदंशकरूपधृषे नमः।
५२२ ॐ रात्रिसंचारकुशलाय नमः।
५२३ ॐ रात्रिंचरगृहग्निदाय नमः।
५२४ ॐ किङ्करान्तकराय नमः।
५२५ ॐ जम्बुमालिहन्त्रे नमः।
५२६ ॐ उग्ररूपधृषे नमः।
५२७ ॐ आकाशचारिणे नमः।
५२८ ॐ हरिगाय नमः।
५२९ ॐ मेघनादरणोत्सुकाय नमः।
५३० ॐ मेघगम्भीरनिनदाय नमः।
५३१ ॐ महारावणकुलान्तकाय नमः।
५३२ ॐ कालनेमिप्राणहारिणे नमः।
५३३ ॐ मकरीशापमोक्षदाय नमः।
५३४ ॐ रसाय नमः।
५३५ ॐ रसज्ञाय नमः।
५३६ ॐ सम्मानाय नमः।
५३७ ॐ रूपाय नमः।
५३८ ॐ चक्षुषे नमः।
५३९ ॐ श्रुतये नमः।
५४० ॐ वचसे नमः।
५४१ ॐ घ्राणाय नमः।
५४२ ॐ गन्धाय नमः।
५४३ ॐ स्पर्शनाय नमः।
५४४ ॐ स्पर्शाय नमः।
५४५ ॐ अहंकारमानगाय नमः।
५४६ ॐ नेतिनेतीतिगम्याय नमः।
५४७ ॐ वैकुण्ठभजनप्रियाय नमः।
५४८ ॐ गिरीशाय नमः।
५४९ ॐ गिरिजाकान्ताय नमः।
५५० ॐ दुर्वाससे नमः।
५५१ ॐ कवये नमः।
५५२ ॐ अङ्गिरसे नमः।
५५३ ॐ भृगवे नमः।
५५४ ॐ वसिष्ठाय नमः।
५५५ ॐ च्यवनाय नमः।
५५६ ॐ नारदाय नमः।
५५७ ॐ तुम्बराय नमः।
५५८ ॐ अमलाय नमः।
५५९ ॐ विश्वक्षेत्राय नमः।
५६० ॐ विश्वबीजाय नमः।
५६१ ॐ विश्वनेत्राय नमः।
५६२ ॐ विश्वपाय नमः।
५६३ ॐ याजकाय नमः।
५६४ ॐ यजमानाय नमः।
५६५ ॐ पावकाय नमः।
५६६ ॐ पितृभ्यो नमः।
५६७ ॐ श्रद्धायै नमः।
५६८ ॐ बुद्धयै नमः।
५६९ ॐ क्षमायै नमः।
५७० ॐ तन्द्रायै नमः।
५७१ ॐ मन्त्राय नमः।
५७२ ॐ मन्त्रयित्रे नमः।
५७३ ॐ स्वराय नमः।
५७४ ॐ राजेन्द्राय नमः।
५७५ ॐ भूपतये नमः।
५७६ ॐ रुण्डमालिने नमः।

५७७ ॐ संसारसारथये नमः।
५७८ ॐ नित्यसम्पूर्णकामाय नमः।
५७९ ॐ भक्तकामदुहे नमः।
५८० ॐ उत्तमाय नमः।
५८१ ॐ गणपाय नमः।
५८२ ॐ केशवाय नमः।
५८३ ॐ भ्रात्रे नमः।
५८४ ॐ पित्रे नमः।
५८५ ॐ मात्रे नमः।
५८६ ॐ मारुतये नमः।
५८७ ॐ सहस्त्रमूर्ध्ने नमः।
५८८ ॐ अनेकास्याय नमः।
५८९ ॐ सहस्त्राक्षाय नमः।
५९० ॐ सहस्त्रपादे नमः।
५९१ ॐ कामजिते नमः।
५९२ ॐ कामदहनाय नमः।
५९३ ॐ कामाय नमः।
५९४ ॐ कामफलप्रदाय नमः।
५९५ ॐ मुद्रापहरिणे नमः।
५९६ ॐ रक्षोघ्नाय नमः।
५९७ ॐ क्षितिभारहराय नमः।
५९८ ॐ बलाय नमः।
५९९ ॐ नखदंष्ट्रायुधाय नमः।
६०० ॐ विष्णवे नमः।
६०१ ॐ भक्ताभयवरप्रदाय नमः।
६०२ ॐ दर्पघ्ने नमः।
६०३ ॐ दर्पदाय नमः।
६०४ ॐ दंष्ट्राशतमूर्तये नमः।
६०५ ॐ अमूर्तिमते नमः।
६०६ ॐ महानिधये नमः।
६०७ ॐ महाभागाय नमः।
६०८ ॐ महाभर्गाय नमः।
६०९ ॐ महर्द्धिदाय नमः।
६१० ॐ महाकाराय नमः।
६११ ॐ महायोगिने नमः।
६१२ ॐ महातेजसे नमः।
६१३ ॐ महाद्युतये नमः।
६१४ ॐ महासनाय नमः।
६१५ ॐ महानादाय नमः।
६१६ ॐ महामन्त्राय नमः।
६१७ ॐ महामतये नमः।
६१८ ॐ महागमाय नमः।
६१९ ॐ महोदाराय नमः।
६२० ॐ महादेवात्मकाय नमः।
६२१ ॐ विभवे नमः।
६२२ ॐ रौद्रकर्मणे नमः।
६२३ ॐ क्रूरकर्मणे नमः।
६२४ ॐ रत्ननाभाय नमः।
६२५ ॐ कृतागमाय नमः।
६२६ ॐ अम्भोधिलङ्घनाय नमः।
६२७ ॐ सिंहाय नमः।
६२८ ॐ सत्यधर्मप्रमोदनाय नमः।
६२९ ॐ जितामित्राय नमः।
६३० ॐ जयाय नमः।
६३१ ॐ सोमाय नमः।
६३२ ॐ विजयाय नमः।
६३३ ॐ वायुन्दनाय नमः।
६३४ ॐ जीवदात्रे नमः।
६३५ ॐ सहस्त्रांशवे नमः।
६३६ ॐ मुकुन्दाय नमः।
६३७ ॐ भूरिदक्षिणाय नमः।
६३८ ॐ सिद्धार्थाय नमः।
६३९ ॐ सिद्धिदाय नमः।
६४० ॐ सिद्धसङ्कल्पाय नमः।
६४१ ॐ सिद्धिहेतुकाय नमः।
६४२ ॐ सप्तपातालचरणाय नमः।
६४३ ॐ सप्तर्षिगणवन्दिताय नमः।
६४४ ॐ सप्ताब्धिलङ्घनाय नमः।
६४५ ॐ वीराय नमः।
६४६ ॐ सप्तद्वीपोरुमण्डलाय नमः।
६४७ ॐ सप्ताङ्गराज्यसुखदाय नमः।
६४८ ॐ सप्तमातृनिषेविताय नमः।
६४९ ॐ सप्तस्वर्लोकमुकुटाय नमः।
६५० ॐ सप्तहोत्रे नमः।
६५१ ॐ स्वराश्रयाय नमः।
६५२ ॐ सप्तच्छन्दोनिधये नमः।
६५३ ॐ सप्तच्छन्दसे नमः।
६५४ ॐ सप्तजनाश्रयाय नमः।
६५५ ॐ सप्तसामोपगीताय नमः।
६५६ ॐ सप्तपातालसंश्रयाय नमः।
६५७ ॐ मेधादाय नमः।
६५८ ॐ कीर्तिदाय नमः।
६५९ ॐ शोकहारिणे नमः।
६६० ॐ दौर्भाग्यनाशनाय नमः।
६६१ ॐ सर्वरक्षाकराय नमः।
६६२ ॐ गर्भदोषघ्ने नमः।
६६३ ॐ पुत्रपौत्रदाय नमः।
६६४ ॐ प्रतिवादिमुखस्तम्भाय नमः।
६६५ ॐ रुष्टचित्तप्रसादनाय नमः।
६६६ ॐ पराभिचारशमनाय नमः।
६६७ ॐ दुःखघ्ने नमः।
६६८ ॐ बन्धमोक्षदाय नमः।
६६९ ॐ नवद्वारपुराधाराय नमः।
६७० ॐ नवद्वारनिकेतनाय नमः।
६७१ ॐ नरनारायणस्तुत्याय नमः।
६७२ ॐ नवनाथमहेश्वराय नमः।
६७३ ॐ मेखलिने नमः।
६७४ ॐ कवचिने नमः।
६७५ ॐ खड्गिने नमः।
६७६ ॐ भ्राजिष्णवे नमः।
६७७ ॐ जिष्णुसारथये नमः।
६७८ ॐ बहुयोजनविस्तीर्णपुच्छाय नमः।
६७९ ॐ पुच्छहतासुराय नमः।
६८० ॐ दुष्टग्रहनिहन्त्रे नमः।
६८१ ॐ पिशाचग्रहघातकाय नमः।
६८२ ॐ बालग्रहविनाशिने नमः।
६८३ ॐ धर्मनेत्रे नमः।
६८४ ॐ कृपाकराय नमः।
६८५ ॐ उग्रकृत्याय नमः।
६८६ ॐ उग्रवेगाय नमः।
६८७ ॐ उग्रनेत्राय नमः।
६८८ ॐ शतक्रतवे नमः।
६८९ ॐ शतमन्युनुताय नमः।
६९० ॐ स्तुत्याय नमः।
६९१ ॐ स्तुतये नमः।
६९२ ॐ स्तोत्रे नमः।
६९३ ॐ महाबलाय नमः।

६९४ ॐ समग्रगुणाशालिने नमः।
६९५ ॐ व्यग्राय नमः।
६९६ ॐ रक्षोविनाशकाय नमः।
६९७ ॐ रक्षोऽग्निदाहाय नमः।
६९८ ॐ ब्रह्मेशाय नमः।
६९९ ॐ श्रीधराय नमः।
७०० ॐ भक्तवत्सलाय नमः।
७०१ ॐ मेघनादाय नमः।
७०२ ॐ मेघरूपाय नमः।
७०३ ॐ मेघवृष्टिनिवारकाय नमः।
७०४ ॐ मेघजीवनहेतवे नमः।
७०५ ॐ मेघश्यामाय नमः।
७०६ ॐ परात्मकाय नमः।
७०७ ॐ समीरतनयाय नमः।
७०८ ॐ योद्ध्रे नमः।
७०९ ॐ नृत्यविद्याविशारदाय नमः।
७१० ॐ अमोघाय नमः।
७११ ॐ अमोघदृष्टये नमः।
७१२ ॐ इष्टदाय नमः।
७१३ ॐ अरिष्टनाशनाय नमः।
७१४ ॐ अर्थाय नमः।
७१५ ॐ अनर्थापहारिणे नमः।
७१६ ॐ समर्थाय नमः।
७१७ ॐ रामसेवकाय नमः।
७१८ ॐ अर्थिवन्द्याय नमः।
७१९ ॐ असुरारातये नमः।
७२० ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः।
७२१ ॐ आत्मभुवे नमः।
७२२ ॐ संकर्षणाय नमः।
७२३ ॐ विशुद्धात्मने नमः।
७२४ ॐ विद्याराशये नमः।
७२५ ॐ सुरेश्वराय नमः।
७२६ ॐ अचलोद्धारकाय नमः।
७२७ ॐ नित्याय नमः।
७२८ ॐ सेतुकृते नमः।
७२९ ॐ रामसारथये नमः।
७३० ॐ आनन्दाय नमः।
७३१ ॐ परमानन्दाय नमः।
७३२ ॐ मत्स्याय नमः।
७३३ ॐ कूर्माय नमः।
७३४ ॐ निराश्रयाय नमः।
७३५ ॐ वाराहाय नमः।
७३६ ॐ नारसिंहाय नमः।
७३७ ॐ वामनाय नमः।
७३८ ॐ जमदग्निजाय नमः।
७३९ ॐ रामाय नमः।
७४० ॐ कृष्णाय नमः।
७४१ ॐ शिवाय नमः।
७४२ ॐ बुद्धाय नमः।
७४३ ॐ कल्किने नमः।
७४४ ॐ रामाश्रयाय नमः।
७४५ ॐ हरये नमः।
७४६ ॐ नन्दिने नमः।
७४७ ॐ भृङ्गिणे नमः।
७४८ ॐ चण्डिने नमः।
७४९ ॐ गणेशाय नमः।
७५० ॐ गणसेविताय नमः।
७५१ ॐ कर्माध्यक्षाय नमः।
७५२ ॐ सुराध्यक्षाय नमः।
७५३ ॐ विश्रामाय नमः।
७५४ ॐ जगतीपतये नमः।
७५५ ॐ जगन्नाथाय नमः।
७५६ ॐ कपीशाय नमः।
७५७ ॐ सर्वावासाय नमः।
७५८ ॐ सदाश्रयाय नमः।
७५९ ॐ सुग्रीवादिस्तुताय नमः।
७६० ॐ दान्ताय नमः।
७६१ ॐ सर्वकर्मणे नमः।
७६२ ॐ प्लवङ्गमाय नमः।
७६३ ॐ नखदारितरक्षसे नमः।
७६४ ॐ नखयुद्धविशारदाय नमः।
७६५ ॐ कुशलाय नमः।
७६६ ॐ सुधनाय नमः।
७६७ ॐ शेषाय नमः।
७६८ ॐ वासुकये नमः।
७६९ ॐ तक्षकाय नमः।
७७० ॐ स्वर्णवर्णाय नमः।
७७१ ॐ बलाढ्याय नमः।
७७२ ॐ पुरुजेत्रे नमः।
७७३ ॐ अघनाशनाय नमः।
७७४ ॐ कैवल्यरूपाय नमः।
७७५ ॐ कैवल्याय नमः।
७७६ ॐ गरुडाय नमः।
७७७ ॐ पन्नगोरगाय नमः।
७७८ ॐ किल्किल्रावहतारातये नमः।
७७९ ॐ गर्वपर्वतभेदनाय नमः।
७८० ॐ वज्राङ्गाय नमः।
७८१ ॐ वज्रदंष्ट्राय नमः।
७८२ ॐ भक्तवज्रनिवारकाय नमः।
७८३ ॐ नखायुधाय नमः।
७८४ ॐ मणिग्रीवाय नमः।
७८५ ॐ ज्वालामालिने नमः।
७८६ ॐ भास्कराय नमः।
७८७ ॐ प्रौढप्रतापाय नमः।
७८८ ॐ तपनाय नमः।
७८९ ॐ भक्तापनिवारकाय नमः।
७९० ॐ शरणाय नमः।
७९१ ॐ जीवनाय नमः।
७९२ ॐ भोक्त्रे नमः।
७९३ ॐ नानाचेष्टाय नमः।
७९४ ॐ अचञ्चलाय नमः।
७९५ ॐ स्वस्तिमते नमः।
४९६ ॐ स्वस्तिदाय नमः।
७९७ ॐ दुःखशातनाय नमः।
७९८ ॐ पवनात्मजाय नमः।
७९९ ॐ पावनाय नमः।
८०० ॐ पवनाय नमः।
८०१ ॐ कान्ताय नमः।
८०२ ॐ भक्तागःसहनाय नमः।
८०३ ॐ बलिने नमः।
८०४ ॐ मेघनादरिपवे नमः।
८०५ ॐ मेघनादसंहतराक्षसाय नमः।
८०६ ॐ क्षराय नमः।
८०७ ॐ अक्षराय नमः।
८०८ ॐ विनीतात्मने नमः।
८०९ ॐ वानरेशाय नमः।
८१० ॐ सतां गतये नमः।

८११ ॐ श्रीकण्ठाय नमः।
८१२ ॐ शितिकण्ठाय नमः।
८१३ ॐ सहायाय नमः।
८१४ ॐ सहनायकाय नमः।
८१५ ॐ अस्थूलाय नमः।
८१६ ॐ अनणवे नमः।
८१७ ॐ भर्गाय नमः।
८१८ ॐ दिव्याय नमः।
८१९ ॐ संसृतिनाशनाय नमः।
८२० ॐ अध्यात्मविद्यासाराय नमः।
८२१ ॐ अध्यात्मकुशलाय नमः।
८२२ ॐ सुधिये नमः।
८२३ ॐ अकल्मषाय नमः।
८२४ ॐ सत्यहेतवे नमः।
८२५ ॐ सत्यदाय नमः।
८२६ ॐ सत्यगोचराय नमः।
८२७ ॐ सत्यगर्भाय नमः।
८२८ ॐ सत्यरूपाय नमः।
८२९ ॐ सत्याय नमः।
८३० ॐ सत्यपराक्रमाय नमः।
८३१ ॐ अञ्जनाप्राणलिङ्गाय नमः।
८३२ ॐ वायुवंशोद्भवाय नमः।
८३३ ॐ शुभाय नमः।
८३४ ॐ भद्ररूपाय नमः।
८३५ ॐ रुद्ररूपाय नमः।
८३६ ॐ सुरूपाय नमः।
८३७ ॐ चित्ररूपधृषे नमः।
८३८ ॐ मैनाकवन्दिताय नमः।
८३९ ॐ सूक्ष्मदर्शनाय नमः।
८४० ॐ विजयाय नमः।
८४१ ॐ जयाय नमः।
८४२ ॐ क्रान्तदिङ्मण्डलाय नमः।
८४३ ॐ रुद्राय नमः।
८४४ ॐ प्रकटीकृतविक्रमाय नमः।
८४५ ॐ कम्बुकण्ठाय नमः।
८४६ ॐ प्रसन्नात्मने नमः।
८४७ ॐ ह्रस्वनासाय नमः।
८४८ ॐ वृकोदराय नमः।
८४९ ॐ लम्बौष्ठाय नमः।
८५० ॐ कुण्डलिने नमः।
८५१ ॐ चित्रमालिने नमः।
८५२ ॐ योगविदां वराय नमः।
८५३ ॐ विपश्चिते नमः।
८५४ ॐ कवये नमः।
८५५ ॐ आनन्दविग्रहाय नमः।
८५६ ॐ अनल्पशासनाय नमः।
८५७ ॐ फाल्गुनीसूनवे नमः।
८५८ ॐ अव्यग्राय नमः।
८५९ ॐ योगात्मने नमः।
८६० ॐ योगतत्पराय नमः।
८६१ ॐ योगविदे नमः।
८६२ ॐ योगकर्त्रे नमः।
८६३ ॐ योगयोनये नमः।
८६४ ॐ दिगम्बराय नमः।
८६५ ॐ अकरादिहकारान्तवर्णनिर्मित-विग्रहाय नमः।
८६६ ॐ उलूखलमुखाय नमः।
८६७ ॐ सिद्धसंस्तुताय नमः।
८६८ ॐ प्रमथेश्वराय नमः।
८६९ ॐ श्लिष्टजङ्घाय नमः।
८७० ॐ श्लिष्टजानवे नमः।
८७१ ॐ श्लिष्टपाणये नमः।
८७२ ॐ शिखाधराय नमः।
८७३ ॐ सुशर्मणे नमः।
८७४ ॐ अमितशर्मणे नमः।
८७५ ॐ नारायणपरायणाय नमः।
८७६ ॐ जिष्णवे नमः।
८७७ ॐ भविष्णवे नमः।
८७८ ॐ रोचिष्णवे नमः।
८७९ ॐ ग्रसिष्णवे नमः।
८८० ॐ स्थाणवे नमः।
८८१ ॐ हरिरुद्रानुसेकाय नमः।
८८२ ॐ कम्पनाय नमः।
८८३ ॐ भूमिकम्पनाय नमः।
८८४ ॐ गुणप्रवाहाय नमः।
८८५ ॐ सूत्रात्मने नमः।
८८६ ॐ वीतरागस्तुतिप्रियाय नमः।
८८७ ॐ नागकन्याभयध्वंसिने नमः।
८८८ ॐ रुक्मवर्णाय नमः।
८८९ ॐ कपालभृते नमः।
८९० ॐ अनाकुलाय नमः।
८९१ ॐ भवोपायाय नमः।
८९२ ॐ अनपायाय नमः।
८९३ ॐ वेदपारगाय नमः।
८९४ ॐ अक्षराय नमः।
८९५ ॐ पुरुषाय नमः।
८९६ ॐ लोकनाथाय नमः।
८९७ ॐ ऋक्षप्रभवे नमः।
८९८ ॐ दृढाय नमः।
८९९ ॐ अष्टाङ्गयोगफलभुजे नमः।
९०० ॐ सत्यसंधाय नमः।
९०१ ॐ पुरुष्टुताय नमः।
९०२ ॐ श्मशानस्थाननिलयाय नमः।
९०३ ॐ प्रेतविद्रावणक्षमाय नमः।
९०४ ॐ पञ्चाक्षरपराय नमः।
९०५ ॐ पञ्चमातृकाय नमः।
९०६ ॐ रञ्चनध्वजाय नमः।
९०७ ॐ योगिनीवृन्दवन्द्यश्रियै नमः।
९०८ ॐ शत्रुघ्नाय नमः।
९०९ ॐ अनन्तविक्रमाय नमः।
९१० ॐ ब्रह्मचारिणे नमः।
९११ ॐ इन्द्रियरिपवे नमः।
९१२ ॐ धृतदण्डाय नमः।
९१३ ॐ दशात्मकाय नमः।
९१४ ॐ अप्रपञ्चाय नमः।
९१५ ॐ सदाचाराय नमः।
९१६ ॐ शूरसेनाविदारकाय नमः।
९१७ ॐ वृद्धाय नमः।
९१८ ॐ प्रमोदाय नमः।
९१९ ॐ आनन्दाय नमः।
९२० ॐ सप्तद्वीपपतिन्धराय नमः।
९२१ ॐ नवद्वारपुराधाराय नमः।
९२२ ॐ प्रत्यग्राय नमः।
९२३ ॐ सामगायकाय नमः।
९२४ ॐ षट्चक्रधाम्ने नमः।
९२५ ॐ स्वर्लोकाभयकृते नमः।
९२६ ॐ मानदाय नमः।

९२७ ॐ मदाय नमः।
९२८ ॐ सर्ववश्यकराय नमः।
९२९ ॐ शक्तये नमः।
९३० ॐ अनन्ताय नमः।
९३१ ॐ अनन्तङ्गलाय नमः।
९३२ ॐ अष्टमूर्तये नमः।
९३३ ॐ नयोपेताय नमः।
९३४ ॐ विरूपाय नमः।
९३५ ॐ सुरसुन्दाराय नमः।
९३६ ॐ धूमकेतवे नमः।
९३७ ॐ महाकेतवे नमः।
९३८ ॐ सत्यकेतवे नमः।
९३९ ॐ महारथाय नमः।
९४० ॐ नन्दिप्रियाय नमः।
९४१ ॐ स्वतन्त्राय नमः।
९४२ ॐ मेखलिने नमः।
९४३ ॐ डमरुप्रियाय नमः।
९४४ ॐ लौहाङ्गाय नमः।
९४५ ॐ सर्वविदे नमः।
९४६ ॐ धन्विने नमः।
९४७ ॐ खण्डलाय नमः।
९४८ ॐ शर्वाय नमः।
९४९ ॐ ईश्वराय नमः।
९५० ॐ फलभुजे नमः।
९५१ ॐ फलहस्ताय नमः।
९५२ ॐ सर्वकर्मफलप्रदाय नमः।
९५३ ॐ धर्माध्यक्षाय नमः।
९५४ ॐ धर्मपालाय नमः।
९५५ ॐ धर्माय नमः।
९५६ ॐ धर्मप्रदाय नमः।
९५७ ॐ अर्थदाय नमः।
९५८ ॐ पञ्चविंशतितत्त्वज्ञाय नमः।
९५९ ॐ तारकाय नमः।
९६० ॐ ब्रह्मतत्पराय नमः।
९६१ ॐ त्रिमार्गवसतये नमः।
९६२ ॐ भीमाय नमः।
९६३ ॐ सर्वदुःखनिबर्हणाय नमः।
९६४ ॐ ऊर्जस्वते नमः।
९६५ ॐ निष्कलाय नमः।
९६६ ॐ शूलिने नमः।
९६७ ॐ मौलिने नमः।
९६८ ॐ गर्जन्निशाचराय नमः।
९६९ ॐ रक्ताम्बरधराय नमः।
९७० ॐ रक्ताय नमः।
९७१ ॐ रक्तमाल्याय नमः।
९७२ ॐ विभूषणाय नमः।
९७३ ॐ वनमालिने नमः।
९७४ ॐ शुभाङ्गाय नमः।
९७५ ॐ श्वेताय नमः।
९७६ ॐ श्वेताम्बराय नमः।
९७७ ॐ यूने नमः।
९७८ ॐ जयाय नमः।
९७९ ॐ अजयपरीवाराय नमः।
९८० ॐ सहस्त्रवदनाय नमः।
९८१ ॐ कपये नमः।
९८२ ॐ शाकिनीडाकिनीयक्षरक्षोभूत-प्रभञ्जकाय नमः।
९८३ ॐ सद्योजाताय नमः।
९८४ ॐ कामगतये नमः।
९८५ ॐ ज्ञानमूर्तये नमः।
९८६ ॐ यशस्कराय नमः।
९८७ ॐ शम्भुतेजसे नमः।
९८८ ॐ सार्वभौमाय नमः।
९८९ ॐ विष्णुभक्ताय नमः।
९९० ॐ प्लवङ्गमाय नमः।
९९१ ॐ चतुर्नवतिमन्त्रज्ञाय नमः।
९९२ ॐ पौलस्त्यबलदर्पघ्ने नमः।
९९३ ॐ सर्वलक्ष्मीप्रदाय नमः।
९९४ ॐ श्रीमते नमः।
९९५ ॐ अङ्गदप्रियाय नमः।
९९६ ॐ ईडिताय नमः।
९९७ ॐ स्मृतिबीजाय नमः।
९९८ ॐ सुरेशानाय नमः।
९९९ ॐ संसारभयनाशनाय नमः।
१००० ॐ उत्तमाय नमः।
१००१ ॐ श्रीपरीवाराय नमः।
१००२ ॐ श्रिताय नमः।
१००३ ॐ रुद्राय नमः।
१००४ ॐ कामदुहे नमः।

***

॥ लान्गूलोपनिषत् ॥

श्रीगणेशाय नमः। ॐ अस्य श्री अनन्तघोरप्रलयज्वालाग्नि-रौद्रस्य वीरहनुमत्साध्यसाधनाघोरमूलमन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीरामलक्ष्मणौ देवता। सौं बीजम्। अञ्जनासूनुरिति शक्तिः। वायुपुत्र इति कीलकम्। श्रीहनुमत्प्रसादसिद्ध्यर्थं भूर्भुवस्स्वर्लोकसमासीन- तत्वम्पद-शोधनार्थं जपे विनियोगः। ॐ भूः नमो भगवते दावानलकालाग्निहनुमते अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ भुवः नमो भगवते चण्डप्रतापहनुमते तर्जनीभ्यां नमः। ॐ स्वः नमो भगवते चिन्तामणिहनुमते मध्यमाभ्यां नमः। ॐ महः नमो भगवते पातालगरुडहनुमते अनामिकाभ्यां नमः। ॐ जनः नमो भगवते कालाग्निरुद्रहनुमते कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ तपः सत्यं नमो भगवते भद्रजातिविकटरुद्रवीरहनुमते करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः। ॐ भूः नमो भगवते दावानलकालाग्निहनुमते हृदयाय नमः। ॐ भुवः नमो भगवते चण्डप्रतापहनुमते शिरसे स्वाहा। ॐ स्वः नमो भगवते चिन्तामणिहनुमते शिखायै वषट्। ॐ महः नमो भगवते पातालगरुडहनुमते कवचाय हुम्। ॐ जनः नमो भगवते कालाग्निरुद्रहनुमते नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ तपः सत्यं नमो भगवते भद्रजातिविकटरुद्रवीरहनुमते अस्त्राय फट्। अथ ध्यानम्। वज्राङ्गं पिङ्गनेत्रं कनकमयलसत्कुण्डलाक्रान्तगण्डं दम्भोलिस्तम्भसारप्रहरण-विवशीभूतरक्षोऽधिनाथम्। उद्यल्लाङ्गूलघर्षप्रचलजलनिधिं भीमरूपं कपीन्द्रं ध्यायन्तं रामचन्द्रं प्लवगपरिवृढं सत्वसारं प्रसन्नम्॥ इति मानसोपचारैः सम्पूज्य। ॐ नमो भगवते दावानलकालाग्निहनुमते जयश्रियो जयजीविताय धवलीकृतजगत्त्रय वज्रदेह वज्रपुच्छ वज्रकाय वज्रतुण्ड वज्रमुख वज्रनख वज्रबाहो वज्ररोम वज्रनेत्र वज्रदन्त वज्रशरीर सकलात्मकाय भीमकर पिङ्गलाक्ष उग्र प्रलयकालरौद्र वीरभद्रावतार शरभसालुवभैरवदोर्दण्ड लङ्कापुरीदाहन उदधिलङ्घन दशग्रीवकृतान्त सीताविश्वास ईश्वरपुत्र अञ्जना-गर्भसम्भूत उदयभास्करबिम्बानलग्रासक देवदानवऋषिमु-निवन्द्य पाशुपतास्त्रब्रह्मास्त्रबैलवा स्त्रनारायणास्त्रकाल शक्ति-कास्त्रदण्डकास्त्रपाशाघोरास्त्रनिवारण पाशुपतास्त्रब्रह्मास्त्रबैलवा-स्त्रनारायणास्त्रमृड सर्वशक्तिग्रसन ममात्मरक्षाकर परविद्या-निवारण आत्मविद्यासंरक्षक अग्निदीप्त अथर्वणवेद-सिद्धस्थिरकालाग्निनिराहारक वायुवेग मनोवेग श्रीरामतार-कपरब्रह्मविश्वरूपदर्शन लक्ष्मणप्राणप्रतिष्ठानन्दकर स्थल-जलाग्निमर्मभेदिन् सर्वशत्रून् छिन्धि छिन्धि मम वैरिणः खादय खादय मम सञ्जीवनपर्वतोत्पाटन डाकिनीविध्वंसन सुग्रीवसख्यकरण निष्कलङ्क कुमारब्रह्मचारिन् दिगम्बर सर्वपाप सर्वग्रह कुमारग्रह सर्वं छेदय छेदय भेदय भेदय भिन्धि भिन्धि खादय खादय टङ्क टङ्क ताडय ताडय मारय मारय शोषय शोषय ज्वालय ज्वालय हारय हारय नाशय नाशय अतिशोषय अतिशोषय मम सर्वं च हनुमन् रक्ष रक्ष ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं फट् घे घे स्वाहा॥ ॐ नमो भगवते चण्डप्रतापहनुमते महावीराय सर्वदुःखविनाशनाय ग्रहमण्डलभूतमण्डल-प्रेतपिशाचमण्डल सर्वोच्चाटनाय अतिभयङ्करज्वर-माहेश्वरज्वर-विष्णुज्वर-ब्रह्मज्वर- वेताळ ब्रह्मराक्षसज्वर-पित्तज्वर-श्लेष्मसान्निपातिकज्वर-विषमज्वर- शीतज्वर एकाहिकज्वर-द्व्याहिकज्वर-त्रैहिकज्वर-चातुर्थिकज्वर-अर्धमासिकज्वर-मासिकज्वर-षाण्मासिकज्वर सांवत्सरि-कज्वर- अस्थ्यन्तर्गतज्वर-महापस्मार-श्रमिकापस्मारांश्च भेदय भेदय खादय खादय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं फट् घे घे स्वाहा॥ ॐ नमो भगवते चिन्तामणिहनुमते अङ्गशूल-अक्षिशूल-शिरश्शूल- गुल्मशूल-उदरशूल-कर्णशूल-नेत्रशूल-गुदशूल-कटिशूल- जानुशूल-जङ्घाशूल-हस्तशूल-पादशूल-गुल्फशूल-वातशूल- पित्तशूल-पायुशूल-स्तनशूल-परिणामशूल-परिधामशूल- परिबाणशूल-दन्तशूल-कुक्षिशूल-सुमनश्शूल-सर्वशूलानि निर्मूलय निर्मूलय दैत्यदानवकामिनी-वेतालब्रह्मराक्षसकोलाहल- नागपाशानन्तवासुकितक्ष-ककार्कोटकलिङ्गपद्मककुमुदज्वलरोगपाश- महामारीन् कालपाशविषं निर्विषं कुरु कुरु ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं फट् घे घे स्वाहा॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्लां ग्लीं ग्लूं ॐ नमो भगवते पातालगरुडहनुमते भैरववनगतगजसिंहेन्द्राक्षीपाशबन्धं छेदय छेदय प्रलयमारुत कालाग्निहनुमन् श्रृङ्खलाबन्धं विमोक्षय विमोक्षय सर्वग्रहं छेदय छेदय मम सर्वकार्याणि साधय साधय मम प्रसादं कुरु कुरु मम प्रसन्न श्रीरामसेवकसिंह भैरवस्वरूप

॥ श्रीहनुमत्प्रशंसनम् ॥

मुक्तिप्रदानात् प्रतिकर्तृता मे सर्वस्य बोधो भवतां भवेत ।
हनूमतो न प्रतिकर्तृता स्यात् स्वभावभक्तस्य निरौषधं मे ॥१॥

मद्भक्तौ ज्ञानपूर्तावनुपधिकबलप्रोन्नतिस्थैर्यधैर्य-
स्वाभाव्याधिक्यतेजःसुमतिदमशमेष्वस्य तुल्यो न कश्चित् ।
शेषो रुद्रः सुपर्णोऽप्युरुगुणसमितौ नो सहस्रांशुतुल्या
अस्येत्यस्मान्मदैशं पदमहममुना सार्धमेवोपभोक्ष्ये ॥२॥

पूर्वं जिगाय भुवनं दशकन्धरोऽसा-
वब्जोद्भवस्य वरतो न तु तं कदाचित् ।
कश्चिज्जिगाय पुरुहूतसुतः कपित्वाद्-
विष्णोर्वरादजयदर्जुन एव चैनम् ॥३॥

दत्तो वरो न मनुजान् प्रति वानरांश्च
धात्रास्य तेन विजितो युधि वालिनैषः।
अब्जोद्भवस्य वरमाश्वभिभूय रक्षो
जिग्ये त्वहं रणमुखे बलिमाह्वयन्तम् ॥४॥

बलेर्द्वास्थोऽहं वरमस्मै सम्प्रदाय पूर्वं तु ।
तेन मया रक्षोऽस्तं योजनमयुतं पदाङ्गुल्या ॥५॥

पुनश्च युद्धाय समाह्वयन्तं न्यपातयं रावणमेकमुष्टिना ।
महाबलोऽहं कपिलाख्यरूपस्त्रिकूटरूपः पवनश्च मे सुतः ॥६॥
आवां स्वशक्त्या जयिनाविति स्म शिवो वरान्तेऽजयदेनमेवम्।
ज्ञात्वा सुराजेयमिमं हि वव्रे हरो जयेयाहममुं दशाननम् ॥७॥

अतः स्वभावाज्जयिनावहं च वायुश्च वायुर्हनुमान् सएषः ।
अमुष्य हेतोस्तु पुरा हि वायुना -
शिवेन्द्रपूर्वा अपि काष्ठवत्कृताः ॥८॥

अतो हनूमान् पदमेतु धातुर्मदाज्ञया सृष्ट्यवनादिकर्म ।
मोक्षं च लोकस्य सदैव कुर्वन्
-मुक्तश्च मुक्तान् सुखयन् प्रवर्तताम् ॥९॥

भोगाश्च ये यानि च कर्मजातान्यनाद्यनन्तानि ममेह सन्ति ।
मदाज्ञया तान्यखिलानि सन्ति
-धातुः पदे तत् सहभोगनाम ॥१०॥

एतादृशं मे सहभोजनं ते मया प्रदत्तं हनुमन् सदैव ।
इतीरितस्तं हनूमान् प्रणम्य -
जगाद वाक्यं स्थिरभक्तिनम्रः ॥११॥

॥ इति श्रीमदानन्दतीर्थीयमहाभारततात्पर्यनिर्णयतः
श्रीहनुमत्प्रशंसनम्॥

॥ हनुमद्वाडवानलस्तोत्रम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ।
ॐ अस्य श्रीहनुमद्वाडवानलस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः।, श्रीवडवानलहनुमान् देवता।, मम समस्तरोगप्रशमनार्थं।, आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं।, समस्तपापक्षयार्थं।, सीतारामचन्द्रप्रीत्यर्थं च हनुमद्वाडवानलस्तोत्रजपमहं करिष्ये॥
ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते श्री महाहनुमते प्रकटपराक्रम सकलदिङ्मण्डलयशोवितानधवलीकृतजगत्त्रितय वज्रदेह रुद्रावतार लङ्कापुरीदहन उमाअमलमन्त्र उदधिबन्धन दशशिरःकृतान्तक सीताश्वसन वायुपुत्र अञ्जनीगर्भसम्भूत श्रीरामलक्ष्मणानन्दकर कपिसैन्यप्राकार सुग्रीवसाह्य रणपर्वतोत्पाटन कुमारब्रह्मचारिन् गभीरनाद सर्वपापग्रहवारण सर्वज्वरोच्चाटन डाकिनीविध्वंसन ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते महावीरवीराय सर्वदुःखनिवारणाय ग्रहमण्डलसर्वभूतमण्डलसर्वपिशाचमण्डलोच्चाटन भूतज्वर एकाहिकज्वर द्व्याहिकज्वर त्र्याहिकज्वरचातुर्थिकज्वर सन्तापज्वर विषमज्वर तापज्वरमाहे श्वरवैष्णवज्वरान् छिन्धि छिन्धि यक्षब्रह्मरा क्षसभूतप्रेतपिशाचान् उच्चाटय उच्चाटय ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः आं हां हां हां औं सौं एहि एहि एहि ॐहं ॐहं ॐहं ॐहं ॐनमो भगवते श्रीमहाहनुमते श्रवणचक्षुर्भूतानां शाकिनीडाकिनीनां विषमदुष्टानां सर्वविषं हर हर आकाशभुवनं भेदय भेदय छेदय छेदय मारय मारय शोषय शोषय मोहय मोहय ज्वालय ज्वालय प्रहारय प्रहारय सकलमायां भेदय भेदय ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते महाहनुमते सर्व ग्रहोच्चाटन परबलं क्षोभय क्षोभय सकलबन्धनमोक्षणं कुरु कुरु शिरःशूलगुल्मशूलसर्वशूलान्निर्मूलय निर्मूलय नागपाशानन्तवासुकित क्षककर्कोटक कालियान् यक्षकुलजल गतबिलगतरात्रिञ्चर दिवाचर सर्वान्निर्विषं कुरु कुरु स्वाहा॥
राजभय चोरभय परमन्त्रपरयन्त्रपरतन्त्रपरविद्याच्छेदय छेदय स्वमन्त्रस्वयन्त्रस्वतन्त्रस्वविद्याः प्रकटय प्रकटय सर्वारिष्टा- न्नाशय नाशय सर्वशत्रून्नाशय नाशय असाध्यं साधय साधय हुं फट् स्वाहा॥
॥ इति श्रीविभीषणकृतं हनुमद्वाडवानलस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री हनुमान सहस्त्रनामस्तोत्रम् ॥

श्री हनुमंत सहस्त्रनामस्तोत्रम् ध्यानम् अतुलितबलधामं हेम-शैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् । सकलगुण-निधानं वानराणामधीशं रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥

स्तोत्रम्

श्रीरामचन्द्र उवाच हनुमान्श्रीप्रदो वायुपुत्रो रुद्रोऽनघोऽजरः ।
अमृत्युर्वीरवीरश्च ग्रामवासो जनाश्रयः ॥१॥
धनदो निर्गुणोऽकायो वीरो निधिपतिर्मुनिः ।
पिङ्गक्षो वरदो वाग्मी सीताशोकविनाशनः ॥२॥
शिवः सर्वः परोऽव्यक्तो व्यक्ताव्यक्तो रसाधनः ।
पिङ्गकेशः पिङ्गरोमा श्रुतिगम्य सनातनः ॥३॥
अनादिर्भवान देवो विश्वहेतुर्निरामयः ।
आरोग्यकर्ता विश्वेशो विश्वनाथो हरीश्वरः ॥४॥
भर्गो रामो रामभक्तः कल्याणप्रकृतिः स्थिरः ।
विश्वम्भरो विश्वमूर्तिर्विश्वाकारोऽथ विश्वपः ॥५॥
विश्वात्मा विश्वसेव्योऽथ विश्वो विश्वहरो रविः ।
वि्श्वचेष्टो विश्वगम्यो विश्वध्येयः कलाधरः ॥६॥
प्लवङ्गमः कपिश्रेष्ठो ज्येष्ठो वैद्यो वनेचरः ।
बालो वृद्धो युवा तत्त्वं तत्त्वगम्यः सखा ह्वाजः ॥७॥
अञ्जनासूनुरव्यग्रो ग्रामख्यातो धराधरः ।
भूर्भुवःस्वर्महर्लोको जनलोकस्तपोऽव्ययः ॥८॥
सत्यमोङ्कारगम्यश्च प्रववो व्यापकोऽमलः ।
शिवधर्मप्रतिष्ठाता रामेष्टः फाल्गुनप्रियः ॥९॥
गोष्पदीकृतवारीशः पूर्णकामो धरापतिः ।
रक्षोघ्नोः पुण्डरीकाक्षः शरणागतवत्सलः ॥१०॥
जानकीप्राणदाता च रक्षःप्राणापहारकः ।
पूर्णः सत्यः पीतवासा दिवाकरसमप्रभः ॥११॥
देवोद्यानविहारी च देवताभयभञ्जनः ।
भक्तोदयो भक्तलब्धो भक्तपालनतत्परः ॥१२॥
द्रोणहर्ता शक्तिनेता शक्तिराक्षसमारकः ।
अक्षघ्नो रामदूतश्च शाकिनीजीवहारकः ॥१३॥
बुबुकारहतारातिर्गर्वपर्वतमर्दनः ।
हेतुस्त्वहेतुः प्रांशुश्च विश्वभर्ता जगद्गुरुः ॥१४॥
जगन्नेता जगन्नाथो जगदीशो जनेश्वरः ।
जगद्धितो हरिः श्रोशो गरुडस्मयभञ्जनः ॥१५॥
पार्थध्वजो वायुपुत्रोऽमितपुच्छोऽमितविक्रमः ।
ब्रह्मपुच्छः परब्रह्मपुच्छो रामेष्टकारकः ॥१६॥
सुग्रीवादियुतो ज्ञानी वानरो वानरेश्वरः ।
कल्पस्थायी चिरञ्जीवी तपनश्च सदाशिवः ॥१७॥
सन्नातिः सद्गतिर्भुक्तिमुक्तिदः कीर्तिदायकः ।
कीर्तिः कीर्तिप्रदश्चैव समुद्रः श्रीपदः शिवः ॥१८॥
भक्तोदयो भक्तगम्यो भक्तभाग्यप्रदायकः ।
उदधिक्रमणो देवः संसारभयनाशनः ॥१९॥
वार्धिबन्धनकृद विश्वजेता विश्वप्रतिष्ठितः ।
लङ्कारिः कालपुरुषो लङ्केशगृहभञ्जकः ॥२०॥
भूतावासो वासुदेवो वसुस्त्रिभुवनेश्वरः ।
श्रीरामरूपः कृष्णस्तु लङ्काप्रासादभञ्जकः ॥२१॥
कृष्णः कृष्णस्तुतः शान्तः शान्तिदो विश्वपावनः ।
विश्वभोक्ताथ मारघ्नो ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः ॥२२॥
ऊर्ध्वगो लाङ्गुली माली लाङ्गूलाहतराक्षसः ।
समीरतनुजो वीरो वीरतारी जयप्रदः ॥२३॥
जगन्मङ्गलदः पुण्यः पुण्यश्रवणकीर्तनः ।
पुण्यकीर्तिः पुण्यगतिर्जगत्पावनपावनः ॥२४॥
देवेशो जितमारोऽथ रामभक्तिविधायकः ।
ध्याता ध्येयो लयः साक्षी चेता चैतन्यविग्रहः ॥२५॥
ज्ञानदः प्राणदः प्राणो जगत्प्राण समीरणः ।
विभीषणप्रियः शूरः पिप्पलाश्रयसिद्धिदः ॥२६॥
सिद्धः सिद्धश्रयः कालो महोक्षः कालजान्तकः ।
लङ्केशनिधनस्थायी लङ्कादाहक ईश्ववरः ॥२७॥
चन्द्रसूर्यग्निनेत्रश्च कालाग्निः प्रलयान्तकः ।
कपिलः कपिशः पुण्यराशिर्द्वादशराशिगः ॥२८॥
सर्वाश्रयोऽप्रमेयात्मा रेवत्यादिनिवारकः ।
लक्ष्मणप्राणदाता च सीताजीवनहेतुकः ॥२९॥
रामध्येयो हृषीकेशी विष्णुभक्त जटी बली ।
देवारिदर्पहा होता धाता कर्ता जगत्प्रभुः ॥३०॥
नगरग्रामपालश्च शुद्धो बुद्धो निरत्रपः ।
निरञ्जनो निर्विकल्पो गुणातीतो भयंकरः ॥३१॥

हनुमांश्च दुराराध्यस्तपःसाध्यो महेश्वरः ।
जानकीधनशोकोत्थतापहर्ता परात्परः ॥३२॥
वाङ्मयः सदसद्रूपः कारणं प्रकृतेः परः ।
भाग्यदो निर्मलो नेता पुच्छलङ्काविदाहकः ॥३३॥
पुच्छबद्धयातुधानो यातुधानरिपुप्रियः ।
छायापहारी भूतेशो लोकेशः सद्गतिप्रदः ॥३४॥
प्लवङ्गमेश्वरः क्रोधः क्रोधसंरक्तलोचनः ।
सौम्यो गुरुः काव्यकर्ता भक्तानां च वरप्रदः ॥३५॥
भक्तानुकम्पी विश्वेशः पुरुहूतः पुरंदरः ।
क्रोधहर्ता तमोहर्ता भक्ताभयवरप्रदः ॥३६॥
अग्निर्विभावसुर्भास्वान् यमो निऋतिरेव च ।
वरुणो वायुगतिमान् वायुः कौबेर ईश्वरः ॥३७॥
रविश्चन्द्रः कुजः सौम्यो गुरुः काव्यः शनैश्चरः ।
राहुः केतुर्मरुद्धोता दाता हर्ता समीरजः ॥३८॥
मशकीकृतदेवारिदैत्यारिर्मधुसूदनः ।
कामः कपिः कामपालः कपिलो विश्वजीवन ॥३९॥
भागीरथीपदाम्भोजः सेतुबन्धविशारदः ।
स्वाहा स्वधा हविः कव्यं हव्यवाहप्रकाशकः ॥४०॥
स्वप्रकाशो महावीरो लघुरूर्जितविक्रमः ।
उड्डीनोड्डीनगतिमान् सद्गतिः पुरुषोत्तमः ॥४१॥
जगदात्मा जगद्योनिर्जगदन्तो ह्यनन्तकः ।
विपाप्मा निष्कलङ्कोऽथ महान् महादहंकृतिः ॥४२॥
खं वायुः पृथिवी चापो वह्निर्दिक्पाल एव च ।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रहर्ता च पल्वलीकृतसागरः ॥४३॥
हिरण्मयः पुराणश्च खेचरो भूचरोऽमरः ।
हिरण्मयगर्भः सूत्रात्मा राजराजो विशांपतिः ॥४४॥
वेदान्तवेद्य उद्गीथो वेदवेदाङ्गपारगः ।
प्रतिग्रामस्थितिः सद्यःस्फूर्तिदाता गुणाकरः ॥४५॥
नक्षत्रमाली भूतात्मा सुरभिः कल्पपादपः ।
चिन्तामणिर्गुणनिधिः प्रजाधारो ह्यनुत्तमः ॥४६॥
पुण्यश्लोकः पुरारातिर्ज्योतिष्माञ्शर्वरीपतिः ।
किलकिलारावसंत्रस्तभूतप्रेतपिशाचकः ॥४७॥
ऋणत्रयहरः सूक्ष्मः स्थूलः सर्वगतिः पुमान् ।
अपस्मारहरः स्मर्ता श्रुतिर्गाथा स्मृतिर्मनुः ॥४८॥
स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं यतीश्वरः ।
नादरूपः परं ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्मपुरातनः ॥४९॥
एकोऽनेको जनः शुक्लः स्वयंज्योतिरनाकुलः ।
ज्योतिर्ज्योतिरनादिश्च सात्त्विको राजसस्तमः ॥५०॥
तमोहर्ता निरलम्बो निराकारी गुणाकरः ।
गुणाश्रयो गुणमयो बृहत्कर्मा बृहद्यशाः ॥५१॥
बृहद्धनुर्बृहत्पादो बृहन्मूर्धा बृहत्स्वनः ।
बृहत्कर्णो बृहन्नासो बृहद्बाहुर्बृहत्तनुः ॥५२॥
बृहज्जानुर्बृहत्कार्यो बृहत्पुच्छो बृहत्करः ।
बृहद्गतिर्बृहत्सेव्यो बृहल्लोकफलप्रदः ॥५३॥
बृहच्छक्तिर्बृहद्वाञ्छाफलदो बृहदीश्वरः ।
बृहल्लोकनुतो द्रष्टा विद्यादाता जगद्गुरुः ॥५४॥
देवाचार्यः सत्यवादी ब्रह्मवादी कलाधरः ।
सप्तपातालगामी च मलयाचलसंश्रयः ॥५५॥
उत्तराशास्थितः श्रीदो दिव्यौषधिवशः खगः ।
शाखामृगः कपीन्द्रोऽथ पुराणश्रुतिचञ्चुरः ॥५६॥
चतुरब्राह्मणो योगी योगगम्यः परावरः ।
अनादिनिधनो व्यासो वैकुण्ठः पृथिवीपतिः ॥५७॥
अपराजितो जितारातिः सदानन्दो दयायुतः।
गोपालो गोपतिर्गोप्ता कलिकालपराशनः ॥५८॥
मनोवेगी सदायोगी संसारभयनाशनः।
तत्त्वदाताथ तत्त्वज्ञस्तत्त्वं तत्त्वप्रकाशकः ॥५९॥
शुद्धो बुद्धो नित्यमुक्तो भक्तराजो जयद्रथः।
प्रलयोऽमितमायश्च मायातीतो विमत्सरः ॥६०॥
मायाभर्जितरक्षश्च मायानिर्मितविष्टपः।
मायाश्रयश्च निर्लेपो मायानिर्वर्तकः सुखम् ॥६१॥
सुखी सुखप्रदो नागो महेशकृतसंस्तवः।
महेश्वरः सत्यसंधः शरभः कलिपावनः ॥६२॥
सहस्रकन्धरबलविध्वंसनविचक्षणः।
सहस्रबाहुः सहजो द्विबाहुर्द्विभुजोऽमरः॥६३॥
चतुर्भुजो दशभुजो हयग्रीवः खगाननः।
कपिवक्त्रः कपिपतिर्नरसिंहो महाद्युतिः ॥६४॥
भीषणो भावगो वन्द्यो वराहो वायुरूपधृक् ।
लक्ष्मणप्राणदाता च पराजितदशाननः ॥६५॥

पारिजातनिवासी च वटर्वचनकोविदः ।
सुरसास्यविनिर्मुक्तः सिंहिकाप्राणहारकः ॥६६॥
लङ्कालङ्कारविध्वंसी वृषदंशकरूपधृक् ।
रात्रिसंचारकुशलो रात्रिंचरगृहग्निदः ॥६७॥
किङ्करान्तकरो जम्बुमालिहन्तोगुरूपधृक् ।
आकाशचारी हरिगो मेघनादरणोत्सुकः ॥६८॥
मेघगम्भीरनिनदो महारावनकुलात्नकः ।
कालनेमिप्रानहारी मकरीशापमोक्षदः ॥६९॥
रसो रसज्ञः सम्मानो रूपं चक्षुः श्रुतिर्वचः ।
घ्राणो गन्धः स्पर्शनं च स्पर्शोऽहङ्कारमानगः ॥७०॥
नेतिनेतीतिगम्यश्च वैकुण्ठभजनप्रियः ।
गिरीशो गिरिजाकान्तो दुर्वासाः कविरङ्गिराः ॥७१॥
भृगुर्वसिष्ठश्च्यवनो नारदस्तुम्बरोऽमलः ।
विश्वक्षेत्रो विश्वबीजो विश्वनेत्रश्च विश्वपः ॥७२॥
याजको यजमानश्च पावकः पितरस्तथा ।
श्रद्धा बुद्धिः क्षमा तन्द्रा मन्त्रो मन्त्रयिता स्वरः ॥७३॥
राजेन्द्रो भूपती रुण्डमाली संसारसारथिः ।
नित्यसम्पूर्णकामश्च भक्तकामधुगुत्तमः ॥७४॥
गणपः केशवो भ्राता पिता माता च मारुतिः ।
सहस्त्रमूर्द्धानेकास्यः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ॥७५॥
कामजित् कामदहनः कामः कामफलप्रदः ।
मुद्रापहारी रक्षाघ्नः क्षितिभारहरो बलः ॥७६॥
नखदंष्ट्रायुधो विष्णुर्भक्ताभयवरप्रदः ।
दर्पहा दर्पदो दंष्ट्राशतमूर्तिरमूर्तिमान् ॥७७॥
महानिधिर्महाभागो महाभर्गो महर्द्धिदः ।
महाकारो महायोगी महातेजा महाद्युतिः ॥७८॥
महासनो महानादो महामन्त्रो महामतिः ।
महागमो महोदारो महादेवात्मको विभुः ॥७९॥
रौद्रकर्मा क्रूरकर्मा रत्ननाभः कृतागमः ।
अम्भोधिलङ्घनः सिंहः सत्यधर्मप्रमोदनः ॥८०॥
जितामित्रो जयः सोमो विजयो वायुनन्दनः ।
जीवदाता सहस्त्रांशुर्मुकुन्दो भूरिदक्षिणः ॥८१॥
सिद्धार्थः सिद्धिदः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धिहेतुकः ।
सप्तपातालचरणः सप्तर्षिगणावन्दितः ॥८२॥

सप्ताब्धिलङ्घनो वीरः सप्तद्वीपोरुमण्डलः ।
सप्ताङ्गराज्यसुखदः सप्तमातृनिषेवितः ॥८३॥
सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तहोता स्वराश्रयः ।
सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तच्छन्दः सप्तजनाश्रयः ॥८४॥
सप्तसामोपगीतश्च सप्तपातालसंश्रयः ।
मेधादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्यनाशनः ॥८५॥
सर्वरक्षाकारो गर्भदोषहा पुत्रपौत्रदः ।
प्रतिवादिमुखस्तम्भो रुष्टचित्तप्रसादनः ॥८६॥
पराभिचारशमनो दुःखहा बन्धमोक्षदः ।
नवद्वारपुराधारो नवद्वारनिकेतनः ॥८७॥
नरनारायणस्तुत्यो नवनाथमहेश्वरः ।
मेखली कवची खड्गी भ्राजिष्णुर्जिष्णुसारथिः ॥८८॥
बहुयोजनविस्तीर्णपुच्छः पुच्छहतासुरः ।
दुष्टग्रहनिहन्ता च पिशाचग्रहघातकः ॥८९॥
बालग्रहविनाशी च धर्मनेता कृपाकरः ।
उग्रकृत्यश्चोग्रवेग उग्रनेत्रः शतक्रतुः ॥९०॥
शतमन्युनुतः स्तुत्यः स्तुतिः स्तोता महाबलः ।
समग्रगुणशाली च व्यग्रो रक्षोविनाशकः ॥९१॥
रक्षोऽग्निदाहो ब्रह्मेशः श्रीधरो भक्तवत्सलः ।
मेघनादो मेघरूपो मेघवृष्टिनिवारकः ॥९२॥
मेघजीवनहेतुश्च मेघश्यामः परात्मकः ।
समीरतनयो योद्धा नृत्यविद्याविशारदः ॥९३॥
अमोघोऽमोघदृष्टीश्च इष्टदोऽरिष्टनाशनः ।
अर्थोऽनर्थापहारी च समर्थो रामसेवकः ॥९४॥
अर्थिवन्द्योऽसुरारातिः पुण्डरीकाक्ष आत्मभूः ।
संकर्षणो विशुद्धात्मा विद्याराशिः सुरेश्वरः ॥९५॥
अचलोद्धारको नित्यः सेतुकृद् रामसारथिः ।
आनन्दः परमानन्दो मत्स्यः कूर्मो निराश्रयः ॥९६॥
वाराहो नारसिंहश्च वामनो जमदग्निजः ।
रामः कृष्णः शिवो बुद्धः कल्की रामाश्रयो हरिः ॥९७॥
नन्दी भृङ्गी च चण्डी च गणेशो गणसेवितः ।
कर्माध्यक्षः सुराध्यक्षो विश्रामो जगतीपतिः ॥९८॥
जगन्नाथः कपीशश्च सर्वावासः सदाश्रयः ।
सुग्रीवादिस्तुतो दान्तः सर्वकार्मा प्लवङ्गमः ॥९९॥



नखदारितरक्षाश्च नखयुद्धविशारदः ।
कुशलः सुधनः शेषो वासुकिस्तक्षकस्तथा ॥१००॥
स्वर्णवर्णो बलाढ्यश्च पुरुजेताघनाशनः ।
कैवल्यरूपः कैवल्यो गरुडः पन्नगोरगः ॥१०१॥
किलकिलरावहतारातिगर्वपर्वतभेदनः ।
वज्राङ्गो वज्रदंष्ट्रश्च भक्तवज्रनिवारकः ॥१०२॥
नखायुधो मणिग्रीवो ज्वालामाली च भास्करः ।
प्रौढप्रतापस्तपनो भक्ततापनिवारकः ॥१०३॥
शरणं जीवनं भोक्ता नानाचेष्टो ह्यचञ्चलः ।
स्वस्तिमान् स्वस्तिदो दुःखशातनः पवनात्मजः ॥१०४॥
पावनः पवनः कान्तो भक्तागःसहनो बली ।
मेघनादरिपुर्मेघनादसंहतराक्षसः ॥१०५॥
क्षरोऽक्षरी विनीतात्मा वानरेशः सतां गतिः ।
श्रीकण्ठः शितिकण्ठश्च सहायः सहनायकः ॥१०६॥
अस्थूलस्त्वनणुर्भर्गो दिव्यः संसृतिनाशनः ।
अध्यात्मविद्यासारश्च ह्याध्यात्मदुशलः सुधीः ॥१०७॥
अकल्मषः सत्यहेतुः सत्यदः सत्यगोचरः ।
सत्यगर्भः सत्यरूपः सत्यः सत्यपराक्रमः ॥१०८॥
अञ्जनाप्राणलिङ्गश्च वायुवंशोद्भवः शुभः ।
भद्ररूपो रुद्ररूपः सुरूपश्चित्ररूपधृक् ॥१०९॥
मैनाकवन्दितः सूक्ष्मदर्शनो विजयो जयः ।
कान्तदिङ्मण्डलो रुद्रः प्रकटीकृतविक्रमः ॥११०॥
कम्बुकण्ठः प्रसन्नात्मा ह्रस्वनासो वृकोदरः ।
लम्बौष्ठः कुण्डली चित्रमाली योगविंदा वरः ॥१११॥
विपश्चित्कविरानन्दविग्रहोऽनल्पशासनः ।
फाल्गुनीसूनुरव्यग्रो योगात्मा योगतत्परः ॥११२॥
योगविद् योगकर्ता च योगयोनिर्दिगम्बरः ।
अकारादिहकारान्तवर्णनिर्मितविग्रहः ॥११३॥
उलूखलमुखः सिद्धसंस्तुतः प्रमथेश्वरः ।
श्लिष्टजङ्घः श्लिष्टजानुः श्लिष्टपाणिः शिखाधरः ॥११४॥
सुशर्मामितशर्मा च नारायणपरायणः ।
जिष्णुर्भविष्णू रोचिष्णुर्ग्रसिष्णुः स्थाणुरेव च ॥११५॥
हरिरुद्रानुसेकोऽथ कम्पनो भूमिकम्पनः ।
गुणप्रवाहः सूत्रात्मा वीतरागस्तुतिप्रियः ॥११६॥

नागकन्याभध्वंसी रुक्मवर्णः कपालभृत् ।
अनाकुलो भवोपायोऽनपायो वेदपारगः ॥११७॥
अक्षरः पुरुषो लोकनाथ ऋक्षप्रभुर्दृढः ।
अष्टाङ्गयोगफलभुक् सत्यसंधः पुरुष्टुतः ॥११८॥
श्मशानस्थाननिलयः प्रेतविद्रावनक्षमः ।
पञ्चाक्षरपरः पञ्चमातृको रञ्जनध्वजः ॥११९॥
योगिनीवृन्दवन्द्यश्रीः शत्रुघ्नोऽनन्तविक्रमः ।
ब्रह्मचारीन्द्रियरिपुर्धृतदण्डो दशात्मकः ॥१२०॥
अप्रपञ्चः सदाचारः शूरसेनाविदारकः ।
वृद्धः प्रमोद आनन्दः सप्तद्वीपपतिन्धरः ॥१२१॥
नवद्वारपुराधारः प्रत्यग्रः सामगायकः ।
षट्चक्रधाम स्वर्लोकाभयकृन्मानदो मदः ॥१२२॥
सर्ववश्यकरः शक्तिरनन्तोऽनन्तमङ्गलः ।
अष्टमूर्तिर्नयोपेतो विरूपः सुरसुन्दरः ॥१२३॥
धूमकेतुर्महाकेतुः सत्यकेतुर्महारथः ।
नन्दिप्रियः स्वतन्त्रश्च मेखली डमरुप्रियः ॥१२४॥
लौहाङ्गः सर्वविद्धन्वी खण्डलः शर्व ईश्वरः ।
फलभुक् फलहस्तश्च सर्वकर्मफलप्रदः ॥१२५॥
धर्माध्यक्षो धर्मपालो धर्मो धर्मप्रदोऽर्थदः ।
पञ्चविंशतितत्त्वज्ञस्तारको ब्रह्मतत्परः ॥१२६॥
त्रिमार्गवसतिर्भीमः सर्वदुःखनिबर्हणः ।
ऊर्जस्वान् निष्कलः शूली मौलिर्गर्जन्निशाचारः ॥१२७॥
रक्ताम्बरधरो रक्तो रक्तमाल्यो विभूषणः ।
वनमाली शुभाङ्गश्च श्वेतः श्वेताम्बरो युवा ॥१२८॥
जयोऽजयपरीवारः सहस्रवदनः कपिः ।
शाकिनीडाकिनीयक्षरक्षोभूतप्रभञ्जकः ॥१२९॥
सद्योजातः कामगतिर्ज्ञानमूर्तिर्यशस्करः ।
शम्भुतेजाः सार्वभौमो विष्णुभक्तः प्लवङ्गमः ॥१३०॥
चतुर्नवतिमन्त्रज्ञः पौलस्त्यबलदर्पहा ।
सर्वलक्ष्मीप्रदः श्रीमानङ्गदप्रिय ईडितः ॥१३१॥
स्मृतिबीजं सुरेशानः संसारभयनाशनः ।
उत्तमः श्रीपरीवारः श्रितो रुद्रश्च कामधुक् ॥१३२॥
॥ इति मन्त्रमहार्णवे पूर्वखण्डे नवमतरङ्गे श्रीरामकृतं श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीहनूमत्स्मरणम् ॥

प्रातः स्मरामि हनुमन्तमनन्तवीर्यं
श्रीरामचन्द्रचरणाम्बुजचञ्चरीकम् ।
लङ्कापुरीदहननन्दितदेववृन्दं
सर्वार्थसिद्धिसदनं प्रथितप्रभावम् ॥१॥

माध्यं नमामि वृजिनार्णवतारणैक-
धीरं शरण्यमुदितानुपमप्रभावम् ।
सीताऽऽधिसिन्धुपरिशोषणकर्मदक्षं
वन्दारुकल्पतरुमव्ययमाञ्जनेयम् ॥२॥

सायं भजामि शरणोपसृताखिलार्ति-
पुञ्जप्रणाशनविधौ प्रथितप्रतापम् ।
अक्षान्तकं सकलराक्षसवंशधूम-
केतुं प्रमोदितविदेहसुतं दयालुम् ॥३॥

॥आपदुद्धारक श्रीहनूमत्स्तोत्रम् ॥

विभीषणकृतम्

श्रीहनुमते नमः । अस्य श्रीहनुमत्स्तोत्रमहामन्त्रस्य, विभीषण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, हनुमान् देवता । मम शत्रुमुखस्तम्भनार्थे सर्वकार्यसिद्ध्यर्थे च जपे विनियोगः ।

ध्यानम्

चन्द्राभं चरणारविन्दयुगलं कौपीनमौञ्जीधरं
नाभ्यां वै कटिसूत्रयुक्तवसनं यज्ञोपवीतावृतम् ।
हस्ताभ्यामवलम्ब्य चाञ्जलिमथो हारावलीकुण्डलं
बिभ्रद्दीर्घशिखं प्रसन्नवदनं दिव्याञ्जनेयं भजे ॥

मन्त्रः-ॐ नमो हनुमते रुद्राय ।
मम सर्वदुष्टजनमुखस्तम्भनं कुरु कुरु ॥

मम सर्वकार्यसिद्धिं कुरु कुरु । ऐं ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा ।
note अष्टवारं जपेत् ।

आपन्नाखिललोकार्तिहारिणे श्रीहनूमते ।
अकस्मादागतोत्पातनाशनाय नमोऽस्तु ते ॥१॥

सीतावियुक्तश्रीरामशोकदुःखभयापह ।
तापत्रयस्य संहारिन्नाञ्जनेय नमोऽस्तु ते ॥२॥

आधिव्याधिमहामारिग्रहपीडापहारिणे ।
प्राणापहन्त्रे दैत्यानां रामप्राणात्मने नमः ॥३॥

संसारसागरावर्तागतसम्भ्रान्तचेतसाम् ।
शरणागतमर्त्यानां शरण्याय नमोऽस्तु ते ॥४॥

राजद्वारे बिलद्वारे प्रवेशे भूतसङ्कुले ।
गजसिंहमहाव्याघ्रचोरभीषणकानने ॥५॥

महाभयेऽग्निसंस्थाने शत्रुसङ्गसमाश्रिते ।
शरणागतमर्त्यानां शरण्याय नमो नमः ॥६॥

प्रदोषे वा प्रभाते वा ये स्मरन्त्यञ्जनासुतम् ।
अर्थसिद्धियशःकामान् प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥७॥

कारागृहे प्रयाणे च सङ्ग्रामे देशविप्लवे ।
ये स्मरन्ति हनूमन्तं तेषां नास्ति विपत्तयः ॥८॥

वज्रदेहाय कालाग्निरुद्रायामिततेजसे ।
नमः प्लवगसैन्यानां प्राणभूतात्मने नमः ॥९॥

दुष्टदैत्यमहादर्पदलनाय महात्मने ।
ब्रह्मास्त्रस्तम्भनायास्मै नमः श्रीरुद्रमूर्तये ॥१०॥

जप्त्वा स्तोत्रमिदं पुण्यं वसुवारं पठेन्नरः ।
राजस्थाने सभास्थाने वादे प्राप्ते जपेद्ध्रुवम् ॥११॥

विभीषणकृतं स्तोत्रं यः पठेत् प्रयतो नरः ।
सर्वापद्भ्यो विमुच्येत नात्र कार्या विचारणा ॥१२॥

॥ श्रीहनुमद्वन्दनम् ॥

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम् ।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥१॥

अञ्जनीगर्भसम्भूत कपीन्द्रसचिवोत्तम ।
रामप्रिय नमस्तुभ्यं हनूमन् रक्ष सर्वदा ॥२॥

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥३॥

अपराजित पिङ्गाक्ष नमस्ते राजपूजित ।
दीने मयि दयां कृत्वा मम दुःखं विनाशय ॥४॥

अशेषलङ्कापतिसैन्यहन्ता श्रीरामसेवाचरणैककर्ता ।
अनेकदुःखाहतलोकगोप्ता त्वसौ हनूमान्मम सौख्यकर्ता ॥५॥

आञ्जनेयं पाटलास्यं स्वर्णाद्रिसमविग्रहम् ।
पारिजातद्रुमूलस्थं वन्दे साधकनन्दनम् ॥६॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम् ।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम् ॥७॥

आधिव्याधिमहामारिग्रहपीडापहारिणे ।
प्राणापहर्त्रे दैत्यानां रामप्राणात्मने नमः ॥८॥

आपन्नाखिललोकार्तिहारिणे श्रीहनूमते ।
अकस्मादागतोत्पातनाशनाय नमोऽस्तु ते ॥९॥

उद्यत्कोट्यर्कसङ्काशं जगत्प्रक्षोभहारकम् ।
श्रीरामाङ्घ्रिध्याननिष्ठं सुग्रीवप्रमुखार्चितम् ।
वित्रासयन्तं नादेन राक्षसान् मारुतिं भजे ॥१०॥

उद्यदादित्यसङ्काशमुदारभुजविक्रमम् ।
कन्दर्पकोटिलावण्यं सर्वविद्याविशारदम् ॥११॥

श्रीरामहृदयानन्दं भक्तकल्पमहीरुहम् ।
अभयं वरदं दोर्भ्यां कलये मारुतात्मजम् ॥१२॥

उद्यन्मार्तण्डकोटिप्रकटरुचियुतं चारुवीरासनस्थं
मौञ्जीयज्ञोपवीतारुणरुचिरशिखाशोभनं कुण्डलाङ्कम् ।
भक्तानामिष्टदं तं प्रणतमुनिजनं मेघनादप्रमोदं
वन्दे देवं विधेयं प्लवगकुलपतिं गोष्पदीभूतवार्धिम् ॥१३॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥१४॥

कदापि शुभ्रैर्वरचामरैः प्रभुं गायन् गुणान् वीजयति स्थितोऽग्रतः।
कदाप्युपश्लोकयति स्वनिर्मितैः स्तवैः शुभैः श्रीहनुमान् कृताञ्जलिः॥१५॥

करात्तशैलशस्त्राय द्रुमशस्त्राय ते नमः ।
बालैकब्रह्मचर्याय रुद्रमूर्तिधराय च ॥१६॥

कारागृहे प्रयाणे च सङ्ग्रामे देशविप्लवे ।
स्मरन्ति त्वां हनूमन्तं तेषां नास्ति विपत्तदा ॥१७॥

कृतक्रोधे यस्मिन्नमरनगरी मङ्गलरवा
नवातङ्का लङ्का समजनि वनं वृश्चति सति ।
सदा सीताकान्तप्रणतिमतिविख्यातमहिमा
हनूमानव्यान्नः कपिकुलशिरोमण्डनमणिः ॥१८॥

गोष्पदीकृतवाराशिं मशकीकृतराक्षसम् ।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् । १९
जानुस्थवामबाहुं च ज्ञानमुद्रापरं हरिम् ।
अध्यात्मचित्तमासीनं कदलीवनमध्यगम् ।
बालार्ककोटिप्रतिमं वन्दे ज्ञानप्रदं हरिम् ॥२०॥

ज्वलत्काञ्चनवर्णाय दीर्घलाङ्गूलधारिणे ।
सौमित्रिजयदात्रे च रामदूताय ते नमः ॥२१॥

तप्तचामीकरनिभं भीघ्नं संविहिताञ्जलिम् ।
चलत्कुण्डलदीप्तास्यं पद्माक्षं मारुतिं भजे ॥२२॥

द्विभुजं स्वर्णवर्णाभं रामसेवापरायणम् ।
मौञ्जीकौपीनसहितं तं वन्दे रामसेवकम् ॥२३॥

दहनतप्तसुवर्णसमप्रभं भयहरं हृदये विहिताञ्जलिम् ।
श्रवणकुण्डलशोभिमुखाम्बुजं नमत वानरराजमिहाद्भुतम् ॥२४॥

नखायुधाय भीमाय दन्तायुधधराय च ।
विहङ्गाय च शर्वाय वज्रदेहाय ते नमः ॥२५॥

नादबिन्दुकलातीतं उत्पत्तिस्थितिवर्जितम् ।
साक्षादीश्वरसद्रूपं हनूमन्तं भजाम्यहम् ॥२६॥

पञ्चास्यमच्युतमनेकविचित्रवर्णवक्त्रं शशाङ्कशेखरं कपिराजवर्यम् ।
पीताम्बरादिमुकुटैरुपशोभिताङ्गं पिङ्गाक्षमाद्यमनिशं मनसा स्मरामि ॥२७॥

पद्मरागमणिकुण्डलत्विषा पाटलीकृतकपोलमण्डलम् ।
दिव्यहेमकदलीवनान्तरे भावयामि पवमाननन्दनम् ॥२८॥

प्रतप्तस्वर्णवर्णाभं संरक्तारुणलोचनम् ।
सुग्रीवादियुतं वन्दे पीताम्बरसमावृतम् ।
गोष्पदीकृतवारीशं (राशिं) पुच्छमस्तकमीश्वरम्
ज्ञानमुद्रां च बिभ्राणं सर्वालङ्कारभूषितम् ॥२९॥

बुद्धिर्बलं यशो धैर्यं निर्भयत्वमरोगता ।
अजाड्यं वाक्पटुत्वं च हनूमत्स्मरणाद्भवेत् ॥३०॥

भान्विन्दूचरणारविन्दयुगलं कौपीनमौञ्जीधरं
काञ्चिश्रेणिधरं दुकूलवसनं यज्ञोपवीताजिनम् ।
हस्ताभ्यां धृतपुस्तकं च विलसद्धारावलिं कुण्डलं
खेचालं विशिखं प्रसन्नवदनं श्रीवायुपुत्रं भजे ॥३१॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥३२॥

मरुत्सुतं रामपदारविन्दवन्दारुबृन्दारकमाशु वन्दे ।
धीशक्तिभक्तियुतिसिद्धयो यं कान्तं स्वकान्ता इव कामयन्ते ॥३३॥

मर्कटेश महोत्साह सर्वशत्रुहरोत्तम ।
शत्रुं सम्हर मां रक्ष श्रीमन्नापद उद्धर ॥३४॥

मर्कटेश महोत्साह सर्वातङ्कनिवारक ।
अरीन्सम्हर मां रक्ष सुखं दापय मे प्रभो ॥३५॥

महाशैलं समुत्पाट्य धावन्तं रावणं प्रति ।
तिष्ठ तिष्ठ रणे दुष्ट घोररावं समुच्चरन् ॥३६॥

लाक्षारसारुणं वन्दे कालान्तकयमोपमम् ।
ज्वलदग्निलसन्नेत्रं सूर्यकोटिसमप्रभम् ।
अङ्गदाद्यैर्महावीरैर्वेष्टितं रुद्ररूपिणम् ॥३७॥

मारुतिं वीरवज्राङ्गं भक्तरक्षणदीक्षितम् ।
हनूमन्तं सदा वन्दे राममन्त्रप्रचारकम् ॥३८॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥३९॥

यो वारांनिधिमल्पपल्वलमिवोल्लङ्घ्य प्रतापान्वितो
वैदेहीघनशोकवह्निहरणो वैकुण्ठभक्तप्रियः ।
अक्षाद्यर्जितराक्षसेश्वरमहादर्पापहारी रणे
सोऽयं वानरपुङ्गवोऽवतु सदा चास्मान् समीरात्मजः ॥४०॥

राजद्वारि बिलद्वारि प्रवेशे भूतसङ्कुले ।
गजसिम्हमहाव्याघ्रचौरभीषणकानने । ४१
शरणाय शरण्याय वातात्मज नमोस्तु ते ।
नमः प्लवगसैन्यानां प्राणभूतात्मने नमः ॥४२॥

रामेष्टं करुणापूर्णं हनूमन्तं भयापहम् ।
शत्रुनाशकरं भीमं सर्वाभीष्टफलप्रदम् ॥४३॥

प्रदोषे त्वां प्रभाते वा ये स्मरन्त्यञ्जनासुतम् ।
अर्थसिद्धिं यशःपूर्तिं प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥४४॥

लाक्षारसारुणं वन्दे कालान्तकयमोपमम् ।
ज्वलदग्निलसन्नेत्रं सूर्यकोटिसमप्रभम् ।
अङ्गदाद्यैर्महावीरैर्वेष्टितं रुद्ररूपिणम् ॥४५॥

वज्रदेहाय कालाग्निरुद्रायामिततेजसे ।
ब्रह्मास्त्रस्तम्भनायास्मै नमः श्रीरुद्रमूर्तये ॥४६॥

वज्राङ्गं पिङ्गकेशाढ्यं स्वर्णकुण्डलमण्डितम् ।
नियुद्धमुपसङ्क्रम्य पारावारपराक्रमम् ॥४७॥

वामहस्तगदायुक्तं पाशहस्तकमण्डलुम् ।
उद्यद्दक्षिणदोर्दण्डं हनूमन्तं विचिन्तये ॥४८॥

वज्राङ्गं पद्मनेत्रं कनकमयलसत्कुण्डलाक्रान्तगण्डं
दम्भोलिस्तम्भसारप्रहरणसुवशीभूतरक्षोऽधिनाथम् ।
उद्यल्लाङ्गूलसप्ताचलविचलकरं भीममूर्तिं कपीन्द्रं
वन्दे तं रामचन्द्रप्रमुखदृढतरं सत्प्रसारं प्रसन्नम् ॥४९॥

वन्दे बालदिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं
देवेन्द्रप्रमुखैःप्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा ।
सुग्रीवादिसमस्तवानरयुतं सुव्यक्ततत्त्वप्रियं
संरक्तारुणलोचनं पवनजं पीताम्बरालङ्कृतम् ॥५०॥

वन्दे रणे हनुमन्तं कपिकोटिसमन्वितम् ।
धावन्तं रावणं जेतुं दृष्ट्वा सत्वरमुत्थितम् ॥५१॥

लक्ष्मणं च महावीरं पतितं रणभूतले ।
गुरुं च क्रोधमुत्पाद्य गृहीत्वा गुरुपर्वतम् ॥५२॥

हाहाकारैः सदर्पैश्च कम्पयन्तं जगत्त्रयम् ।
ब्रह्माण्डं स समावाप्य कृत्वा भीमकलेवरम् ॥५३॥

वन्दे वानरसिम्हखगराट् क्रोडाश्ववक्त्रान्वितं
दिव्यालङ्करणं त्रिपञ्चनयनं देदीप्यमानं रुचा ।
हस्ताब्जैरसिखेटपुस्तकसुधाकुम्भाङ्कुशाद्रीन् हलं
खट्वाङ्गं फणिभूरुहं दशभुजं सर्वारिवीरापहम् ॥५४॥

वामहस्ते महावृक्षं दशास्यकरखण्डनम् ।
उद्यद्दक्षिणदोर्दण्डं हनूमन्तं विचिन्तये ॥५५॥

वामे करे वैरिभिदं वहन्तं शैलं परे शृङ्खलहारटङ्कम् ।
दधानमच्छच्छवियज्ञसूत्रं भजे ज्वलत्कुण्डलमाञ्जनेयम्
॥५६॥

वामे जानुनि वामबाहुमपरं तं ज्ञानमुद्रायुतं
हृद्देशे कलयन् वृतो मुनिगणैरध्यात्मदत्तेक्षणः ।
आसीनः कदलीवने मणिमये बालार्ककोटिप्रभो
ध्यायन् ब्रह्म परं करोतु मनसः सिद्धिं हनूमान्मम ॥५७॥

वामे शैलं वैरिभिदं विशुद्धं टङ्कमन्यतः ।
दधानं स्वर्णवर्णं च वन्दे कुण्डलिनं हरिम् ॥५८॥

सदा राम रामेति नामामृतं तं सदा राममानन्दनिष्यन्दकन्दम्।
पिबन्तं नमन्तं सुदन्तं हसन्तं हनूमन्तमन्तर्भजे तं नितान्तम्
॥५९॥

सपीतकौपीनमुदञ्चिताङ्गुलिम्
समुज्ज्वलन्मौञ्ज्यजिनोपवीतिनम् ।
सकुण्डलं लम्बशिखासमावृतं तमाञ्जनेयं शरणं प्रपद्ये ॥६०॥

सर्वारिष्टनिवारकं शुभकरं पिङ्गाक्षमक्षापहं
सीतान्वेषणतत्परं कपिवरं कोटीन्दुसूर्यप्रभम् ।
लङ्काद्वीपभयङ्करं सकलदं सुग्रीवसम्मानितं
देवेन्द्रादिसमस्तदेवविनुतं काकुत्स्थदूतं भजे ॥६१॥

संसारसागरावर्तकर्तव्यभ्रान्तचेतसाम् ।
शरणागतमर्त्यानां शरण्याय नमोऽस्तु ते ॥६२॥

सीतारामपदाम्बुजे मधुपवद्यन्मानसं लीयते
सीतारामगुणावली निशि दिवा यज्जिह्वया पीयते ।

॥श्रीहनुमद्ध्यानम् मार्कण्डेयपुराणतः ॥

मरकतमणिवर्णं दिव्यसौन्दर्यदेहं
नखरदशनशस्त्रैर्वज्रतुल्यैः समेतम् ।

तडिदमलकिरीटं मूर्ध्नि रोमाङ्कितं च
हरितकुसुमभासं नेत्रयुग्मं सुफुल्लम् ॥१॥

अनिशमतुलभक्त्या रामदेवस्य योग्या-
न्निखिलगुरुचरित्राण्यास्यपद्माद्वदन्तम् ।

स्फटिकमणिनिकाशे कुण्डले धारयन्तं
गजकर इव बाहुं रामसेवार्थजातम् ॥२॥

अशनिसमद्रढिम्नं दीर्घवक्षःस्थलं च
नवकमलसुपादं मर्दयन्तं रिपूंश्च ।

हरिदयितवरिष्ठं प्राणसूनुं बलाढ्यं
निखिलगुणसमेतं चिन्तये वानरेशम् ॥३॥

इति मार्कण्डेयपुराणतः श्रीहनुमद्ध्यानम् ।

॥श्रीहनुमत्स्तोत्रम् व्यासतीर्थविरचितम् ॥

नमामि दूतं रामस्य सुखदं च सुरद्रुमम् ।
पीनवृत्तमहाबाहुं सर्वशत्रुनिबर्हणम् ॥१॥
नानारत्नसमायुक्तकुण्डलादिविभूषितम् ।
सर्वदाभीष्टदातारं सतां वै दृढमाहवे ॥२॥
वासिनं चक्रतीर्थस्य दक्षिणस्थगिरौ सदा ।
तुङ्गाम्भोधितरङ्गस्य वातेन परिशोभिते ॥३॥
नानादेशागतैः सद्भिः सेव्यमानं नृपोत्तमैः ।
धूपदीपादिनैवेद्यैः पञ्चखाद्यैश्च शक्तितः ॥४॥
भजामि श्रीहनूमन्तं हेमकान्तिसमप्रभम् ।
व्यासतीर्थयतीन्द्रेण पूजितं प्रणिधानतः ॥५॥
त्रिवारं यः पठेन्नित्यं स्तोत्रं भक्त्या द्विजोत्तमः ।
वाञ्छितं लभतेऽभीष्टं षण्मासाभ्यन्तरे खलु ॥६॥
पुत्रार्थी लभते पुत्रं यशोऽर्थी लभते यशः ।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ॥७॥
सर्वथा मास्तु सन्देहो हरिः साक्षी जगत्पतिः ।
यः करोत्यत्र सन्देहं स याति निरयं ध्रुवम् ॥८॥
इति श्रीव्यासतीर्थविरचितम् हनुमत्स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

॥श्रीहनुमत्स्तोत्रं विभीषणकृतम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ।
नमो हनुमते तुभ्यं नमो मारुतसूनवे ।
नमः श्रीरामभक्ताय श्यामास्याय च ते नमः ॥१॥

नमो वानरवीराय सुग्रीवसख्यकारिणे ।
लङ्काविदाहनार्थाय हेलासागरतारिणे ॥२॥

सीताशोकविनाशाय राममुद्राधराय च ।
रावणान्तकुलच्छेदकारिणे ते नमो नमः ॥३॥

मेघनादमखध्वंसकारिणे ते नमो नमः ।
अशोकवनविध्वंसकारिणे भयहारिणे ॥४॥

वायुपुत्राय वीराय आकाशोदरगामिने ।
वनपालशिरश्छेदलङ्काप्रासादभञ्जिने ॥५॥

ज्वलत्कनकवर्णाय दीर्घलाङ्गूलधारिणे ।
सौमित्रिजयदात्रे च रामदूताय ते नमः ॥६॥

अक्षस्य वधकर्त्रे च ब्रह्मपाशनिवारिणे ।
लक्ष्मणाङ्गमहाशक्तिघातक्षतविनाशिने ॥७॥

रक्षोघ्नाय रिपुघ्नाय भूतघ्नाय च ते नमः ।
ऋक्षवानरवीरौघप्राणदाय नमो नमः ॥८॥

परसैन्यबलघ्नाय शस्त्रास्त्रघ्नाय ते नमः ।
विषघ्नाय द्विषघ्नाय ज्वरघ्नाय च ते नमः ॥९॥

महाभयरिपुघ्नाय भक्तत्राणैककारिणे ।
परप्रेरितमन्त्राणां यन्त्राणां स्तम्भकारिणे ॥१०॥

पयःपाषाणतरणकारणाय नमो नमः ।
बालार्कमण्डलग्रासकारिणे भवतारिणे ॥११॥

नखायुधाय भीमाय दन्तायुधधराय च ।
रिपुमायाविनाशाय रामाज्ञालोकरक्षिणे ॥१२॥

प्रतिग्रामस्थितायाथ रक्षोभूतवधार्थिने ।
करालशैलशस्त्राय द्रुमशस्त्राय ते नमः ॥१३॥

बालैकब्रह्मचर्याय रुद्रमूर्तिधराय च ।
विहङ्गमाय सर्वाय वज्रदेहाय ते नमः ॥१४॥

कौपीनवाससे तुभ्यं रामभक्तिरताय च ।
दक्षिणाशाभास्कराय शतचन्द्रोदयात्मने ॥१५॥

कृत्याक्षतव्यथाघ्नाय सर्वक्लेशहराय च ।
स्वाम्याज्ञापार्थसङ्ग्रामसङ्ख्ये सञ्जयधारिणे ॥१६॥

भक्तान्तदिव्यवादेषु सङ्ग्रामे जयदायिने ।
किल्किलाबुबुकोच्चारघोरशब्दकराय च ॥१७॥

सर्पाग्निव्याधिसंस्तम्भकारिणे वनचारिणे ।
सदा वनफलाहारसन्तृप्ताय विशेषतः ॥१८॥

महार्णवशिलाबद्धसेतुबन्धाय ते नमः ।
वादे विवादे सङ्ग्रामे भये घोरे महावने ॥१९॥

सिंहव्याघ्रादिचौरेभ्यः स्तोत्रपाठाद् भयं न हि ।
दिव्ये भूतभये व्याधौ विषे स्थावरजङ्गमे ॥२०॥

राजशस्त्रभये चोग्रे तथा ग्रहभयेषु च ।
जले सर्वे महावृष्टौ दुर्भिक्षे प्राणसम्प्लवे ॥२१॥

पठेत् स्तोत्रं प्रमुच्येत भयेभ्यः सर्वतो नरः ।
तस्य क्वापि भयं नास्ति हनुमत्स्तवपाठतः ॥२२॥

सर्वदा वै त्रिकालं च पठनीयमिदं स्तवम् ।
सर्वान् कामानवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ॥२३॥

विभीषणकृतं स्तोत्रं ताक्ष्र्येण समुदीरितम् ।
ये पठिष्यन्ति भक्त्या वै सिद्ध्यस्तत्करे स्थिताः ॥२४॥

इति श्रीसुदर्शनसंहितायां विभीषणगरुडसंवादे
विभीषणकृतं हनुमत्स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अक्षय तृतिया (अखातीज 21-अप्रैल-2015)

चिंतन जोशी

अक्षय तृतिया को पूरे भारत वर्ष में कई नामों से जाना और मनाया जाता हैं, जिसमें अक्षय तृतीया, आखा तीज तथा वैशाख तीज प्रमुख हैं। इस वर्ष 2015 में अक्षय तृतीया 21 अप्रैल को हैं।

भारतीय परंपराके अंतर्गत अक्षय तृतिया का पर्व प्रमुख त्यौहारों में से एक हैं। अक्षय तृतिया को अबूझ महूर्त भी कहा जाता हैं।

अक्षय तृतिया पर्व वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतिया तिथि के दिन मनाया जाता हैं। विद्वानो के अनुशार अक्षय तृतिया के दिन स्नान, जप, होम, दान आदि पूण्य कार्य करना विशेष लाभदायक होता हैं। क्योकि मान्यता हैं, कि इस दिन किये गय पुण्य कार्य का फल व्यक्ति को अक्षय रुप में प्राप्त होता हैं।

अक्षय तृतिया के दिन कोई भी शुभ कार्यो का प्रारम्भ करना विशेष शुभ माना जाता हैं। शास्त्रोक्त मतानुशार इस दिन कोई भी शुभ कार्य शुरु करने से उस कार्य का फल निश्चित स्थिर रुप में प्राप्त होते हैं।

शास्त्रो में उल्लेख हैं कि वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतिया अर्थात अक्षय तृतिया के दिन भगवान के नर-नारायण, परशुराम, हयग्रीव रुप में अवतरित हुए थे। इस लिये अक्षय तृतिया को परशुराम व अन्य जयन्तियां मानकर उसे उत्सव रुप में मनाया जाता हैं।

एक पौराणिक मान्यता के अनुसार त्रेता युग की शुरुआत भी इसी दिन से हुई थी. इसी कारण से इसे त्रेतायुगादि तिथि भी कहा जाता हैं।

विद्वानो के अनुशार अक्षय तृतिया के दिन गर्मी के मौसम में खाने-पीने-पहनने आदि काम आने वाली और गर्मी को शांत करने वाली सभी वस्तुओं का दान करना शुभ माना जाता हैं।

- ❖ अक्षय तृतिया के दिन जौ, गेहूं, चने, दही, चावल, खिचडी, ईश (गन्ना) का रस, ठण्डाई व दूध से बने हुए पदार्थ, सोना, कपडे, जल का घडा आदि दान करना भी लाभदायक माना जाता हैं।
- ❖ अक्षय तृतिया के दिन किए गए सभी धर्म कार्य अति उत्तम रहते हैं।
- ❖ अक्षय तृतिया के दिन व्रत-उपवास के लिये भी उत्तम माना जाता हैं।
- ❖ अक्षय तृतिया के दिन देश के कई हिस्सो में चावल, मूंग की बनी खिचडी खाने का रिवाज हैं।
- ❖ अक्षय तृतिया के दिन गंगा स्नान का बडा महत्व माना जाता हैं।

वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतिया को स्वर्गीय आत्माओं की प्रसन्नाता के लिए कलश, पंखा, खडाऊँ, छाता, सत्तू, ककडी, खरबूजा आदि मौसमी फल, शक्कर इत्यादि पदार्थ ब्राह्माण को दान करने का विधान हैं।

अक्षय तृतिया के दिन चारों धामों में से एक श्री बद्रीनाथ नारायण धाम के पाट खुलते हैं।

अक्षय तृतिया (परशुराम तीज)

वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतिया को अक्षय तृतिया के नाम से जानाजाता हैं। इस दिन श्री परशुरामजी का जन्म दिन होने के कारण इसे परशुराम तीज या परशुराम जयंती भी कहा जाता हैं।

अक्षय तृतीया शुभ मुहूर्त

भारत में पौराणिक काल से सभी शुभ कार्य शुभ मुहुर्त एवं शुभ समय पर प्रारंभ करने का प्रचलन हैं।

व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये शुभ मुहुर्त और समय का चुनाव किया जाता हैं।

अप्रैल-2015 के प्रमुख व्रत-पर्व

स्वस्तिक.ऎन.जोशी

प्रदोष व्रत (1 अप्रैल, 16 अप्रैल एवं30 अप्रैल)

प्रदोष व्रत का महत्व

विद्वानों ने प्रदोष व्रत के महत्व को अति व्यापक, सर्वोच्च एवं सर्व श्रेष्ठ बताया हैं, प्रदोष व्रत हर महीने में दो बार शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को प्रदोष व्रत कहते हैं। यदि इन तिथियों को सोमवार होतो उसे सोम प्रदोष व्रत कहते हैं, यदि मंगल वार होतो उसे भौम प्रदोष व्रत कहते हैं और शनिवार होतो उसे शनि प्रदोष व्रत व्रत कहते हैं। विशेष कर सोमवार, मंगलवार एवं शनिवार के प्रदोष व्रत अत्याधिक प्रभावकारी माने गये हैं। इस दिन व्रत रखने का विधान हैं।

प्रदोष व्रत का महत्व कुछ इस प्रकार का बताया गया हैं कि यदि कोई व्यक्ति जिसको सभी तरह के जप, तप और नियम संयम के बाद भी यदि उसके गृहस्थ जीवन में दुःख, संकट, क्लेश आर्थिक परेशानि, पारिवारिक कलह, संतानहीनता या संतान के जन्म के बाद भी यदि नाना प्रकार के कष्ट विघ्न-बाधाएं, रोजगार के साथ सांसारिक जीवन से परेशानिया खत्म नहीं हो रही हैं, तो उस व्यक्ति के लिए प्रति माह में पड़ने वाले दोनो प्रदोष व्रत पर जप, दान, व्रत इत्यादि पूण्य कार्य करना शुभ फलप्रद होता हैं।

ज्योतिष कि द्रष्टि से जो व्यक्ति चंद्रमा के कारण पीडित हो उसे वर्ष भर प्रदोष व्रतों पर चाहे वह किसी भी वारको पडता हो उसे प्रदोष व्रत अवश्य करना चाहिये।

बुधवार का प्रदोष व्रत अर्थात बुध प्रदोष व्रत करने से व्यक्ति कि कामना सिद्ध होती है।

गुरुवार के दिन पडने वाला प्रदोष व्रत विशेष कर संतान कामना हेतु या संतान की मंगल कामना हेतु रखना उत्तम होता हैं। संतानहीन दंपत्तियों के लिए इस व्रत पर घरमें मिष्ठान या फल इत्यादि गाय को खिलाने से शीघ्र शुभ फलकी प्राप्ति होति हैं। संतान कि कामना हेतु 16 प्रदोष व्रत करने का विधान हैं, एवं संतान बाधा में शनि प्रदोष व्रत सबसे उत्तम मनागया हैं। **(1 अप्रैल)** बुधवार का प्रदोष व्रत अर्थात बुध प्रदोष व्रत करने से व्यक्ति कि कामना सिद्ध होती है। **(16 अप्रैल एवं 30 अप्रैल)** संतान कि कामना हेतु प्रदोष व्रत के दिन पति-पत्नी दोनो प्रातः स्नान इत्यादि नित्य कर्म से निवृत होकर शिव, पार्वती और गणेशजी कि एक साथमें आराधना कर किसी भी शिव मंदिर में जाकर शिवलिंग पर जल भिषेक, पीपल के मूल में जल चढ़ाकर सारे दिन निर्जल रहने का विधान हैं।

सूर्यास्त के पश्चात 2 घण्टे एवं 24 मिनट रात्रि के आने से पूर्व का समय प्रदोष काल कहलाता हैं। इस व्रत में भगवान शंकर की पूजा की जाती है। इस व्रत में व्रती को निर्जल रहकर व्रत रखना होता है। प्रात: काल स्नान करके भगवान शिव की बेल पत्र, गंगाजल, अक्षत, धूप, दीप सहित पूजा करें। संध्या काल में पुन: स्नान करके इसी प्रकार से शिव जी की पूजा करना चाहिए। इस प्रकार प्रदोष व्रत करने से व्रती को पुण्य मिलता है।

मदनद्वादशी (1 अप्रैल)

मदनद्वादशी

मदनद्वादशी व्रत चैत्र शुक्ल द्वादशी को किया जाता है । उस दिन स्नान के जल में गुड डाल कर स्नान करके। एक वेदीपर चावलोंसे भरा हुआ कलश स्थापित कर और कलश पर ताँबेके पात्रमें गुड और सुवर्णकी प्रतिमा रखकर उसका गन्ध, पुष्प आदिसे विधिवत पूजन करे । साथ ही अनेक प्रकारके फल, फुल और नैवेद्य अर्पण करे तथा उनमेंसे एक फल लेकर उसको प्रसाद स्वरुप ग्रहण करे । इस प्रकार १३ महीने करे तो उसको पुत्र से संबंधित शोक-संताप नहीं होता ।

चैत्री पूर्णिमा (4 अप्रैल)

चैत्री पूर्णिमा

चैत्र मासकी पूर्णिमाको विष्णुरुप सत्यनारायणका व्रत किया जाता हैं। पूर्णिमा व्रत हेतु चद्रोदयव्यापिनी पूर्णिमा तिथि ली जाती है । इसमे देवपूजन दान - पुण्य, तीर्थ-स्नान, दान-पुण्य, पुराण आदि का श्रवणादि करनेसे पूर्ण फल मिलता है ।

वैशाखस्नान (4 अप्रैल से)

वैशाखस्नान

चैत्र शुक्ल पूर्णिमासे प्रारंभ कर इक्कीस दिनों तक प्रातःकाल सूर्योदयसे पूर्व किसी तीर्थस्थान नदी या कुआँ, बावली, सरोवर या अपने घर पर ही शुद्ध जलसे स्नान करे और नित्य कर्म से निवृत्त होकर अपने इष्ट मन्त्र का यथाशक्ति जप करके एक बार भोजन करने का विधान हैं। इस प्रकार से यह व्रत इक्कीस दिनोंतक नित्य करने से अनेक प्रकारके रोग-शोक-दोष इत्यादि दूर होते हैं। मनुष्य के पुण्य कर्म में वृद्धि होती है ।

हनुमद्व्रत (4 अप्रैल)

हनुमद्व्रत

यह हनुमद्व्रत हनुमानजी की जन्मतिथि पर किया जाता है । हिन्दू संस्कृति में पंचांग के आधार से व्रत-पर्व-त्यौहारों का निर्णय किया जाता है, इस आधार पर श्री हनुमानजीकी जन्मतिथि किसी धर्म ग्रंथ में चैत्र शुक्ल पूर्णिमा और किसी में कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी का वर्णन मिलता है।

प्रायः सभी देवी-देवता की जन्मतिथि एक ही मानाया जाता हैं, लेकिन श्री हनुमानजीकी जन्म दो तिथियों को मानाया जाता हैं। विभिन्न धार्मिक ग्रंथो में हनुमानजी की दोनो जन्म तिथियों का वर्णन किया गया हैं, लेकिन उसके अर्थो में भिन्नता हैं। तिथि की भिन्न ता कल्पभेद के कारण दो मानी जाती हैं। किसी धर्म ग्रंथ में वर्णित हैं की हनुमानजी का जन्म कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी, मंगलवार को स्वाती नक्षत्र एवं मेष लग्न में हुवा था । अन्य धर्म ग्रंथ में वर्णित हैं की हनुमानजी का जन्म चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, मंगलवार को हुवा था । यहि कारण हैं की हनुमानजी के भक्तों द्वारा इन दोनों तिथियों को व्रत-उपवास इत्यादि किया जाता हैं।

संकष्टचतुर्थी (8 अप्रैल)

संकष्टचतुर्थी

वैशाख मास की चतुर्थी को संकष्टी गणेश का पूजा कर ब्राह्मणों को शंख का दान करना चाहिए। इसके प्रभाव से मनुष्य समस्त लोक में कल्पों तक सुख प्राप्त करता है।

संकष्टचतुर्थी (22 अप्रैल)

वैशाख शुक्ल चतुर्थी

वैशाख मास की कृष्ण चतुर्थी को श्रीकृष्णपिंगाक्ष गणपति का पूजन किया जाता हैं।

चण्डिका नवमी व्रत (13 अप्रैल एवं 27 अप्रैल)

चण्डिका नवमी व्रत

यह व्रत वैशाख मास की दोनों पक्षोंमे नवमी तिथि को किया जाता है । व्रती को प्रातःस्नान इत्यादि से निवृत्त होकर लाल वस्त्र धारण कर सुगन्धित पुष्पादिसे चण्डिका देवीका विधि-विधान से पूजन करके उपवास रखने से सुख की प्राप्ति होती हैं

हंसकुन्देन्दुसन्काशस्तेजसा ध्रुवसंनिभः।
विमानवरमारुढो देवलोके महीयते ॥
(निर्णयामृते भविष्योत्तरे)

अर्थातः मनुष्य हंस, कुन्द और चन्द्रमाके समान गौरवर्ण एवं ध्रुवके समान तेजस्वी और दिव्य स्वरुप धारणकर उत्तम विमानपर विराजित हो कर देवलोकमें आदर पाता है ।

परशुराम जयन्ती (20 अप्रैल)

परशुराम जयन्ती

धर्म ग्रंथों में वर्णित हैं की परशुरामजीका जन्म वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि को रात्रिके प्रथम प्रहरमें हुआ था, इस अलिए प्रदोषव्यापिनी तिथि ग्राह्य होती है । जानकार विद्वानों के मतानुसार यदि दो दिन प्रदोषव्यापिनी तिथि हो तो दूसरा व्रत करना चाहिये ।

श्रीजानकी नवमी (27 अप्रैल)

श्रीजानकी नवमी

विद्वानों के मतानुसार वैशाख शुक्ल नवमीको देवी भगवती जानकीका प्रादुर्भाव हुआ था । इस लिए इस दिन व्रत रहकर उनका जन्मोत्सव तथा पूजन किया जता हैं।

***

वरुथिनी एकादशी 15 अप्रैल 2015

✍ स्वस्तिक.ऎन.जोशी

कृष्णपक्ष की एकादशी 15 अप्रैल 2015

वैसाख : कृष्ण पक्ष एकादशी व्रत

अर्जुन बोले - 'हे भगवन् ! वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का क्या नाम है ! तथा उसकी विधि क्या है ! और उसने कौन से फल की प्राप्ति होती है !, यह सब कृपा पूर्वक सविस्तार से कहिए ।

भगवान श्रीकृष्ण बोले - 'हे अर्जुन ! वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम "वरुथिनी" है । यह सौभाग्य प्रदान करने वाली है । इसका व्रत करने से मनुष्य के सभी पाप नष्ट होते हैं । यदि इस व्रत को दुःखी सुहागीन स्त्री करती है तो उसे सौभाग्य की प्राप्ति होती है । वरुथिनी के प्रभाव से ही राजा मांधाता को स्वर्ग प्राप्त हुआ था । इसी प्रकार धुंधुमार आदि को भी स्वर्ग की प्राप्ति हुआ था।

"वरुथिनी एकादशी के व्रत का फल दस सहस्त्र वर्ष तपस्या करने के फल के बराबर है ।"

कुरुक्षेत्र में सूर्य ग्रहण के समय जो फल एक बार स्वर्ण दान करने से प्राप्त होता है, वही फल बरुथिनी एकादशी का व्रत करने से प्राप्त होता है । इस व्रत से मनुष्य इस लोक और परलोक दोनों में सुख को प्राप्त करता हैं व अन्त में स्वर्ग को प्राप्त करते हैं ।"

'हे राजन् ! इस एकादशी का व्रत करने से मनुष्य को इस लोक में सुख और परलोक में मुक्ति की प्राप्ति होती है ।

शास्त्रों में वर्णित हैं कि घोड़े के दान से हाथी का दान उत्तम है और हाथी के दान से भूमि का दान उत्तम है, उससे उत्तम तिल का दान है ।

तिल से उत्तम है सोने का दान और सोने के दान से अन्नदान उत्तम है ।

संसार में अन्नदान के बराबर और कोई दान नहीं है । अन्नदान दान से पितृ, देवता, मनुष्य आदि सब तृप्त होते हैं । शास्त्रों में कन्यादान को अन्नदान के बराबर माना गया है । वरुथिनी एकादशी के व्रत से मनुष्य को अन्न तथा कन्यादान दानो प्रकार के उत्तम फल मिलता है।

यदि कोई मनुष्य लोभ वश होकर कन्या का धन ले लेते हैं या आलस्य और चोरी से किसी कन्या के धन का हरण करते हैं, वे जीवन के अन्त तक नरक भोगते रहते हैं या उनको अगले जन्म में जानवर योनि में कष्ट भोगना पड़ता है ।

जो मनुष्य सप्रेम से एवं यज्ञ सहित कन्यादान करते हैं उनके पुण्य को चित्रगुप्त भी लिखने में असमर्थ हो जाते हैं । जो मनुष्य इस वरुथिनी एकादशी का व्रत करते हैं, उनको कन्यादान के समान फल मिलता है ।

विद्वानों के मतानुसार वरुथिनी एकादशी का व्रत करने वाले को दशमी के दिन से निम्नलिखित वस्तुओं का त्याग कर देना चाहिए –

1. कांसे के बर्तन में भोजन करना,
2. मांस,
3. चना व मसूर की दाल,
4. शाक,
5. मधु (शहद),
6. दूसरी बार का भोजन का त्याग करें।
7. तेल तथा अन्न भक्षण भी वर्जित माना गया है ।

एकादशी व्रत हेतु पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए । रात्रिशयन न करके सारा समय शास्त्र चिंतन और भजन-कीर्तन आदि में लगाना चाहिए । दूसरों की निंदा तथा दुष्ट और पापी लोगों की संगत भी नहीं करनी चाहिए । क्रोध करना या असत्य बोलना भी वर्जित है ।

हे राजन् ! जो मनुष्य एकादशी का विधिपूर्वक व्रत करते हैं, उनको स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है । इस व्रत के माहात्म्य को श्रवण करने या पढ़ने से एक सहस्त्र गौदान का फल प्राप्त होता है। इसका फल गंगा स्नान करने के फल से भी अधिक माना गया है ।

मोहिनी एकादशी 29 अप्रैल 2015

स्वस्तिक.ऎन.जोशी

मोहिनी एकादशी 29 अप्रैल 2015

वैशाख शुक्ल एकादशी व्रत

वैशाख शुक्ल एकादशीको मोहिनी एकादशी कहा जाता हैं। विद्वानों के मतानुशार मोहिनी एकादशी के व्रत से मनुष्य के मोह-माया एवं पाप कर्म दूर होते हैं । धर्म शास्त्रों में वर्णित हैं की श्री रामजी ने सीताजीकी खोज करते समय इस व्रतको किया था एवं श्रीकृष्णके कहनेसे युधिष्ठिर ने भी किया था। इस कलयुग में इस व्रतका बड़ा महत्व माना जाता हैं। इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य के खोये हुवे सुख-शाधनों की पुनः प्राप्ति हो कर मृत्यु उपरांत स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती हैं।

अर्जुन बोले - 'हे भगवन् ! वैशाख मास की शुक्लपक्ष की एकादशी का क्या नाम है ! तथा उसकी विधि क्या है ! और उसने कौन से फल की प्राप्ति होती है ! यह सब कृपा पूर्वक सविस्तार से कहिए ।

भगवान् श्री कृष्ण बोले - 'हे अर्जुन ! मैं एक तुम्हें पुरातन कथा कहता हूं, जिसको महर्षि वशिष्ठजी ने श्रीरामचन्द्रजी से कहीं थी । तुम इसे ध्यानपूर्वक सुनो, एक समय की बात है, श्रीरामचन्द्रजी महर्षि वशिष्ठ से बोले - हे गुरुदेव! मैंने सीताजी के वियोग में बहुत दुःख भोगे हैं । अतः मेरे दुःखों का नाश किस प्रकार होगा ? आप मुझे कोई ऐसा व्रत बताएं, जिससे मेरे समस्त पाप और दुःख का नास हो जायें । महर्षि वशिष्ठजी बोले - 'हे राम ! आपने बहुत उत्तम प्रश्न किया है । आपके नाम के स्मरण मात्र से ही मनुष्य पवित्र हो जाता है । आपने लोकहित में यह बड़ा ही उत्तम प्रश्न किया है । मैं आपको मोहिनी एकादशी व्रत का महत्त्व सुनाता हूं - वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम मोहिनी है । इस एकादशी का व्रत करने से मनुष्य के समस्त पाप तथा दुःख-संताप नष्ट हो जाते हैं । इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य मोह के जाल से छूट जाता है ।

अतः हे राम ! दुःख-संताप से पीड़ित मनुष्य को इस एकादशी का व्रत अवश्य ही करना चाहिए । इस व्रत के करने से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं । अब आप इसकी कथा को ध्यानपूर्वक सुनिए –

सरस्वती नदी के किनारे भद्रावती नाम की एक नगरी है । उस नगरी में द्युतिमान नाम राजा राज्य करता था । उसी नगरी में एक वैश्य रहता था, जो धन-धान्य से पूर्ण था । उसका नाम धनपाल था । वह अत्यन्त धर्मात्मा तथा विष्णुभक्त था । उसने नगर में अनेक कुआं, तालाब, भोजनशाला, धर्मशाला आदि बनवाये, सड़कों किनारे पथिकों को सुख के लिए अनेक आम, जामुन, नीम आदि के वृक्ष लगवाये । उस वैश्य के पांच पुत्र थे जिनमें से सबसे बड़ा पुत्र अत्यन्त पापी व दुष्ट था । वह वेश्याओं और दुष्टों की संगति करता था और यदि समय बचता था, उसे वह जुआ खेलने में व्यतीत करता था । वह बड़ा ही नीच था और देवता, पितृ आदि किसी को भी नहीं मानता था । अपने पिता का अधिकांश धन वह बुरे व्यसनों में ही व्यय किया करता था । मद्यपान तथा मांस का भक्षण करना उसका नित्य का कर्म था । जब काफी समझाने-बुझाने पर भी वह सीधे रास्ते पर नहीं आया तो दुःखी होकर उसके पिता, भाइयों तथा कुटुम्बियों ने उसे घर से निकाल दिया और उसकी निन्दा करने लगे ।

घर से निकलने के बाद उसने अपने आभूषणों तथा वस्त्रों को बेच-बेचकर अपना गुजारा किया। धन नष्ट हो जाने पर वेश्याओं तथा उसके दुष्ट साथियों ने भी उसका साथ छोड़ दिया । जब वह भूख-प्यास से दुःखी हो गया तो उसने चोरी करने का विचार किया और रातों में चोरी कर-करके अपना पेट पालने लगा । एक दिन वह पकड़ा गया, परन्तु सिपाहियों ने वैश्य का पुत्र जानकर छोड़ दिया । वह दूसरी बार फिर पकड़ा गया, तब सिपाहियों ने भी उसका कोई लिहाज नहीं किया और राजा के सामने प्रस्तुत करके उसे सारी बात बताई । तब राजा ने उसे कारागार में डलवा दिया । कारागार में राजा के आदेश से उसे बहुत दुःख दिये गये और अन्त में उसे नगर छोड़ने को कहा गया ।

वह दुःखी होकर नगरी को छोड़ गया और जंगल में पशु-पक्षियों को मार कर पेट भरने लगा। फिर बहेलिया बन गया और धनुष-बाण से पशुओं-पक्षियों को मार-मार कर खाने और बेचने लगा।

एक दिन वह भूख और प्यास से व्याकुल होकर भोजन की खोज में निकल पड़ा और कोटिन्य ऋषि के आश्रम पर जा पहुंचा। इस समय वैसाख का महीना था। कौटिन्य ऋषि गंगा स्नान करके आये थे। उनके भीगे वस्त्रों के छींटे मात्र से इस पापी को कुछ सुबुद्धि की प्राप्ति हुई।

वह पापी, मुनि के पास जाकर हाथ जोड़कर कहने लगा - "हे मुनि ! मैंने अपने जीवन में बहुत पाप किये हैं, आप उन पापों से छूटने का कोई साधारण और बिना धन का उपाय बतलाइये।"

तब ऋषि बोले - 'तू ध्नान देकर सुन - वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का व्रत कर। इस एकादशी का नाम मोहिनी है। इसके करने से तेरे समस्त पाप नष्ट हो जायेंगे।" मुनि के वचनों को सुनकर वह बहुत प्रसन्न हुआ और मुनि की बतलाई हुई विधि के अनुसार उसने मोहिनी एकादशी का व्रत किया।

'हे रामजी ! उस व्रत के प्रभाव से उसके समस्त पाप नष्ट हो गये और अन्त में वह गरुड़ पर विराजित होकर विष्णु लोक को गया। इस व्रत से मोह आदि भी नष्ट हो जाते हैं। संसार में इस व्रत से अन्य श्रेष्ठ कोई व्रत नहीं है। इसके माहात्म्य के श्रवण व पठन से जो पुण्य होता है, वह पुण्य एक सहस्त्र गौदान के पुण्य के बराबर है।

***

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

मंत्र सिद्ध गोमति चक्र

 Premium Quality Very Rare Gomati Chakra Big Size 1 Weight 36 Gram Gomti... 30% Off ~~Rs. 820.00~~ Offer Price : Rs. 574.00	 Premium Quality Very Rare Gomati Chakra Big Size 1 Weight 27 Gram Gomti... 30% Off ~~Rs. 640.00~~ Offer Price : Rs. 448.00	 Premium Quality Very Rare Gomati Chakra Big Size 1 Weight 21 Gram Gomti... 30% Off ~~Rs. 550.00~~ Offer Price : Rs. 385.00	 Premium Quality Very Rare Gomati Chakra Big Size 1 Weight 18 Gram Gomti... 30% Off ~~Rs. 501.00~~ Offer Price : Rs. 350.70
 Premium Q 11 PCS Very Rare Gomati Chakra Big Each 1 Weight 7 Gram 30% Off ~~Rs. 1100.00~~ Offer Price: Rs. 770.00	 Premium Q 11 PCS Very Rare Gomati Chakra Big Each 1 Weight 6 Gram ... 30% Off ~~Rs. 910.00~~ Offer Price: Rs. 637.00	 Premium Q Very Rare Gomati Chakra Big Size Weight 11 Gram ... 30% Off ~~Rs. 460.00~~ Offer Price: Rs. 322.00	 Premium Q Very Rare Gomati Chakra Big Size Weight 10 Gram ... 30% Off ~~Rs. 251.00~~ Offer Price: Rs. 175.70
 Premium Q Very Rare Gomati Chakra Big 8 Gram ... 30% Off ~~Rs. 151.00~~ Offer Price: Rs. 105.70	 Premium Q Gomati Chakra 7pcs Big Each 4.5Gram 30% Off ~~Rs. 251.00~~ Offer Price: Rs. 175.70	 Premium Q 3 PCS Very Rare Gomati Chakra 7 Gram Each.. 30% Off ~~Rs. 251.00~~ Offer Price: Rs. 175.70	 Rakt Gunja 51 Pcs + Free 11 Pcs Gomti Chakra... 30% Off ~~Rs. 221.00~~ Offer Price: Rs. 154.70
 Gomti Chakra 11 Pcs+11 Pcs Rakt Gunja+11 White Cowrie.. 30% Off ~~Rs. 201.00~~ Offer Price: Rs. 140.70	 Gomti Chakra 11 Pcs Gomati Chakra Sudarshan Chakra...... 30% Off ~~Rs. 101.00~~ Offer Price: Rs. 70.70	* हमारें यहां विभिन्न प्रकार की समस्याओं के निवारण हेतु मंत्र सिद्ध गोमति चक्र में उपलब्ध हैं। * बिना मंत्र सिद्ध किये हुवे गोमति चक्र थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं। **GURUTVA KARYALAY** **Call Us:** 91 + 9338213418, 91 + 9238328785. **Email Us:** gurutva_karyalay@yahoo.in gurutva.karyalay@gmail.com **Visit Us:** www.gurutvakaryalay.com	

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षो के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र >> Shop Online | Order Now

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इस लिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-** >> Shop Online | Order Now

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

>> **Shop Online** | **Order Now**

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ORISSA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

अप्रैल 2015 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	बुध	चैत्र	शुक्ल	द्वादशी	10:09:05	मघा	14:46:35	शूल	13:39:05	बालव	10:09:05	सिंह	-
2	गुरु	चैत्र	शुक्ल	त्रयोदशी	12:47:18	पूर्वाफाल्गुनी	17:52:00	गंड	14:39:48	तैतिल	12:47:18	सिंह	24:38:00
3	शुक्र	चैत्र	शुक्ल	चतुर्दशी	15:18:02	उत्तराफाल्गुनी	20:50:51	वृद्धि	15:35:51	वणिज	15:18:02	कन्या	-
4	शनि	चैत्र	शुक्ल	पूर्णिमा	17:35:39	हस्त	23:35:39	ध्रुव	16:21:35	बव	17:35:39	कन्या	-
5	रवि	वैशाख	कृष्ण	एकम	19:34:30	चित्रा	26:01:42	व्याघात	16:55:08	बालव	06:37:19	कन्या	12:51:00
6	सोम	वैशाख	कृष्ण	द्वितीया	21:10:52	स्वाती	28:04:19	हर्षण	17:09:56	तैतिल	08:25:52	तुला	-
7	मंगल	वैशाख	कृष्ण	तृतीया	22:20:04	विशाखा	29:42:34	वज्र	17:05:04	वणिज	09:49:07	तुला	23:21:00
8	बुध	वैशाख	कृष्ण	चतुर्थी	23:02:04	अनुराधा	30:51:45	सिद्धि	16:39:34	बव	10:45:11	वृश्चिक	-
9	गुरु	वैशाख	कृष्ण	पंचमी	23:12:12	अनुराधा	06:51:35	व्यतिपात	15:50:38	कौलव	11:11:16	वृश्चिक	-
10	शुक्र	वैशाख	कृष्ण	षष्ठी	22:50:28	जेष्ठा	07:29:51	वरियान	14:35:28	गर	11:05:28	वृश्चिक	07:30:00
11	शनि	वैशाख	कृष्ण	सप्तमी	21:55:00	मूल	07:36:15	परिग्रह	12:55:00	विष्टि	10:25:56	धनु	-
12	रवि	वैशाख	कृष्ण	अष्टमी	20:26:43	पूर्वाषाढ़	07:10:47	शिव	10:49:13	बालव	09:14:32	धनु	12:59:00
13	सोम	वैशाख	कृष्ण	नवमी	18:28:27	उत्तराषाढ़	06:12:31	सिद्ध	08:17:12	तैतिल	07:32:12	मकर	-
14	मंगल	वैशाख	कृष्ण	दशमी	16:03:00	धनिष्ठा	26:54:34	शुभ	26:05:49	विष्टि	16:03:00	मकर	15:54:00



15	बुध	वैशाख	कृष्ण	एकादशी	13:15:04	शतभिषा	24:44:07	शुक्ल	22:32:52	बालव	13:15:04	कुंभ	-
16	गुरु	वैशाख	कृष्ण	द्वादशी-त्रयोदशी	10:08:23	पूर्वाभाद्रपद	22:18:42	ब्रह्म	18:48:42	तैतिल	10:08:23	कुंभ	16:56:00
17	शुक्र	वैशाख	कृष्ण	त्रयोदशी - चतुर्दशी	06:53:16	उत्तराभाद्रपद	19:48:35	इन्द्र	14:59:50	वणिज	06:53:16	मीन	-
18	शनि	वैशाख	कृष्ण	अमावस्या	24:27:52	रेवति	17:22:14	वैधृति	11:11:56	चतुष्पाद	14:00:41	मीन	17:23:00
19	रवि	वैशाख	शुक्ल	एकम	21:32:28	अश्विनी	15:09:58	विषकुंभ	07:32:28	किस्तुघ्न	10:57:47	मेष	-
20	सोम	वैशाख	शुक्ल	द्वितीया	19:02:24	भरणी	13:17:24	आयुष्मान	25:06:09	बालव	08:14:35	मेष	18:54:00
21	मंगल	वैशाख	शुक्ल	तृतीया	17:07:01	कृतिका	11:56:42	सौभाग्य	22:34:12	तैतिल	05:59:31	वृष	-
22	बुध	वैशाख	शुक्ल	चतुर्थी	15:49:09	रोहिणि	11:14:28	शोभन	20:36:02	विष्टि	15:49:09	वृष	23:10:00
23	गुरु	वैशाख	शुक्ल	पंचमी	15:18:11	मृगशिरा	11:16:18	अतिगंड	19:13:30	बालव	15:18:11	मिथुन	-
24	शुक्र	वैशाख	शुक्ल	षष्ठी	15:35:58	आद्रा	12:05:58	सुकर्मा	18:28:28	तैतिल	15:35:58	मिथुन	-
25	शनि	वैशाख	शुक्ल	सप्तमी	16:38:46	पुनर्वसु	13:39:42	धृति	18:20:01	वणिज	16:38:46	मिथुन	07:12:00
26	रवि	वैशाख	शुक्ल	अष्टमी	18:21:54	पुष्य	15:53:46	शूल	18:41:35	बव	18:21:54	कर्क	-
27	सोम	वैशाख	शुक्ल	नवमी	20:35:58	आश्लेषा	18:37:51	गंड	19:26:36	बालव	07:25:39	कर्क	18:38:00
28	मंगल	वैशाख	शुक्ल	दशमी	23:06:56	मघा	21:39:45	वृद्धि	20:25:41	तैतिल	09:50:04	सिंह	-
29	बुध	वैशाख	शुक्ल	एकादशी	25:41:40	पूर्वाफाल्गुनी	24:47:18	ध्रुव	21:30:25	वणिज	12:24:48	सिंह	-
30	गुरु	वैशाख	शुक्ल	द्वादशी	28:08:55	उत्तराफाल्गुनी	27:46:25	व्याघात	22:28:36	बव	14:58:36	सिंह	-

अप्रैल 2015 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	बुध	चैत्र	शुक्ल	द्वादशी	10:09:05	मदन द्वादशी, प्रदोष व्रत, हरि दमनोत्सव, वामन द्वादशी
2	गुरु	चैत्र	शुक्ल	त्रयोदशी	12:47:18	श्री महावीर जयन्ती (जैन), अनंग त्रयोदशी व्रत, दमनक चतुर्दशी
3	शुक्र	चैत्र	शुक्ल	चतुर्दशी	15:18:02	-
4	शनि	चैत्र	शुक्ल	पूर्णिमा	17:35:39	स्नान-दान-व्रत इत्यादि हेतु उत्तम चैत्री पूर्णिमा, चांडक पूजा (प.बं), अन्वाधान, मन्वादि, सर्वदेव दमनकोत्सव, श्री हनुमान जयंती इष्टि, ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण, वैशाख मासीय व्रत-यम-नियमादि प्रारम्भ,
5	रवि	वैशाख	कृष्ण	एकम	19:34:30	वैशाख कृष्ण पक्षारम्भ,
6	सोम	वैशाख	कृष्ण	द्वितीया	21:10:52	आशा द्वितीया
7	मंगल	वैशाख	कृष्ण	तृतीया	22:20:04	-
8	बुध	वैशाख	कृष्ण	चतुर्थी	23:02:04	संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (चन्द्रोदय.रा.9.44), सती अनसुइया जयन्ती, सिद्धयोग संकष्ट चतुर्थी
9	गुरु	वैशाख	कृष्ण	पंचमी	23:12:12	-
10	शुक्र	वैशाख	कृष्ण	षष्ठी	22:50:28	-
11	शनि	वैशाख	कृष्ण	सप्तमी	21:55:00	श्री शीतलासप्तमी व्रत,, कालाष्टमी, भानु सप्तमी
12	रवि	वैशाख	कृष्ण	अष्टमी	20:26:43	श्री शीतलाष्टमी व्रत, अष्टका, कालाष्टमी
13	सोम	वैशाख	कृष्ण	नवमी	18:28:27	चण्डिका नवमी व्रत
14	मंगल	वैशाख	कृष्ण	दशमी	16:03:00	सूर्य अश्विनी नक्षत्र में एवं सूर्य की मेष संक्रान्ति दोपहर 01:01 बजे, संक्रान्ति का सामान्य पुण्यकाल प्रातः 06.37 बजे से सूर्यास्त तक, विशेष पुण्यकाल सुबह 09.01 बजे से सांय 05.01 बजे तक, मीन मास (खरमास) समाप्त, डॉ.भीमराव अम्बेडकर जयन्ती,

15	बुध	वैशाख	कृष्ण	एकादशी	13:15:04	वरुथिनी एकादशी व्रत सबका, सौर (मेष) वैशाख मासारम्भ,
16	गुरु	वैशाख	कृष्ण	द्वादशी-त्रयोदशी	10:08:23	प्रदोष व्रत,
17	शुक्र	वैशाख	कृष्ण	त्रयोदशी - चतुर्दशी	06:53:16	मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी
18	शनि	वैशाख	कृष्ण	अमावस्या	24:27:52	स्नान-दान-श्राद्धादि हेतु उत्तम अमावस्या, पुण्य अमावस्या, देवपितृ कार्य अमावस्या
19	रवि	वैशाख	शुक्ल	एकम	21:32:28	-
20	सोम	वैशाख	शुक्ल	द्वितीया	19:02:24	भगवान परशुराम जयन्ती (प्रदोष काल व्यापिनी तृतीया में), छत्रपति शिवा जी जयन्ती, सूर्य सायन वृष राशि में 14.54 बजे,
21	मंगल	वैशाख	शुक्ल	तृतीया	17:07:01	अक्षय तृतीया (रोहिणी नक्षत्रयुता), त्रेतायुगादि, कल्पादि, राष्ट्रीय वैशाख मासारम्भ,
22	बुध	वैशाख	शुक्ल	चतुर्थी	15:49:09	वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (चन्द्र अस्त रात 10.04 बजे)
23	गुरु	वैशाख	शुक्ल	पंचमी	15:18:11	श्री आद्य शंकराचार्य जयन्ती, श्री सूरदास जयन्ती, श्री रामानुजाचार्य जयन्ती (द.भा),
24	शुक्र	वैशाख	शुक्ल	षष्ठी	15:35:58	श्री रामानुजाचार्य जयन्ती (उ.भा), चन्दन षष्ठी (प.बं)
25	शनि	वैशाख	शुक्ल	सप्तमी	16:38:46	श्री गंगा सप्तमी, गंगोत्पत्ति, गंगावतरण (मध्यान्ह में गंगा पूजन), गंगा जन्म लग्न (वृष),
26	रवि	वैशाख	शुक्ल	अष्टमी	18:21:54	श्री दुर्गाष्टमी व्रत, श्री बगलामुखी जयन्ती,
27	सोम	वैशाख	शुक्ल	नवमी	20:35:58	श्री सीता नवमी, वैष्णव मतानुसार श्री जानकी जयन्ती, चण्डिका नवमी व्रत, श्री हरि जयन्ती, त्रिचूर पूरम (केर.),
28	मंगल	वैशाख	शुक्ल	दशमी	23:06:56	-
29	बुध	वैशाख	शुक्ल	एकादशी	25:41:40	मोहिनी एकादशी व्रत,
30	गुरु	वैशाख	शुक्ल	द्वादशी	28:08:55	परशुराम द्वादशी, रुक्मिणी द्वादशी, प्रदोष

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र



शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 2350, 2800, 3250, 3700, 4600, 5500 से 10,900 तक अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

>> **Shop Online** | **Order Now**

GURUTVA KARYALAY

92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। **मूल्य Rs- 255 से 10900 तक**

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। **मूल्य Rs- 730 से 10900 तक**

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र

मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	पुत्र प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रह्माण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1” X 1”	460	1” X 1”	370	1” X 1”	255
2” X 2”	820	2” X 2”	640	2” X 2”	460
3” X 3”	1650	3” X 3”	1050	3” X 3”	730
4” X 4”	2350	4” X 4”	1450	4” X 4”	1050
6” X 6”	3700	6” X 6”	2800	6” X 6”	1900
9” X 9”	7300	9” X 9”	4600	9” X 9”	3250
12” X12”	12700	12” X12”	9100	12” X12”	7300

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	**Diamond (Special)**	**Green Emerald (Special)**	**Naturel Pearl (Special)**	**Ruby (Old Berma) (Special)**	**Green Emerald (Special)**
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	**Red Coral (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध रूद्राक्ष

Rudraksh List	Rate In Indian Rupee	Rudraksh List	Rate In Indian Rupee
एकमुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	730 to 3700	नौ मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	1900 to 4600
दो मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	55 to 280	दस मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	2350 to 5500
तीन मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	55 to 280	ग्यारह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	2800 to 5500
चार मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	55 to 190	बारह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	3700 to 7300
पंच मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	55 to 370	तेरह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	5500 to 14500
छह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	55 to 190	चौदह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	21000 to 41500
सात मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	460 to 730	गौरीशंकर रूद्राक्ष (नेपाल)	3700 to 14500
आठ मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	1900 to 460	गणेश रुद्राक्ष (नेपाल)	730 to 1450

* मूल्य में अंतर रुद्राक्ष के आकार और गुणवत्ता के अनुसार अलग-अलग होते हैं। उपरोक्त मूल्य छोटे से बड़े आकार के अनुरुप दर्शाये गये हैं। कभी-कभी संभावित हैं की छोटे आकार के उत्तम गुणवत्ता वाले रुद्राक्ष अधिक मूल्य में प्राप्त हो सकते हैं।

विशेष सूचना: बाजार की स्थिति के अनुसार, रूद्राक्ष मूल्य, दिन-ब-दिन बदलते रहते है, जिस कारण हमारी मूल्य सूची में भी बाजार की स्थिति के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं, कृप्या रुद्राक्ष के लिए अपना भुगतान भेजने से पहले रुद्राक्ष के नयी मूल्य सूची हेतु हम से संपर्क करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्‌भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‌भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 730 से Rs. 10900 तक उप्लब्द्ध

>> Shop Online | Order Now

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राह्मणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्र: 1900 >>Order Now

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र



श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)

घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 1650 से Rs. 10900 तक उप्लब्द्ध** >> **Shop Online** | **Order Now**

अप्रैल 2015-विशेष योग			
कार्य सिद्धि योग			
08	सूर्योदय से दिन रात	21	सूर्योदय से दिन 03.10 तक
09	सूर्योदय से 06.52 तक	22	सूर्योदय से दिन रात
12	सुबह 07.11 से देर रात्रि 06.17 तक	24	दिन 12.16 से देर रात्रि 05.28 तक
13	सुबह 06.13 से देर रात्रि 04.47 तक	26	सूर्योदय से दिन 03.54 तक
17	सायं 07.49 से देर रात्रि 05.34 तक		
त्रिपुष्कर योग (तीनगुना फल दायक)		**द्विपुष्कर योग (दौ गुना फल दायक)**	
25	प्रात: 05.28 से दिन 01.40 तक	05	सायं 07:36 से देर रात्रि 02:02 तक
विघ्नकारक भद्रा			
03	दिन 03.19 से देर रात्रि 04.28 तक	17	प्रात: 06.55 से सायं 05.17 तक
04	प्रात: 09.50 से रात्रि 10.22 तक	21	रात्रि 04.29 से 22 अप्रैल को दिन 03.51 तक
10	रात्रि 10.51 से 11 अप्रैल को प्रात: 10.27 तक	25	दिन 04.39 से 26 अप्रैल को प्रात: 05.31 तक
13	रात्रि 05.17 से 14 अप्रैल को दिन 04.04 तक	29	दिन 12.26 से देर रात्रि 01.44 तक

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- द्विपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ दोगुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

वार	गुलिक काल (शुभ) समय अवधि	यम काल (अशुभ) समय अवधि	राहु काल (अशुभ) समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुशार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

ग्रह चलन अप्रैल-2015

Day	Sun	Mon	Ma	Me	Jup	Ven	Sat	Rah	Ket	Ua	Nep	Plu
1	11:16:52	04:08:46	00:06:09	11:07:40	03:18:36	00:23:23	07:10:36	05:15:55	11:15:55	11:22:03	10:14:25	08:21:24
2	11:17:51	04:20:34	00:06:54	11:09:34	03:18:35	00:24:34	07:10:34	05:15:56	11:15:56	11:22:07	10:14:27	08:21:24
3	11:18:50	05:02:24	00:07:38	11:11:30	03:18:34	00:25:45	07:10:32	05:15:56	11:15:56	11:22:10	10:14:29	08:21:25
4	11:19:50	05:14:18	00:08:22	11:13:26	03:18:33	00:26:56	07:10:30	05:15:56	11:15:56	11:22:14	10:14:31	08:21:25
5	11:20:49	05:26:18	00:09:07	11:15:24	03:18:32	00:28:07	07:10:28	05:15:56	11:15:56	11:22:17	10:14:33	08:21:26
6	11:21:48	06:08:26	00:09:51	11:17:24	03:18:31	00:29:18	07:10:26	05:15:55	11:15:55	11:22:21	10:14:35	08:21:26
7	11:22:47	06:20:44	00:10:35	11:19:24	03:18:31	01:00:28	07:10:24	05:15:55	11:15:55	11:22:24	10:14:37	08:21:26
8	11:23:46	07:03:13	00:11:19	11:21:26	03:18:31	01:01:39	07:10:22	05:15:54	11:15:54	11:22:27	10:14:38	08:21:27
9	11:24:45	07:15:56	00:12:03	11:23:29	03:18:31	01:02:49	07:10:19	05:15:53	11:15:53	11:22:31	10:14:40	08:21:27
10	11:25:44	07:28:54	00:12:47	11:25:33	03:18:31	01:04:00	07:10:17	05:15:52	11:15:52	11:22:34	10:14:42	08:21:27
11	11:26:43	08:12:09	00:13:31	11:27:38	03:18:31	01:05:10	07:10:14	05:15:51	11:15:51	11:22:38	10:14:44	08:21:27
12	11:27:42	08:25:42	00:14:15	11:29:43	03:18:32	01:06:20	07:10:12	05:15:50	11:15:50	11:22:41	10:14:46	08:21:28
13	11:28:40	09:09:35	00:14:59	00:01:49	03:18:32	01:07:30	07:10:09	05:15:51	11:15:51	11:22:44	10:14:48	08:21:28
14	11:29:39	09:23:46	00:15:43	00:03:55	03:18:33	01:08:40	07:10:06	05:15:51	11:15:51	11:22:48	10:14:49	08:21:28
15	00:00:38	10:08:14	00:16:27	00:06:01	03:18:34	01:09:50	07:10:03	05:15:52	11:15:52	11:22:51	10:14:51	08:21:28
16	00:01:37	10:22:56	00:17:11	00:08:07	03:18:36	01:11:00	07:10:00	05:15:53	11:15:53	11:22:55	10:14:53	08:21:28
17	00:02:36	11:07:47	00:17:54	00:10:13	03:18:37	01:12:09	07:09:57	05:15:54	11:15:54	11:22:58	10:14:54	08:21:28
18	00:03:34	11:22:40	00:18:38	00:12:18	03:18:39	01:13:19	07:09:54	05:15:54	11:15:54	11:23:02	10:14:56	08:21:28
19	00:04:33	00:07:26	00:19:22	00:14:21	03:18:41	01:14:28	07:09:51	05:15:53	11:15:53	11:23:05	10:14:58	08:21:28
20	00:05:32	00:22:00	00:20:05	00:16:24	03:18:43	01:15:37	07:09:48	05:15:52	11:15:52	11:23:08	10:14:59	08:21:28
21	00:06:30	01:06:14	00:20:49	00:18:24	03:18:45	01:16:47	07:09:45	05:15:49	11:15:49	11:23:12	10:15:01	08:21:28
22	00:07:29	01:20:05	00:21:32	00:20:22	03:18:47	01:17:55	07:09:41	05:15:46	11:15:46	11:23:15	10:15:02	08:21:28
23	00:08:27	02:03:30	00:22:15	00:22:18	03:18:50	01:19:04	07:09:38	05:15:43	11:15:43	11:23:18	10:15:04	08:21:27
24	00:09:26	02:16:30	00:22:59	00:24:11	03:18:52	01:20:13	07:09:34	05:15:40	11:15:40	11:23:22	10:15:06	08:21:27
25	00:10:24	02:29:07	00:23:42	00:26:02	03:18:55	01:21:22	07:09:31	05:15:39	11:15:39	11:23:25	10:15:07	08:21:27
26	00:11:23	03:11:25	00:24:25	00:27:49	03:18:58	01:22:30	07:09:27	05:15:38	11:15:38	11:23:28	10:15:09	08:21:27
27	00:12:21	03:23:28	00:25:09	00:29:32	03:19:02	01:23:38	07:09:23	05:15:39	11:15:39	11:23:32	10:15:10	08:21:27
28	00:13:19	04:05:22	00:25:52	01:01:12	03:19:05	01:24:46	07:09:20	05:15:40	11:15:40	11:23:35	10:15:11	08:21:26
29	00:14:18	04:17:11	00:26:35	01:02:48	03:19:09	01:25:54	07:09:16	05:15:42	11:15:42	11:23:38	10:15:13	08:21:26
30	00:15:16	04:28:59	00:27:18	01:04:20	03:19:12	01:27:02	07:09:12	05:15:43	11:15:43	11:23:41	10:15:14	08:21:26

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रह्मांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रह्मांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। >> **Shop Online** | **Order Now**

Declaration Notice

- We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

Our Goal

- Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, preciouse and semi preciouse Gems stone deliver on your door step.

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है । अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है ।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

अमोघ महामृत्युंजय कवच	10900	श्रापित योग निवारण कवच	1900	तंत्र रक्षा	730
राज राजेश्वरी कवच	11000	* सर्व जन वशीकरण	1450	शत्रु विजय	730
सर्व कार्य सिद्धि कवच	4600	सिद्धि विनायक कवच	1450	विवाह बाधा निवारण	730
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धिप्रद कवच	6400	सकल सम्मान प्राप्ति कवच	1450	व्यापर वृद्धि	730
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच	6400	आकर्षण वृद्धि कवच	1450	सर्व रोग निवारण	730
दस महा विद्या कवच	6400	वशीकरण नाशक कवच	1450	रोजगार वृद्धि	730
नवदुर्गा शक्ति कवच	6400	प्रीति नाशक कवच	1450	मस्तिष्क पृष्टि वर्धक	640
रसायन सिद्धि कवच	6400	चंडाल योग निवारण कवच	1450	कामना पूर्ति	640
पंचदेव शक्ति कवच	6400	ग्रहण योग निवारण कवच	1450	विरोध नाशक	640
सुवर्ण लक्ष्मी कवच	4600	अष्ट लक्ष्मी	1250	विघ्न बाधा निवारण	550
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच	4600	मांगलिक योग निवारण कवच	1250	नज़र रक्षा	550
*विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच	3250	संतान प्राप्ति	1250	रोजगार प्राप्ति	550
कालसर्प शांति कवच	2800	स्पे- व्यापर वृद्धि	1050	दुर्भाग्य नाशक	460
इष्ट सिद्धि कवच	2800	कार्य सिद्धि	1050	* वशीकरण (2-3 व्यक्तिके लिए)	1050
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच	2350	आकस्मिक धन प्राप्ति	1050	* पत्नी वशीकरण	640
श्रीदुर्गा बीसा कवच	1900	स्वस्तिक बीसा कवच	1050	* पति वशीकरण	640
अष्ट विनायक कवच	1900	हंस बीसा कवच	1050	सरस्वती (कक्षा +10 के लिए)	550
विष्णु बीसा कवच	1900	स्वप्न भय निवारण कवच	1050	सरस्वती (कक्षा 10 तकके लिए)	460
रामभद्र बीसा कवच	1900	नवग्रह शांति	910	* वशीकरण (1 व्यक्ति के लिए)	640
कुबेर बीसा कवच	1900	भूमि लाभ	910	सिद्ध सूर्य कवच	550
गरुड बीसा कवच	1900	काम देव	910	सिद्ध चंद्र कवच	550
सिंह बीसा कवच	1900	पदौं उन्नति	910	सिद्ध मंगल कवच	550
नर्वाण बीसा कवच	1900	ऋण मुक्ति	910	सिद्ध बुध कवच	550
संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच	1900	सुदर्शन बीसा कवच	910	सिद्ध गुरु कवच	550
राम रक्षा कवच	1900	महा सुदर्शन कवच	910	सिद्ध शुक्र कवच	550
हनुमान कवच	1900	त्रिशूल बीसा कवच	910	सिद्ध शनि कवच	550
भैरव रक्षा कवच	1900	धन प्राप्ति	820	सिद्ध राहु कवच	550
शनि साड़ेसाती और ढ़ैया कष्ट निवारण कवच			1900	सिद्ध केतु कवच	550

उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये

GURUTVA KARYALAY

YANTRA LIST		EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 255, 370, 460, 550, 640, 730, 820, 910, 1250, 1850, 2300, 2800 and Above.....

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call Us - 09338213418, 09238328785
Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	200.00	500.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	75.00	90.00	12.00	180.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	120.00	150.00	190.00	280.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	20.00	28.00	42.00	51.00	90.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye Orissa	(उडिसा लहसुनिया)	460.00	640.00	1050.00	2800.00	5500.00 & above
Gomed	(गोमेद)	15.00	27.00	60.00	90.00	120.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	300.00	410.00	640.00	1800.00	2800.00 & above
Zarakan	(जरकन)	350.00	450.00	550.00	640.00	910.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	15.00	30.00	45.00	60.00	90.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	15.00	30.00	45.00	60.00	90.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	60.00	120.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	60.00	90.00	120.00	280.00	460.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	20.00	30.00	45.00	60.00	120.00 & above
Opal	(उपल)	30.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Garnet	(गारनेट)	30.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	09.00	12.00	15.00	19.00	25.00 & above
Real Onyx	(ओनेक्स)	60.00	90.00	120.00	190.00	280.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	25.00	30.00	45.00	55.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	21.00	30.00	45.00	100.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	09.00	12.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Diamond (.05 to .20 Cent)	(हीरा)	50.00 (Per Cent)	100.00 (Per Cent)	200.00 (PerCent)	370.00 (Per Cent)	460.00 & above (Per Cent)

>> Order Now

Note : Bangkok (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष पत्रिका अप्रैल-2015

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvajyotish.com
http://gk.yolasite.com/
www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)



APR 2015